यूनियन सृजन

वर्ष - 3 अंक - 2 • अक्तूबर-दिसंबर, 2018, मुंबई

अद्भुत भारत

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

यूनियन सृजन
प्रकाशन तिथि : 30.01.2019

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी पत्रिका
वर्ष - 3 अंक - 2 अक्तूबर-दिसंबर, 2018

संरक्षक

राजकिरण रै जी.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

ब्रजेश्वर शर्मा
महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक

राजेश कुमार
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

डॉ. सुलभा कोरे
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन मंडल

आर. के. कश्यप
डी. सी. चौहान
महाप्रबंधक

ब्रिगे. आशुतोष सीरौठिया, सेना मेडल
मुख्य सुरक्षा अधिकारी

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल: rajeshj@unionbankofindia.com
sulabhakore @unionbankofindia.com
9820468919, 022-22896595

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

Editor : Dr. Sulabha Shrikant Kore

इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
Union Bank of India

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 3
- संपादकीय 4
- देव भाषा का गाँव - मट्टूर 5
- हिन्दी काव्य के महानायक - नीरज 6-7
- काव्य सृजन 8-9
- हरिश्चंद्रगढ़ का केदारेश्वर मंदिर 10-11
- राम सेतु 12-13
- कुलधारा 14-15
- अहमदाबाद की झूलती मीनारें 16-17
- कोडिन्ही के जुड़वा 17-18
- तनोट राय मंदिर 19
- पद्मनाभस्वामी मंदिर - त्रिवेन्द्रम, केरल 20-21
- समस्तीपुर का सांपों का मेला 22-23
- आइए, रेस्तराँ चलें... 24-25
- करणीमाता मंदिर, राजस्थान 26
- भानगढ़ का किला 27
- चुम्बकीय पहाड़ी 28
- प्रकृति का चमत्कार - कालभैरव 29
- गुरु डोंगमार लेक, सिक्किम 30-31
- अद्भुत शिल्प - कोणार्क सूर्य मंदिर 32-33
- साँपों का गाँव - शेटफल 34
- लुका छिपी करता समुद्र तट 35
- रानी की वाव - पाटन, गुजरात 36-37
- डावकी की उड़ने वाली नावें 38-39
- रूपकुंड झील अर्थात नरकंकाल झील, उत्तराखंड 39-40
- यहां रुकना मना है - थ्री किंग्स चर्च, गोवा 41
- राजभाषा समाचार 42-43
- राजभाषा पुरस्कार 44-45
- जाम्बुर 46
- बैलेंसिंग रॉक या संतुलन शिला 47
- जगन्नाथ पुरी मंदिर 48-49
- यात्रा सृजन - कुट्टानाड़, केरल 50-51
- मां मुडेश्वरी धाम 52-53
- व्यक्ति विशेष - मृणालिनी साराभाई 54-55
- बृहदेश्वर मंदिर - तंजावुर का पेरिया कोविल (बड़ा मंदिर) 56-57
- भिंडी - सेहत का भंडार 58
- आपकी नजर में 59
- बैक कवर 60

परिदृश्य

प्रिय यूनियनाइट्स,

आप सभी को शताब्दी वर्ष की ढेरों शुभकामनाएँ. किसी भी यात्रा में कई आयाम होते हैं. हमारे सौ वर्षों की यह यात्रा भी अनगिनत आयामों की यात्रा रही है. हमारे बैंक का यह सफर न सिर्फ बड़ा रोचक रहा है, बल्कि कई मायनों में यह अद्भुत भी है. इस बेहतरीन सफर के लिए मैं आप सभी यूनियनाइट्स के प्रति आभार ज्ञापित करता हूँ और आप सभी को पुन: एक बार हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ.

एक ऐसी ही बेहद खूबसूरत और आश्चर्यजनक यात्रा है- धरती और इंसान की. ईश्वर की दो अद्भुत रचनाएँ हैं- ब्रम्हांड और उसके भीतर का इंसान. जब हम अपने इस ब्रम्हांड के बनने की कहानी को सुनते और पढ़ते हैं तो पता चलता है कि न सिर्फ इस धरती बल्कि ब्रम्हांड का प्रत्येक कण 'अद्भुत' ही है. ईश्वर ने रहस्यों से भरी यह दुनिया बनाई और फिर उन रहस्यों को खोजने के लिए इंसान को गढ़ा. मेरी समझ से मनुष्य का यह जीवन ईश्वर के गढ़े उन्हीं रहस्यों को खोजने, देखने और जानने की यात्रा भर है. इस धरती और प्रकृति के प्रत्येक रूप में न जाने कितनी अद्भुतताएँ छुपी हुई हैं. मानव सभ्यता की यह यात्रा इन्हीं अद्भुतताओं की खोज है. मनुष्य अभी कुछ हजारों लाखों सालों का ही तो हुआ है और इन वर्षों में असंख्य बार इस धरती को देखकर उसने कहा है-'वाह! यह आश्चर्यजनक है! यह अद्भुत है!'

भारत तो अपनी अद्भुतताओं के लिए शुरू से ही विख्यात रहा है. जब हम इसे 'सोने की चिड़िया' जैसा प्रतीकात्मक सम्बोधन देते हैं तो हमारा आशय किसी हीरे-जवाहरात से न होकर, उसकी इसी अद्भुतता से होता है. इसीलिए कहते हैं-'भारत एक खोज है'. इसे जानने के लिए न जाने कितनी शताब्दियों से पूरी दुनिया आती रही है. न जाने कितने आए और यहीं रच बस गए, इसकी अद्भुतता का एक हिस्सा बन गए. इसके नर-नारी, पानी-बानी से लेकर, बोली-भाषा, खान-पान, मान्यताएँ-परम्पराएँ, नदी-पहाड़, तीज-त्योहार, जल, जंगल, जमीन सभी कुछ अद्भुत हैं. क्योंकि अपना देश भारत स्वयं में एक अनोखा राग है, इसका अपना सुर और ताल है, इसकी अपनी धुन और तान है.

मुझे बेहद खुशी है कि यूनियन सृजन का यह अंक हमारे इसी अद्भुत भारत को जानने का एक प्रयास है. तो आइए निकलते हैं अपने 'अतुल्य भारत' को जानने की इस रोचक यात्रा पर. आशा है, यूनियन सृजन का यह अंक भी पुराने अंकों की तरह अविस्मरणीय रहेगा.

शताब्दी वर्ष की शुभकामनाओं सहित !

आपका

(राजकिरण रै जी.)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

अद्भुत और उससे उपजी अद्भुतता, हमें 'आSS, ओहो, OMG, क्या बात है' आदि आश्चर्य उद्गारों के उच्चारण हेतु मजबूर करती है, साथ ही एक अवाकता हमारा साथ देती है. भारत जैसे विविधता और विभिन्नता से सम्पन्न देश के लिए यह अद्भुतता कोई नयी बात नहीं है. आपको यह अद्भुतता हिमालय के बर्फीले माहौल में मिलेगी, समुद्र की लहरों और पानी में मिलेगी. सहारा के रेत और बालू में भी आप उसे पाएंगे या फिर पर्वत की ऊंचाइयों और कन्दराओं की गहराइयों में भी आपको यह दिखाई देगी. यह इतिहास, भूगोल में है; पुराण और आधुनिक वर्तमान में है ही, प्रकृति में भी है. हमारे साथियों ने इस अद्भुतता को पकड़ने के सार्थक प्रयास अपने लेखों द्वारा किए हैं, लेकिन ये प्रयास सम्पूर्ण हैं, इसका दावा हम नहीं करते. क्योंकि हर प्रयास में कोई न कोई कमी रह ही जाती है, जो अगले प्रयासों को प्रेरणा देती है.

साथियों, कहा जाता है कि शिव जी की तीन आँखें हैं, इंद्र की सौ आँखें हैं, लेकिन हमारी सिर्फ दो आँखें हैं. इन आँखों से पूरे भारत की अद्भुतता दिखाई देना असंभव ही नहीं नामुमकिन भी है लेकिन भारत की अद्भुतता को हम स्पर्श तो कर पाये हैं, यह एहसास भी कम नहीं है. हो सकता है और भी अनेक अद्भुतताओं से हम रूबरू नहीं हुए होंगे या यह भी हो सकता है हमारी नजरें उतना देख नहीं पायी होंगी, जो भारत की सम्पूर्ण या अजब ग. जब अद्भुतता को समेट सकें. हो सकता है, हमारी नजरें उन सभी अद्भुतताओं को देख नहीं पायी होंगी. वैसे यह संभव भी नहीं है. हो सकता है, हमारी पृष्ठों की सीमा और हमारी नजरों की सीमाओं ने भारत की विशेषताओं को उतना कवर नहीं किया होगा. लेकिन हमारा यह प्रयास आपको निश्चित रूप से भारत के अलग-थलग रंगों से आपका परिचय करवाएगा. विज्ञान के पास भी जिनका कोई जवाब नहीं होता, वह अद्भुतता, वह विशिष्टता अनूठी है और यही इस धरती की खासियत है. आप सभी से मेरा अनुरोध है कि जब भी संभव होगा, आप इन अद्भुतताओं से रूबरू होकर उस अद्भुतता का आनंद उठाइये.

साथियों, हमने वर्ष 2019 में प्रवेश किया है. बैंकिंग क्षेत्र के नए लक्ष्यों और नई चुनौतियों के साथ अब हमें आगे बढ़ना होगा. लाभप्रदता को प्राप्त करना और नए पायदानों को हासिल करते जाना, हमारा मुख्य उद्देश्य और लक्ष्य है. आप सभी लोग उसी ओर अग्रसर होंगे, इसका विश्वास है लेकिन नए वर्ष के संकल्प में भारत की एकाध अद्भुतता को नजदीक से देखने के संकल्प को भी जोड़ लीजिए. यह संकल्प आपको रोमांच का अनुभव देगा और आपकी जिंदगी को बेहतर तथा दिलचस्प बनाएगा.

इस अंक के बारे में आपकी अद्भुत प्रतिक्रियाओं का हमें इंतजार रहेगा.

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ!

आपकी

डॉ. सुलभा कोरे
संपादक

‘वयम् संस्कृते च उच्चरितम्’

देव भाषा का गाँव -मट्टूर

यह दृढ़ संकल्प है कर्नाटक के दक्षिणी भाग में बसे एक छोटे से गाँव के मूल निवासियों का. आज हमारे देश में आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास हो चुका है और यह मान्यता चल पड़ी है कि संस्कृत का विकास अवरुद्ध हो गया है. चारों तरफ अलग-अलग भाषा का प्रयोग किया जा रहा है. ऐसे में आज 21वीं शताब्दी में भी कर्नाटक के एक छोटे से गाँव मट्टूर में हिन्दू एवं मुसलमान सभी अपने बोलचाल में संस्कृत भाषा का प्रयोग करते हैं. वहीं आस-पास के गांवों में लोग कन्नड़ भाषा का प्रयोग करते हैं.

कहाँ पर स्थित है यह अद्भुत गाँव?

तुंग नदी के तट पर बसा हुआ यह गाँव बेंगलुरु से लगभग 300 किलोमीटर की दूरी पर बसा हुआ है, जो कि शिवमोगा जिले में स्थित है. विशाल विजयनगर साम्राज्य के शासकों का गृह गाँव होने का मट्टूर को गौरव प्राप्त है.

कैसे बना संस्कृत गाँव?

प्राचीन काल से ही इस गाँव में संस्कृत भाषा का प्रयोग किया जाता रहा है. बाद में यहाँ के लोग कन्नड़ भाषा का प्रयोग करने लगे थे, किन्तु कुछ दशकों पहले पेजावर मठ के स्वामी जी ने इसे संस्कृत भाषी गाँव बनाने का आह्वान किया था और मात्र 10 दिनों के 2 घंटे के अभ्यास से पूरा गाँव संस्कृत में बात करने लगा था. इसके बाद से सारे लोग आपस में संस्कृत में बात करने लगे. ऐसा नहीं है कि संस्कृत के नाम पर इस गाँव के लोग स्वंय को पुरातनता के तरफ ले जा रहे हैं. इस गांव में लगभग 500 से ज्यादा परिवार रहते हैं, जिनकी संख्या लगभग 4000 के आसपास है. वर्तमान में स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों में से लगभग आधे प्रथम भाषा के रूप में संस्कृत पढ़ रहे हैं. संस्कृतभाषी इस गाँव के युवा बड़ी-बड़ी कंपनियों में काम कर रहे हैं. कुछ सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं तो कुछ बड़े शिक्षा संस्थानों व विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ा रहे हैं. प्रचलित मान्यता के अनुसार इस गाँव के हर घर में एक आईटी इंजीनियर है. यह दोनों बातें आज के युग में कैसी अप्रासंगिक लगती हैं, लेकिन फिर भी सच्चाई यही है. इतना ही नहीं विदेशों से भी कई लोग संस्कृत सीखने के लिए इस गाँव में आते हैं. यही कारण है कि इस गाँव को संस्कृत गाँव के नाम से भी जाना जाता है.

क्या लाभ है गाँव को?

विशेषज्ञों की मानें तो संस्कृत सीखने से गणित और तर्कशास्त्र का ज्ञान बढ़ता है और दोनों विषय बड़ी आसानी से समझ में आ जाते हैं. यही कारण है कि गाँव के युवाओं का रुझान धीरे-धीरे आईटी इंजीनियर बनने की ओर हो गया है. इस गाँव की यह विशेषता है कि यहाँ के लोग न सिर्फ स्वयं ही इस भाषा का प्रयोग करते हैं बल्कि दूसरों को भी सिखाते हैं.

संस्कृत की अद्भुतता

सन 2001 की जनगणना के अनुसार देश में 14145 व्यक्ति संस्कृत में संभाषण करते थे. हो सकता है यह संख्या कुछ बढ़ी या घटी हो, किंतु मट्टूर जैसा गाँव हमें अन्य ऐसे ही गाँव विकसित किये जाने की प्रेरणा देता है. ऐसा इसलिए है क्योंकि देव भाषा को जब अंतरिक्ष में संदेश प्रेषण के लिए भेजा गया तो यह पाया गया कि अन्य भाषाओं की तुलना में संस्कृत की अर्थ संप्रेषणीयता सबसे अधिक सशक्त रही. ऐसा इस भाषा के व्याकरणिक वैशिष्ट्य के कारण है. वाक्य में शब्दों को कहीं भी रखने पर उसका अर्थ नहीं बदलता है. अंतरिक्ष में शब्दों को प्रेषित करने पर उनके स्थान में परिवर्तन हो जाता है. अन्य भाषाओं के मामले में ऐसा होने पर अर्थ का अनर्थ होने की संभावना रहती है. ऐसे में यदि संस्कृत को भावी अंतरिक्ष भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया जाए तो कोई आश्चर्य न होगा.

गाँव का उत्सव

मट्टूर में श्रावण माह की पूर्णिमा का विशेष स्थान है. उत्तर में गुरु पूर्णिमा के रूप में माने जाने वाले इस पर्व को संस्कृत दिवस के रूप में भी मनाया जाता है. इस तरह से यह दिवस मट्टूर निवासियों के लिए किसी विशेष पर्व से कम नहीं है.

अपने भूतकाल को समझते हुए वर्तमान में भविष्य हेतु नए नए प्रतिमानों का निर्माण करना ही सभ्यता को जीवित रखने में अहम भूमिका निभाता है. अंततः यही कहूँगी सच में अपना देश अद्भुत प्रतिभावों से भरा पड़ा है सिर्फ जरूरत है हमें उसे देखने की.

हे भारत भूमि तेरी छटा निराली

कोस-कोस पर वाणी बदले, वहाँ भी खुद में समेटे

सभ्यता और संस्कृति पुरानी

हे भारत भूमि तेरी छटा निराली ?

श्वेता सिंह,
क्षेमप्रका, कोलकत्ता.

हिन्दी काव्य के महानायक

- गोपाल दास 'नीरज'

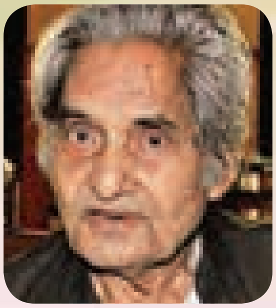

हिन्दी साहित्य के शिखर पुरुष, लोकप्रिय गीतकार, पद्मश्री, पद्म भूषण, महाकवि गोपाल दास "नीरज" के निधन पर पूरी दुनिया उदास है. नीरज जी के शब्दों में महान कवि को श्रद्धा सुमन-

'ना जन्म कुछ, ना मृत्यु कुछ
बस इतनी ही तो बात है
किसी की आँख खुल गई
किसी को नींद आ गई'

'ए भाई! ज़रा देख के चलो, आगे ही नहीं पीछे भी, दाएँ ही नहीं बाएँ भी, ऊपर ही नहीं नीचे भी', लोगों को कहते-कहते आखिरकार 19 जुलाई, 2018 को वे स्वर्ग की यात्रा को प्रस्थान कर गए.

उनकी काव्य पुस्तकों में-'दर्द दिया है', 'आसावरी', 'बादलों से सलाम लेता हूँ', 'गीत जो गाए नहीं', 'नीरज की पाती', 'नीरज दोहावली', 'गीत-अगीत', 'कारवां गुजर गया', 'पुष्प पारिजात के', 'काव्यांजलि', 'नीरज संचयन', 'नीरज के संग-कविता के सात रंग', 'बादर बरस गयो', 'मुक्तकी', 'दो गीत', 'नदी किनारे', 'लहर पुकारे', 'प्राण-गीत', 'फिर दीप जलेगा', 'तुम्हारे लिए', 'वंशीवट सूना है' और 'नीरज की गीतिकाएँ' शामिल हैं.

4 जनवरी, 1925 को जन्मे नीरज वह पहले व्यक्ति थे, जिन्हें शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में भारत सरकार ने दो-दो बार सम्मानित किया, पहले 'पद्मश्री' से, उसके बाद 'पद्मभूषण' से! यही नहीं, फ़िल्मों में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिये उन्हें लगातार तीन बार फिल्म फेयर पुरस्कार भी मिला. गोपाल दास 'नीरज' हिंदी साहित्य के जाने माने कवियों में से थे. उनका जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के गाँव पुरावली में हुआ. नीरज के गीत चाहे रेडियो पर सुनें या फिर उनके मुख से किसी मंच से, दिल को पूरा सुकून देते हैं.

उस समय नीरज की उम्र छह साल थी, जब उनके पिता का निधन हुआ था. अपनी गरीबी को उन्होंने कभी किसी मंच से साझा नहीं किया. उन्होंने एक बार अपनी गरीबी के बारे में कहा था कि गंगा किनारे हमारा घर हुआ करता था और घर में बेहद गरीबी थी. जो लोग गंगा नदी में 5 पैसे, 10 पैसे फेंकते थे, हम बच्चे गोता लगाकर उन्हें निकालकर इकठ्ठा करते थे और इसी जमा पूंजी से घर का चूल्हा जलता था. अपने शुरुआती दिनों में नीरज ने इटावा की कचहरी में कुछ समय टाइपिस्ट का काम किया. उसके बाद सिनेमाघर की एक दुकान पर नौकरी की. लम्बी बेकारी के बाद दिल्ली जाकर सफाई विभाग में टाइपिस्ट की नौकरी की. वहाँ से नौकरी छूट जाने पर कानपुर के डी.ए.वी. कॉलेज में क्लर्की की. फिर बाल्कट ब्रदर्स नाम की एक प्राइवेट कम्पनी में पाँच वर्ष तक टाइपिस्ट का काम किया.

नौकरी करने के साथ प्राइवेट परीक्षाएँ देकर 1949 में इण्टरमीडिएट, 1951 में बी.ए. और 1953 में प्रथम श्रेणी में हिन्दी साहित्य से एम.ए. किया. मेरठ कॉलेज, मेरठ में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया किन्तु कॉलेज प्रशासन द्वारा उन पर कक्षाएँ न लेने व रोमांस करने के आरोप लगाये गये, जिससे कुपित होकर नीरज ने स्वयं ही नौकरी से त्यागपत्र दे दिया. उसके बाद वे अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त किये गये और मैरिस रोड, जनकपुरी, अलीगढ़ में स्थायी आवास बनाकर रहने लगे. अपने बारे में उनका यह शेर आज भी मुशायरों में फरमाइश के साथ सुना जाता है:

इतने बदनाम हुए हम तो इस ज़माने में/लगेंगी आपको सदियाँ हमें भुलाने में. न पीने का सलीका न पिलाने का शऊर/ ऐसे भी लोग चले आये हैं मयखाने में

नीरज जी ने कभी किसी को भी पराया नहीं समझा, ऐसा उनकी कविता से भी साफ झलकता है

कोई नहीं पराया, मेरा घर संसार है/ मैं ना बँधा हूँ देश-काल की जंग लगी जंजीर में/ मैं ना खड़ा हूँ जाति-पाति की ऊँची-नीची भीड़ में/ मेरा धर्म ना कुछ स्याही-शब्दों का सिर्फ गुलाम है/ मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट-घट में राम है।।

दार्शनिक शैली में वह प्रतीक प्रधान व्यंजना द्वारा सीधे-सादे ढंग से अपनी बात कहते चलते थे. उनकी रचनाएँ संगीत, अलंकार और विशेषणों आदि विहीन सीधी-सादी होती थीं. नीरज का जीवन दर्शन एकदम सरल है-

जितना कम सामान रहेगा, उतना सफर आसान रहेगा
जितनी भारी गठरी होगी, उतना तू हैरान रहेगा
उससे मिलना नामुमकिन है, जब तक खुद का ध्यान रहेगा
हाथ मिलें और दिल न मिलें, ऐसे में नुकसान रहेगा
जब तक मंदिर और मस्जिद हैं, मुश्किल में इंसान रहेगा
"नीरज" तो कल यहां न होगा, उसका गीत-विधान रहेगा।

ऐसी रचनाओं में 'नीरज' ने जीवन के निटकतम प्रतीकों का प्रयोग ही बहुलता से किया है. संस्कृतनिष्ठ शैली वाली रचनाओं में 'नीरज' की अनुभूति का आधार प्राचीन भारतीय परंपरा रही है. नीरज जी ने जीवन के हर एक पल को आनंद के साथ मनाया. उन्हें त्योहारों से भी बहुत लगाव था. उनके द्वारा दिवाली और होली के लिए लिखी गई चार पंक्तियाँ इसका एहसास दिलाती हैं-

तुम दिवाली बनकर जग का तम दूर करो/ मैं होली बनकर बिछुड़े हृदय/ मिलाऊँगा/ तुम जाओ घर-घर दीपक बनकर मुस्काओ/ मैं भाल-भाल पर कुमकुम बन लग जाऊंगा।।

'नीरज' की लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि वह जहाँ हिन्दी के माध्यम से साधारण स्तर के पाठक के मन की गहराई में उतरे हैं वहीं उन्होंने गम्भीर से गम्भीर अध्येताओं के मन को भी गुदगुदा दिया है. इसीलिए उनकी अनेक कविताओं के अनुवाद गुजराती, मराठी, बंगाली, पंजाबी, रूसी आदि भाषाओं में हुए हैं. यही कारण है कि 'भदन्त आनन्द कौसल्यायन' यदि उन्हें हिन्दी का 'अश्वघोष' घोषित करते हैं, तो 'दिनकर' जी उन्हें हिन्दी की 'वीणा' मानते हैं. अन्य भाषा-भाषी उन्हें 'संत कवि' की संज्ञा देते हैं. नीरज के पास आकर दोहे और गजल का फर्क बेहद कम हो जाता है, कुछ रह जाती है तो बस एक गहन जीवनानूभूति-

तमाम उम्र मैं इक अजनबी के घर में रहा,
सफर न करते हुए भी किसी सफर में रहा.
वो जिस्म ही था जो भटका किया जमाने में,
हृदय तो मेरा हमेशा तेरी डगर में रहा.
तू ढूंढ़ता था जिसे जाकर ब्रज के गोकुल में,
वो श्याम तो किसी मीरा की चश्मे-तर में रहा.
वो और ही थे जिन्हें थी खबर सितारों की,
मेरा ये देश तो रोटी की ही खबर में रहा.
हजारों रत्न थे उस जौहरी की झोली में,
उसे कुछ भी न मिला जो अगर-मगर में रहा.

कवि सम्मेलनों में अपार लोकप्रियता के चलते नीरज को बम्बई के फिल्म जगत ने गीतकार के रूप में 'नई उमर की नई फसल' के गीत लिखने का निमन्त्रण दिया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया. पहली ही फ़िल्म में उनके लिखे कुछ गीत जैसे 'कारवाँ गुजर गया गुबार देखते रहे' और 'देखती ही रहो आज दर्पण न तुम, प्यार का यह मुहूरत निकल जायेगा' बेहद लोकप्रिय हुए जिसका परिणाम यह हुआ कि वे बम्बई में रहकर फ़िल्मों के लिये गीत लिखने लगे. फिल्मों में गीत लेखन का सिलसिला 'मेरा नाम जोकर', 'शर्मीली' और 'प्रेम पुजारी' जैसी अनेक चर्चित फिल्मों में कई वर्षों तक जारी रहा.

गोपाल दास 'नीरज' का फ़िल्मी सफ़र भले ही पाँच साल का रहा हो, लेकिन इन दौरान उन्होंने कई प्रसिद्ध फ़िल्मों के गीतों की रचना भी की. 'कारवाँ गुजर गया गुबार देखते रहे', 'जीवन की बगिया महकेगी', 'काल का पहिया घूमे रे भइया!', 'बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ', 'ए भाई! ज़रा देख के चलो', 'शोखियों में घोला जाए फूलों का शबाब', 'लिखे जो खत तुझे', 'दिल आज शायर है', 'खिलते हैं गुल यहां', 'फूलों के रंग से', 'रंगीला रे! तेरे रंग में', 'आदमी हूं- आदमी से प्यार करता हूं' जैसे गीतों को लिखकर वे सदा-सदा के लिए अमर हो गए.

नीरज जी को फ़िल्म जगत में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिये उन्नीस सौ सत्तर के दशक में लगातार तीन बार फिल्म फेयर पुरस्कार दिया गया. उनके द्वारा लिखे गये पुरस्कृत गीत हैं- 1970 में, 'काल का पहिया घूमे रे भइया!' (फ़िल्म: चन्दा और बिजली), 1971 में, 'बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ' (फ़िल्म: पहचान) 1972 में 'ए भाई! ज़रा देख के चलो' (फ़िल्म: मेरा नाम जोकर) किन्तु बम्बई की ज़िन्दगी से भी उनका जी बहुत जल्द उचट गया और वे फिल्म नगरी को अलविदा कहकर फिर अलीगढ़ वापस लौट आये. तब से अपने अंतिम समय तक वहीं रहकर स्वतन्त्र रूप से मुक्ताकाशी जीवन व्यतीत करते रहे .

पद्मभूषण से सम्मानित मशहूर कवि, गीतकार गोपालदास 'नीरज' ने दिल्ली के एम्स में 19 जुलाई, 2018 की शाम लगभग 8 बजे अन्तिम सांस ली.

उनकी प्रसिद्ध हिन्दी कविता "कारवां गुज़र गया" के माध्यम से हमारी तरफ से श्रद्धा सुमन-

स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से/ लूट गए सिंगार सभी बाग के बबूल से/ और हम खड़े -खड़े बहार देखते रहे/ कारवां गुज़र गया गुबार देखते रहे/ नींद भी खुली न थी कि हाय धूप ढल गई/ पाँव जब तलक उठे कि ज़िंदगी फिसल गई/

पात-पात झर गए कि शाख-शाख जल गई/ चाह तो निकल सकी न, पर उमर निकल गई/ गीत अश्क बन गए, छंद हो दफन गए/ साथ के सभी दिये, धुआँ-धुआँ पहन गए/ और हम झुके- झुके, मोड़ पर रुके-रुके/ उम्र के चढ़ाव का उतार देखते रहे/ कारवां गुज़र गया, गुबार देखते रहे/ कारवां गुजर गया, गुबार देखते रहे/.

समीर चन्द्र झा
क्षे.का., एर्णाकुलम

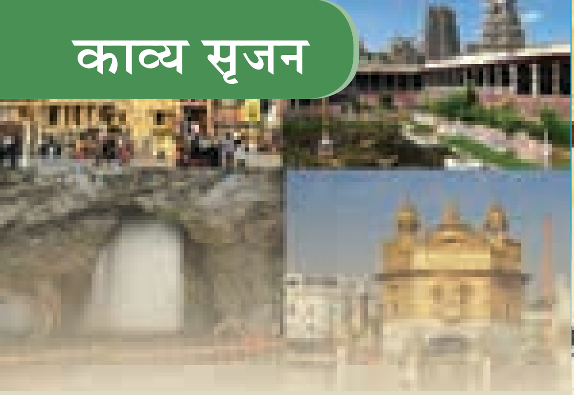

अद्भुत भारत

देश वही, देशवासी वही
संसाधन वही, ब्यूरोक्रेसी वही
फिर भी आज परिवर्तन की आहट है
अद्भुत भारत, उभरता भारत।

पिछड़े देश का लेबल तोड़ कर,
अब बदल रहा है करवट
5 ट्रिलियन के अर्थतंत्र से आगे बढ़ता भारत
निरक्षरता के कलंक को साबित करता गलत
नेट एप में जन गण को शामिल करता भारत
अद्भुत भारत, उभरता भारत।

हाई स्पीड ट्रेन बनाने में पाई है महारत
एक साथ 104 उपग्रह लाँच करता भारत
गगनयान के लक्ष्य से आकाश में गरजता भारत
एक ही वर्ष में 1000 विमान खरीदता भारत.
अद्भुत भारत, उभरता भारत।

पड़ोसियों की हरकतें कई बार होती थी मुसीबत
अब विश्व फलक पर उन्हीं को बेचैन करता भारत
रक्षा के मामले में हरदम सोचे राष्ट्र की हिफाजत
किसी भी देश की हुक्मदारी से डरता नहीं भारत
अद्भुत भारत, उभरता भारत।

दिलीप डांगी
क्षे.का. मुंबई (पश्चिम)

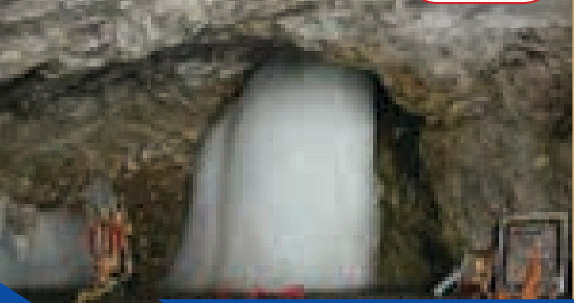

ना कुरेदो ज़ख़्मों को

गुज़ारिश है,
ना कुरेदो ज़ख़्मों को
दर्द होता है.

इलाज, दवा, मदद,
हमदर्दी ना दे सको
तो कोई बात नहीं.

समय दो.......
उबरने के लिए और
ज़ख़्मों को भरने के लिए.

चाँदनी सहाय
नवी पेठ शाखा, पुणे

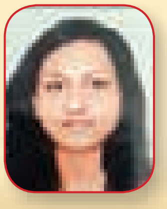

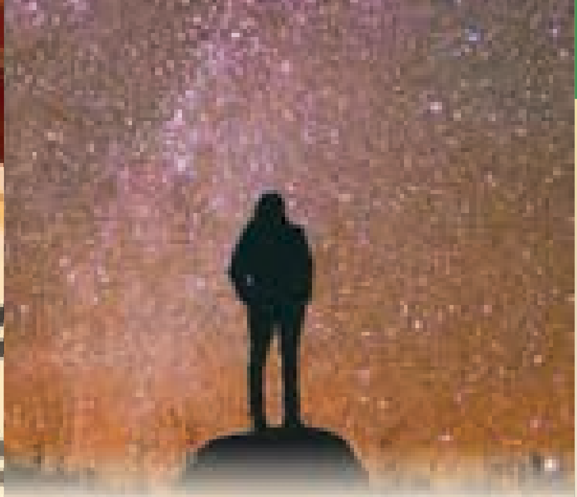

मैं चिराग हूँ ढलते अंधेरों का,
तमन्ना को चश्म में जिंदा रखता हूँ
मैं चिराग हूँ ढलते अंधेरों का,
शमा को खुद में रोशन रखता हूँ ।

हवाओं सा मिजाज रखकर,
बिजली सी फितरत रखता हूँ
मैं बूंद हूँ पानी की मामूली सी ,
पर जमीं को भिगोने की हिम्मत रखता हूँ।

मिट्टी सा महकता हूँ हर जगह,
हर ढंग में ढलने की आदत रखता हूँ
घायल हो रूह तो भी मैं,

तलवार की धार पर मरहम को सिलने लगता हूँ
उगते सूरज को करता हूँ सलाम,
पर ढलते सूरज को अक्सर ताकता रहता हूँ

मैं हूँ इंसान मामूली सा,
मामूली सा ही बना रहने की ख़्वाहिश रखता हूँ

मैं चिराग हूँ ढलते अंधेरों का,
शमा को खुद में रोशन रखता हूँ........ ।

सुरभि अग्रवाल,
बगड़ोना शाखा , भोपाल

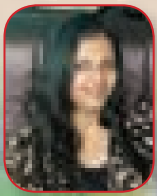

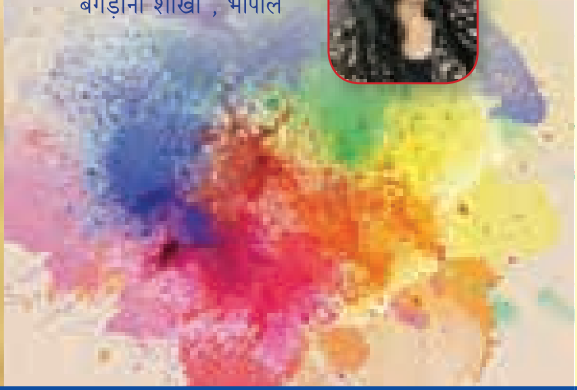

शब्दों का न रंग कोई...

शब्दों का न रंग कोई,
फिर भी चेहरों के रंग बदल जाते हैं
तीर से भी नुकीली होती धार,
कितना रोको दिल में चुभ जाते हैं
भेदभाव बातों से, है नीति अनोखी,
सीधे सच्चे इंसान अक्सर पिस जाते हैं.
मत पालो शब्दों को अहम की तरह,
ये गुण खुद को खा जाते हैं.
शब्द बोलो वहीं हमेशा
जो बने किसी के चेहरे की मुस्कान,
भर दें जीवन में प्रेरणा की बहार,
किसी को दे मौका, ले खुद को संवार,
जीवन में शब्दों से बड़ा घाव नहीं होता,
बोलने से पहले हमेशा सोच ले थोड़ा,
हमेशा रखें ध्यान
शब्दों के रंग नहीं होते ,
फिर भी चेहरों के रंग उतर जाते हैं....

उपासना सिरसैया,
क्षे. का. भोपाल

ब्रांड एंबेसडर

बैंक की उन्नति एवं तरक्की का,
इंपोर्टेंट फैक्टर हूं मैं,
एक आम अधिकारी ही नहीं,
बैंक का ब्रांड एंबेसडर हूं मैं...

पब्लिक की डांट फटकार खाता हूं,
सरकारी नीतियों को जनता तक पहुंचाता हूं,
इसलिए देश की इकोनमी का
क्रिटिकल सेक्टर हूं मैं,
एक आम अधिकारी ही नहीं,
बैंक का ब्रांड एंबेसडर हूं मैं..

कम तनख्वाह में भी संतुष्ट रहता हूं,
टारगेट का प्रेशर खुद ही सहता हूं,
खुद के लिए खुद का मोटीवेटर हूं मैं,
एक आम अधिकारी ही नहीं
बैंक का ब्रांड एंबेसडर हूं मैं,.

हर शब्द तोल कर बोलता हूं,
कागज़ों को संभालकर रखता हूं,
क्योंकि बैंक की छवि का डेकोरेटर हूं मैं,
एक आम अधिकारी ही नहीं
बैंक का ब्रांड एंबेसडर हूं मैं

समय पर मैं आता हूं,
बस फिर काम में खो जाता हूं ,
बिना ईंधन के चलने वाला जेनरेटर हूं मैं,
एक आम अधिकारी ही नहीं
बैंक का ब्रांड एंबेसडर हूं मैं,,..

लवली नागर
शहीद नगर शाखा, आगरा

पौरुष की परिभाषा का तू ऐसे नरसंहार न कर....

पौरुष की परिभाषा का तू ऐसे नरसंहार न कर,
अपनी वहशी नजरों से मेरी निजता पर प्रहार न कर,
नन्ही सी प्यारी बच्चियों की अस्मिता को तार तार न कर,
अपने यौनिक दरिया से कह दे कि सरहद पार न कर,
अपनी माँ के दूध की ऊर्जा को यूं बेकार न कर,

पौरुष की परिभाषा का तू ऐसे नरसंहार न कर,
अपने यौनिक सुख की खातिर मुझ चंचला पर अत्याचार न कर,
अपनी सोच सही कर तू, मेरी वेशभूषा का हिसाब न कर,
कांपती रहे रूह किसी की उम्र भर,
ये घृणित कृत्य फिर एक बार न कर,
दफ्न कर दे दरिंदगी को या दफ्न हो जा खुद,
यूं मानवता को शर्मसार न कर,
अपने पिता के संबल का तू, यूं सामाजिक उपहास न कर,

पौरुष की परिभाषा का तू, ऐसे नरसंहार न कर,
बांध पुलिंदा हवस का तू घर की दहलीज को पार न कर,
घर की चारदिवारी में भी, तू बहशी यौनाचार न कर,
पुरुष पुत्र तू, नारी से ऐसा राक्षसी व्यवहार न कर,
आना पड़े फिर काली को, तू ऐसा महिषासुरी कर्म हर बार न कर,
कहीं न हो जाए फिर महाभारत, तू कान्हा से ललकार न कर,

पौरुष की परिभाषा का तू ऐसे नरसंहार न कर,
अपनी बहशी नजरों से मेरी निजता पर प्रहार न कर !!

रवि यादव
विद्याधर नगर, जयपुर

हरिश्चंद्रगढ़ का केदारेश्वर मंदिर

हरिश्चंद्रगढ़, भारत के पश्चिमी घाट पर स्थित अहमदनगर जिले में एक पहाड़ी किला है. किला काफी पुराना है. मत्स्यपुराण, अग्निपुराण और स्कंदपुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों में हरिश्चंद्रगढ़ के बारे में कई संदर्भ मिलते हैं. कहा जाता है कि इस गढ़ का निर्माण आठवीं सदी में 'कलचुरी' वंश के शासन के दौरान हुआ था. यह किला चार हजार फीट की ऊंचाई पर है. ग्यारहवीं सदी में विभिन्न गुफाओं में शिल्पकला का निर्माण हुआ. आज भी इन गुफाओं में भगवान विष्णु की कई मूर्तियाँ हैं.

मध्ययुग में बना यह किला आज के युवाओं, गिर्यारोहकों और सामान्यजनों को आकृष्ट करता है. यह बात दर्शाती है कि इस किले की भव्यता, सौंदर्य और अनूठापन कितना आकृष्ट करने वाला है.

किले पर जाने के लिए मुख्यत: तीन रास्ते हैं. मुंबई से जाते समय कल्याण स्टेशन से बस में जाया जा सकता है. खिरेश्वर नामक गाँव में खूबी फाटे पर उतरकर हरिश्चंद्रगढ़ पर जाया जा सकता है. कल्याण स्टेशन से यह अंतर 90 किमी. के आसपास है. पुणे से शिवाजी नगर बस से भी खिरेश्वर गाँव में जाया जा सकता है. पुणे से पांचनई गाँव से

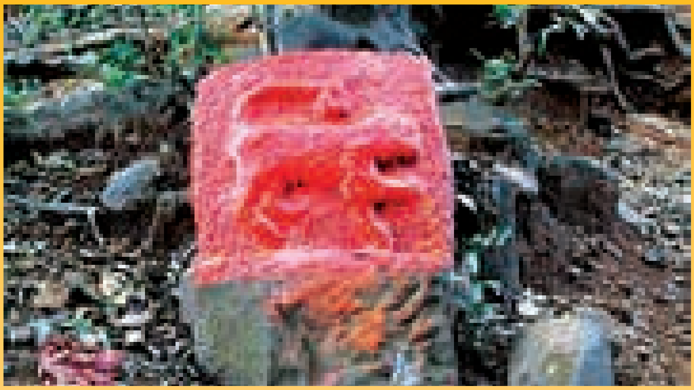

आनेवाला एक रास्ता भी है, जो सबसे आसान रास्ता है. सबसे कठिन रास्ता है 'नालीची वाट' से जानेवाला रास्ता. यह रास्ता जुन्नर की तरफ से आता है. इस रास्ते से केवल पर्वतारोही ही जाते हैं. दूसरे दो रास्तें भी आसान नहीं हैं, बल्कि उन सभी को, जो कुदरत की इस अद्भुत निर्मिति का दर्शन करना चाहते हैं, यह किला एक चुनौती देता है. पास के गाँव के गांववालों से पानी तथा रास्तों के बारे में जानकारी लेकर जाएँ तो आगे की कठिनाइयां आसान हो सकती हैं.

खिरेश्वर गाँव से चलते समय पहला पड़ाव आता है 'व्याघ्रशिल्प, जहां वाघ की एक मूर्ति है. बारिश के दिनों में घने कोहरे के कारण रास्ता दिखाई नहीं देता. अत: रास्ते से भटकने का डर होता है. जगह-जगह पर बने निशानों को फॉलो करते हुए जाना पड़ता है. बीच में बड़े-बड़े पत्थर हैं, जिन्हें लांघकर जाते हुए लोहे के खंभों का सहारा लेना पड़ता है. यहाँ बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि हवाएँ तेज बहती हैं, इतनी तेजी से कि सिर्फ 2-3 फीट दूरी पर होने के बावजूद भी आवाज सुनाई नहीं देती. इसके बाद आती है समतल भूमि, दूर तक दिखायी देती समतल भूमि! बारिश के दिनों में यह बहुत लुभावनी दिखाई देती है. इसके आगे तेज़ चढ़ाई नहीं है. दो पहाड़ पार कर हम पहुँच जाते हैं, हरिश्चंद्रगढ़ के माथे पर.

गढ़ पर अनेक गुफाएँ हैं. गणेश मंदिर, हरिश्चंद्रेश्वर मंदिर और केदारेश्वर मंदिर जैसे मंदिर हैं. कोंकण कड़े जैसी खाई है और सप्त तीर्थ नामक तालाब है.

केदारेश्वर गुफा में एक अविश्वसनीय नज़ारा देखने को मिलता है. गुफा में एक शिवलिंग है, जिसके चारो ओर पानी है. पानी में चार स्तंभ हैं, जिनके बीच यह शिवलिंग है, जो जमीन से केवल 4-5 फुट ऊंचाई पर है. इन चार स्तंभों में से तीन स्तंभ टूटे हुए हैं. केवल एक स्तंभ अच्छी स्थिति में है. इस शिवलिंग के दर्शन से मन नहीं भरता. प्रकृति और मानव के इस सुंदर निर्माण को देख कर हम नतमस्तक हो जाते हैं. इस शिवलिंग के पास पहुँचना मुश्किल है क्योंकि चारो तरफ पानी है, जो बर्फ की तरह ठंडा होता है. कहा जाता है कि इस मंदिर के ये चार खंभे चार युगों के परिचायक हैं - तीन युग अर्थात सत, त्रेता और द्वापर युग तो खत्म हो गए हैं, चौथा कलयुग शुरू है. यह चौथा युग जब खत्म होगा तब यह चौथा खंभा भी टूट जाएगा और दुनिया डूब जाएगी, नष्ट हो जाएगी.

हरिश्चंद्रेश्वर मंदिर एक लुभावने स्थापत्य की मिसाल है. यह मंदिर छोटी-छोटी शिलाओं से बना है और हजारों सालों से धूप, बारिश, तूफ़ान का सामना करते हुए शान से खड़ा है. हरिश्चंद्रेश्वर मंदिर और केदारेश्वर गुफा में जो शिलालेख हैं, वह यह दर्शाते हैं कि यह गढ़ मध्ययुगीन काल में बनाया हुआ है. इसमें अनेक कहानियाँ चित्ररूप से दर्शायी और बतायी गयी हैं. मराठी के संत कवि चांगदेव ने 14वीं सदी में यहीं बैठकर ध्यानधारणा कर महान ग्रंथ 'तत्वसार' का निर्माण किया था.

मंदिर के ऊपरी ओर अनेक छोटी-छोटी गुफाएँ हैं, जहां रहने का इंतजाम हो सकता है. मंदिर के सामने एक पुष्करणी में पीने योग्य पानी की व्यवस्था है.

केदारेश्वर मंदिर की दाहिनी तरफ से एक रास्ता कोंकण कड़ा की ओर जाता है. कोंकण कड़ा एक अद्भुत जगह है, जहां पर जाकर ही हम उस जगह का अनोखापन अनुभव कर सकते हैं. अर्धचंद्राकार खाई इतनी गहरी है कि हम उसकी गहराई का अंदाजा नहीं लगा सकते, क्योंकि खाई ठीक 90 अंश के कोण में है. खाई से हवा इतने तेजी से बहती है कि पूरा पौधा उखाड़कर खाई में फेंक दो तो, गुरुत्वाकर्षण के नियमों को छेद देते हुए वह पौधा हवा के दबाव से फिर ऊपर आ जाता है. कोंकण कड़ा में जो धीरगंभीर शांति है, उसे केवल अनुभव किया जा सकता है.

हरिश्चंद्रगढ़ पर स्थित दो चट्टानों के नाम 'तारामती' और 'रोहिदास' हैं. इनमें से तारामती चट्टान पहुँचने के लिए कठिन है. महाराष्ट्र के कलसुबाई शिखर के बाद यह दूसरा ऊंचा शिखर है. कई बार यहाँ पर जंगली जानवरों को देखा गया है.

महाराष्ट्र के अन्य किलों की मुग़ल या मराठों के इतिहास की पृष्ठभूमि है, मगर हरिश्चंद्रगढ़ की हजारों सालों की पौराणिक पृष्ठभूमि है. यहाँ के पहले किलेदार श्रीमान कृष्णाजी शिंदे माने जाते हैं, जो 1747-48 में नियुक्त हुए थे.

हरिश्चंद्रगढ़, ऐसी जगह है जो हर एक को जिंदगी में एक बार ही सही, अवश्य देखनी चाहिए. प्रकृति का यह लुभावना किन्तु अंतर्मुख करने वाला करिश्मा देखकर हम प्रकृति के समक्ष नतमस्तक होते हैं.

सुरेखा गवाणकर
क्षे.का., मुंबई (दक्षिण).

राम सेतु

भारत एक ऐसा देश है जिसका अपना एक गौरवशाली इतिहास रहा है, यहाँ की इमारतें न जाने कितने दशकों के इतिहास को संजोए बैठी हैं. यह देश जितना ऐतिहासिक है उतना ही रहस्यमयी भी है.

देश विदेश से हर साल लाखों पर्यटक यहाँ की संस्कृति से रूबरू होने आते हैं, लेकिन क्या आप यह जानते हैं कि इस देश में कुछ ऐसी जगह हैं जिनके पीछे कई अनसुलझी कहानियाँ भी छिपी हुई हैं. इनमें से भारत का मुख्य आकर्षण का केंद्र है - 'राम सेतु'

राम सेतु जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर "एडम्स ब्रिज" के नाम से जाना जाता है. हिन्दू धार्मिक ग्रंथ रामायण के अनुसार यह एक ऐसा पुल है जिसे भगवान विष्णु के सातवें एवं हिन्दू धर्म में विष्णु के अवतार, श्रीराम की वानर सेना द्वारा भारत के दक्षिण भाग रामेश्वरम पर बनाया था, जिसका दूसरा किनारा वास्तव में श्रीलंका के मन्नार तक जाकर जुड़ता है. ऐसी मान्यता है कि इस पुल को बनाने के लिए जिन पत्थरों का इस्तेमाल किया गया था वे पत्थर पानी में फेंकने के बाद समुद्र में नहीं डूबे बल्कि पानी की सतह पर ही तैरते रहे. ऐसा क्या कारण था कि ये पत्थर पानी में डूबे नहीं ?

कुछ लोग इसे धार्मिक महत्व देते हुये ईश्वर का चमत्कार मानते हैं लेकिन विज्ञान इसके पीछे क्या तर्क देता है वह बिलकुल विपरीत है. लेकिन इसके ऊपर एक बड़ा सवाल यह है कि क्या सच में राम सेतु नामक कोई पुल था?

भारत के दक्षिण में धनुषकोटि तथा श्रीलंका के उत्तर पश्चिम में पंबन के मध्य समुद्र में 40 किमी चौड़ी पट्टी के रूप में उभरे एक भू-भाग के उपग्रह से खींचे गए चित्रों को अमेरिकी अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान ने जब 1993 में दुनियाभर में जारी किया तो भारत में इसे लेकर राजनीतिक वाद-विवाद का जन्म हो गया था. इस पुल जैसे भू-भाग को राम का पुल या राम-सेतु कहा जाने लगा. ईसाई या पश्चिमी लोग इसे 'एडम्स ब्रिज' कहने लगे हैं. राम सेतु का चित्र नासा ने 14 दिसम्बर, 1966 को जेमिनी-11 से अंतरिक्ष से प्राप्त किया था. इसके 22 साल बाद आई एस एस 1 ए ने तमिलनाडु तट पर स्थित रामेश्वरम और जाफना द्वीपों के बीच समुद्र के भीतर भूमि-भाग का पता लगाया और उसका चित्र लिया. वैज्ञानिक इसे प्राकृतिक ब्रिज मानते हैं और कुछ इसे मानव निर्मित मानते हैं. राम सेतु कभी भी हमारी सामूहिक कल्पना से दूर नहीं हुआ. क्या यह सच है कि भारत और श्रीलंका के बीच के समुद्र के नीचे एक पुल है? क्या यह सृष्टि का चमत्कार है या उसे मनुष्य के हाथों ने राम की वानर सेना द्वारा पत्थर दर पत्थर रख कर, तैयार किया गया था?

पौराणिक मान्यता - धार्मिक मान्यता के अनुसार जब असुर सम्राट रावण, माता सीता का हरण कर उन्हें अपने साथ लंका ले गया था, तब श्रीराम ने वानरों की सहायता से समुद्र के बीचों बीच एक पुल का निर्माण किया था. यही आगे चलकर राम सेतु कहलाया था. कहते हैं कि यह विशाल पुल वानर सेना द्वारा केवल पाँच दिनों में ही तैयार कर लिया गया था. आश्चर्य की बात यह है कि मीलों का फासला रखने वाले दो देशों के बीचों-बीच मौजूद इस समुद्र को लांघने के लिए वानर सेना ने कैसे एक पुल बना डाला? इसे विस्तार से समझने के लिए महर्षि वाल्मीकि द्वारा रची गई 'रामायण' में 'राम सेतु' के निर्माण का वर्णन किया गया है, रामायण ग्रंथ के अनुसार जब लंकापति रावण, श्रीराम की पत्नी सीता का हरण कर उन्हें लंका ले गया था तब भगवान श्रीराम को जटायु से यह पता लगा कि उनकी पत्नी को एक ऐसा राक्षस राजा ले गया है, जो मीलों दूर एक बड़े समुद्र को पार कर दूसरे छोर पर लंका में रहता है. तब श्रीराम ने फैसला किया कि वे स्वयं अपनी सेना के साथ लंका जाकर ही सीता को रावण की कैद से छुड़ाएंगे. लेकिन यह सब कैसे होगा, यह एक बड़ा सवाल था. रास्ते में एक विशाल समुद्र जिसे पार करने के लिए कोई जरिया हासिल नहीं हो रहा था . अपनी मुश्किल का हल निकालने के लिए श्रीराम द्वारा समुद्र देवता की पूजा की गई लेकिन जब कई दिन तक समुद्र देवता प्रकट नहीं हुये तब क्रोध में आकर श्रीराम ने समुद्र को सुखा देने के उदेश्य से अपना धनुष-बाण उठा लिया. श्रीराम के क्रोध से भयभीत हो कर समुद्र देवता प्रकट हुये और बोले "श्रीराम, आप अपनी वानर सेना की मदद से मेरे ऊपर

पत्थरों का एक पुल बनाएँ. मैं इन सभी पत्थरों का वजन संभाल लूंगा. आपकी सेना में नल एवं नील दो वानर हैं, जो सर्वश्रेष्ठ हैं. 'नल' भगवान विश्वकर्मा के पुत्र हैं. उन्हें अपने पिता से वरदान हासिल है. उनकी सहायता से आप एक कठोर पुल का निर्माण कराएं. यह पुल आपकी सारी सेना का भार संभाल लेगा और आपको लंका ले जाने में सफल होगा." समुद्र देवता ने श्रीराम से पुल बनाने का विनम्र अनुरोध किया. अगले ही पल नल तथा नील की मदद से पूरी वानर सेना अनेक प्रकार की योजनाएँ बनाने में सफल हुई. अंत में योजनाओं का चुनाव कराते हुये पुल बनाने का सामान एकत्रित किया गया. पूरी वानर सेना की सहायता से नल और नील के पूर्ण वैज्ञानिक योजनाओं के आधार पर एक विशाल पुल का निर्माण किया गया. वैज्ञानिकों का मानना है कि नल और नील शायद यह जानते थे कि कौन सा पत्थर किस प्रकार से रखने से पत्थर पानी में डूबेगा नहीं तथा दूसरे पत्थरों का सहारा भी बनेगा.

वैज्ञानिक कारण- कई वर्षों के शोध के बाद वैज्ञानिकों ने रामसेतु पुल में इस्तेमाल हुये पत्थरों का वजूद खोज निकाला है. विज्ञान का मानना है कि राम सेतु पुल बनाने के लिए जिन पत्थरों का प्रयोग हुआ था वे कुछ खास प्रकार के पत्थर हैं जिन्हें 'प्यूमाइस स्टोन' कहा जाता है. दरअसल ये पत्थर ज्वालामुखी के लावे से उत्पन्न होते हैं, जब लावा की गर्मी वातावरण की कम गर्म हवा या पानी से मिलती है तो वे खुद को कुछ कणों में बदल देती है. कई वर्षों बाद ये कण एक बड़े पत्थर का निर्माण करते हैं. वैज्ञानिकों का मानना है कि जब ज्वालामुखी का गर्म लावा वातावरण की ठंडी हवा से मिलता है तो हवा का संतुलन बिगड़ जाता है. यह प्रक्रिया एक ऐसे पत्थर को जन्म देती है जिसमें कई सारे छिद्र होते हैं. छिद्रों के कारण यह पत्थर एक स्पांजी यानी खँखारा आकार ले लेता है जिस कारण इसका वजन भी सामान्य पत्थरों से काफी कम होता है. इस खास पत्थर के छिद्रों में हवा भरी रहती है. यही कारण है कि यह पत्थर पानी में जल्दी डूबता नहीं है क्योंकि हवा इसे ऊपर ही रखती है, लेकिन कुछ समय बाद जब धीरे-धीरे इन छिद्रों में पानी भर जाता है तो इनका वजन बढ़ जाता है और ये पानी में डूबने लगते हैं. यही कारण है कि राम सेतु पुल के पत्थर कुछ समय बाद समुद्र में डूब गए और उसके भू-भाग पर पहुँच गए. नासा ने, जो विश्व की सबसे विख्यात वैज्ञानिक संस्थाओं में से एक है, सैटेलाइट की मदद से राम सेतु पुल को खोज निकाला. तस्वीरों के मुताबिक वास्तव में एक ऐसा पुल जरूर दिखायी देता है जो कि भारत के रामेश्वरम से शुरू होकर श्रीलंका के मन्नार द्वीप तक पहुंचता है, परंतु किन्ही कारणों से अपने आरंभ होने से कुछ ही दूरी पर यह समुद्र में समा गया है. रामेश्वरम में कुछ समय पहले लोगों को समुद्र तट पर कुछ वैसे ही पत्थर मिले जिन्हें प्युमाइस स्टोन कहा जाता हैं. लोगों का मानना है कि पत्थर समुद्र की लहरों के साथ बहकर किनारे पर आए हैं, बाद में लोगों के बीच यह मान्यता फैल गयी कि हो न हो ये वही पत्थर हैं, जिन्हें श्रीराम की वानर सेना द्वारा रामसेतु पुल बनाने के लिए इस्तेमाल किया गया होगा लेकिन वैज्ञानिकों द्वारा दिये गए एक शोध ने प्युमाइस स्टोन के सिद्धान्त को भी गलत साबित किया है. कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि यह सच है कि प्युमाइस स्टोन पानी में नहीं डूबते हैं और ऊपर तैरते हैं और ये ज्वालामुखी के लावे से बनते हैं. लेकिन उनका यह भी मानना है कि रामेश्वरम में दूर-दूर तक सदियों से कोई भी ज्वालामुखी नहीं देखा गया है.

वैज्ञानिकों ने अध्ययन के बाद रामसेतु को लेकर 7 बड़े खुलासे किए हैं :-

1. अमेरिका के साईंस चैनल का दावा – रामसेतु कोई कल्पना नहीं हो सकती है.
2. वैज्ञानिक ऐलन लेस्टर ने कहा है कि हिन्दू धर्म में जिक्र है कि भगवान राम ने ही ऐसा सेतु बनाया.
3. चैनल का दावा – भारत और श्रीलंका के बीच मौजूद पत्थर करीब 7 हजार साल पुराने, जमीन के ऊपर वाले 4 हजार साल पुराने हैं.
4. चैनल का दावा, ये प्रकृतिक ढांचा नहीं है बल्कि इन्सानों द्वारा बनाया गया है .
5. रामसेतु पर पाये जाने वाले पत्थर बिलकुल अलग और प्राचीन हैं.
6. पुरातत्वविद चेल्सी रिज का दावा – पत्थरों की उम्र पता की तो पता चला कि ये पत्थर बलुई धरातल से कहीं ज्यादा पुराने हैं.
7. वैज्ञानिक ऐलन लेस्टर – रिसर्च करने पर पता चला कि बलुई धरातल पर मौजूद ये पत्थर कहीं और से ले आए गये हैं.

राम मंदिर पर जिस तरह राजनीति हो रही है, उसी तरह भगवान राम और आस्था के प्रतीक राम सेतु पर नेताओं ने अपनी राजनैतिक रोटियाँ सेकी थीं. मीडिया रिपोर्ट के अनुसार भू-गर्म वैज्ञानिकों ने इस बात की पुष्टि की है कि आज से हजारों साल पहले भारत और श्रीलंका के बीच एक पुल था, जिसे लोग आज राम सेतु के नाम से जानते हैं. भू-गर्म वैज्ञानिकों एवं आर्कियोलॉजिस्ट टीम ने सैटेलाइट से कुछ तस्वीरें ली. इन तस्वीरें और सेतु स्थल से प्राप्त बालू और पत्थरों का अध्ययन करने के बाद यह साफ किया कि वहाँ सेतु का निर्माण हुआ था. वैज्ञानिकों का कहना है कि यह एक सुपर ह्यूमन अचीवमेंट था.

वैभव मिश्रा
क्षे.का., जबलपुर

कुलधरा

जहां कुल का उल्लेख

हमारे देश भारत के कई शहर अपने आप में कई रहस्यमयी बातों को समेटे हुए है. ऐसी ही एक बात हैं राजस्थान के जैसलमेर जिले के कुलधरा गाँव की! यह गांव पिछले 170 सालों से वीरान पड़ा है. कुलधरा या कुलधर, राजस्थान के जैसलमेर ज़िले में स्थित है. यह एक शापित और रहस्यमयी गाँव है, जिसे 'भूतों का गाँव' भी कहा जाता है.

इस गाँव का निर्माण लगभग 13वीं शताब्दी में पालीवाल ब्राह्मणों ने किया था लेकिन 19वीं शताब्दी में पानी की घटती आपूर्ति के कारण यह पूरा गाँव नष्ट हो गया था. कुछ किंवदंतियों के अनुसार इस गाँव का विनाश जैसलमेर के राज्य मंत्री सलीम सिंह के कारण हुआ था. सलीम सिंह जैसलमेर के मंत्री हुआ करते थे और गाँव से काफी सख्ती से पेश आते थे. उनकी सख्ती की वजह से सभी ग्रामवासी परेशान होकर रातोंरात गाँव छोड़कर तथा श्राप देकर चले गए. इसी कारणवश यह शापित गाँव भी कहलाता है. एक अन्य किंवदंती के अनुसार, कुलधरा गाँव - ब्राह्मणों के क्रोध का प्रतीक है, जहां आज भी लोग जाने से डरते हैं. राजस्थान के जैसलमेर शहर से 18 किमी दूर स्थित कुलधरा गाँव आज से 500 साल पहले 600 घरों वाले पालीवाल ब्राह्मणों का ऐसा साम्राज्य था, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है. रेगिस्तान की बंजर धरा पर पानी नहीं मिलता, वहाँ पालीवाल ब्राह्मणों ने ऐसा चमत्कार किया था जो इंसानी दिमाग से बहुत परे था. उन्होंने जमीन पर उपलब्ध पानी का प्रयोग नहीं किया, न बारिश के पानी को संग्रहित किया बल्कि रेगिस्तान की मिट्टी में मौजूद पानी के कणों को खोजा और अपना गांव जिप्सम की सतह के ऊपर बनाया. उन्होंने उस समय जिप्सम की जमीन खोजी ताकि बारिश का पानी जमीन सोखे नहीं. आवास के लिए उन्होंने गाँव को ऐसे बसाया कि दूर से अगर दुश्मन आता हो तो उसकी आवाज चार गुना पहले गाँव के भीतर पहुँच जाएं. हर घर के बीच में आवाज का ऐसा मेल था, जेसे आज के समय में टेलीफोन होते हैं. जैसलमेर के दीवान और राजा को यह बात हजम नहीं हुई कि ब्राह्मण इतने आधुनिक तरीके से खेती करके अपना जीवन यापन करते हैं. इसलिए उन्होंने खेती पर कर लगा दिया पर पालीवाल ब्राह्मणों ने कर देने से मना कर दिया. उसके बाद दीवान सलीम सिंह को गाँव के मुखिया की बेटी पसंद आ गयी तो उसने कह दिया, 'या तो बेटी को दे दो या सजा भुगतने के लिए तैयार रहो'. ब्राह्मणों को अपने आत्मसम्मान से समझौता बिलकुल बर्दाश्त नहीं हुआ, इसलिए रातोंरात 85 गाँवों की एक महापंचायत बैठी और यह निर्णय हुआ कि रातोंरात कुलधरा गाँव खाली करके सभी गांववाले चले जाएं. रातों रात 85 गाँवों के ब्राह्मण कहाँ कैसे और कब गए इस बात का पता आज तक नहीं लगा है. पर जाते-जाते पालीवाल ब्राह्मण श्राप दे गए कि यह कुलधरा गाँव हमेशा वीरान रहेगा. इस जमीन पर कोई फिर से आकर बस नहीं पायेगा.

यह स्थान (पूर्व ग्राम) जैसलमेर नगर से 18 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम

में स्थित है. यह गाँव 861 मी. × 261 मी. के उत्तर-दक्षिण आयताकार क्षेत्र में फैला हुआ था. माता-रानी के मन्दिर को केन्द्र में रखकर गाँव उसके चारो और फैला हुआ था. इसमें तीन उत्तर-दक्षिण मार्ग थे जो विभिन्न स्थानों पर पूर्व-पश्चिम की पतली गलियों द्वारा मिलते थे.

इस स्थान की अन्य दीवारें उत्तर एवं दक्षिण से देखी जा सकती हैं. ग्राम के पूर्व भाग में छोटी कंकणी नदी के रूप में एक सूखी नदी है. पश्चिमी भाग मानव निर्मित दीवारों से सुरक्षित है.

आज भी गर्मी हो या सर्दी जैसलमेर में जो तापमान रहता है, कुलधरा गाँव में आते ही उसमें 4 डिग्री की बढ़ोत्तरी हो जाती है. वैज्ञानिकों की टीम जब वहाँ पहुंची तो उनकी मशीनों में आवाज और तरंगों की रिकॉर्डिंग हुई, जिससे यह पता चलता है कि कुलधरा में आज भी कुछ शक्तियां मौजूद हैं जो इस गाँव में किसी को रहने नहीं देती. मशीनों में रिकॉर्ड तरंग यह बताते हैं कि वहाँ मौजूद शक्तियां कुछ संकेत देती हैं. आज भी कुलधरा गाँव की सीमा में प्रवेश करते ही मोबाइल नेटवर्क और रेडियो काम करना बंद कर देते हैं पर जैसे ही गाँव की सीमा से आप बाहर आते हैं, मोबाइल और रेडियो फिर से शुरू हो जाते हैं.

17वीं 18वीं शताब्दी में कुलधरा गाँव में तकरीबन 1588 लोग रहते थे. एक ब्रिटिश अधिकारी जेम्स टॉड के अनुसार यहां की जनसंख्या 1815 ईस्वी में कुल 800 ही थी जिसमें 200 परिवार थे.

अभिलेखों के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि पालीवाल ब्राह्मणों में कुलधर एक जाति समूह था और इन्हीं के नाम पर गांव का नाम पड़ा.

कुलधरा गाँव के लोग ज्यादातर कृषि और व्यापार के साथ ही किसान हुआ करते थे. साथ ही, मिट्टी के बर्तन भी बनाया करते थे. ये अलंकृत बर्तनों का इस्तेमाल करते थे जोकि fine clay के बनाए जाते थे.

कुलधरा के खंडहरों में या आसपास जो भी शिलालेख या निर्माण पाये गये हैं, उससे यह बात साबित होती है कि यह गाँव आधुनिकता का अग्रणी था और यहाँ नये-नये प्रयोग तथा परियोजनाएं संपन्न होती थीं.

इस गाँव का निर्माण वैज्ञानिक तरीके से हुआ था....

ईंट पत्थर से बने इस गांव की बनावट ऐसी थी कि यहां कभी गर्मी का एहसास नहीं होता था. कहते हैं कि इस गाँव के घर इस कोण में बनाए गये थे कि हवाएं सीधे घर के भीतर होकर गुज़रती थीं. कुलधरा के ये घर रेगिस्तान में भी वातानुकूलन का अहसास देते थे. इस जगह गर्मियों में तापमान 45 डिग्री रहता है पर आप यदि अब भी भरी गर्मी में वीरान पड़े इन मकानों में जायेंगे तो आपको शीतलता का अनुभव होगा. गांव के तमाम घर झरोखों के ज़रिए आपस में जुड़े थे इसलिए एक सिरे वाले घर से दूसरे सिरे तक अपनी बात आसानी से पहुंचाई जा सकती थी. घरों के भीतर पानी के कुंड, टंकियाँ और सीढ़ियां कमाल के बने हुए हैं.

पालीवाल लोग, ब्राम्हण होते हुए भी बहुत ही उद्यमी थे. अपनी बुद्धिमत्ता, कौशल और अटूट परिश्रम के तहत पालीवालों ने धरती पर सोना उगाया था. पालीवालों ने रेगिस्तानी सरज़मीं के बीचोंबीच इस गांव को बसाते हुए खेती पर केंद्रित समाज की परिकल्पलना की थी. रेगिस्तान में खेती, पालीवालों के समृद्धि का रहस्य था. पालीवाल अपनी वैज्ञानिक सोच, प्रयोगों और आधुनिकता की वजह से उस समय में भी इतनी तरक्की कर पाए थे.

पालीवालों के जल-प्रबंधन की इसी तकनीक की वजह से थार रेगिस्तान में भी इंसानों और मवेशियों की आबादी बसी हुई थी. पालीवालों ने ऐसी तकनीक विकसित की थी कि बारिश का पानी रेत में गुम नहीं होता था बल्कि एक खास गहराई पर जमा हो जाता था और वह उसका इस्तेमाल करते थे.

पूर्व में इस गाँव में घूमने जाने के लिए अनुमति नहीं थी, क्योंकि इस गाँव को भूतिया गाँव कहा जाता रहा है. लेकिन अभी राजस्थान सरकार ने यह गाँव सभी के लिए खोल दिया है और उसे पर्यटन स्थल का दर्जा दिया गया है. अब यहां हज़ारों की संख्या में लोग घूमने आते हैं. देश एवं विदेश से भी लोग आते हैं. कभी हंसता खेलता यह गांव आज एक खंडहर में तब्दील हो चुका है. टूरिस्ट प्लेस में बदल चुके कुलधरा गांव में घूमने आने वालों के मुताबिक यहां रहने वाले पालीवाल ब्राह्मणों की आहट आज भी सुनाई देती है. उन्हें वहां हर पल ऐसा अनुभव होता है कि कोई आसपास चल रहा है. बाजार के चहल-पहल की आवाजें आती हैं, महिलाओं की बात करने की आवाजें, उनकी चूड़ियों और पायलों की आवाजें हमेशा वहां के माहौल को रहस्यमयी बनाती हैं. प्रशासन ने इस गांव की सरहद पर एक गेट बनवा दिया है जिसके पार दिन में तो सैलानी घूमने आते रहते हैं लेकिन रात में इस गेट को पार करने की कोई हिम्मत नहीं करता है.

आज भी कुलधरा गाँव शाम होते ही खाली हो जाता है और कोई इन्सान वहाँ रहने की हिम्मत नहीं करता. जैसलमेर जब भी जाना हो तो कुलधरा जरुर देखें. क्योंकि ब्राह्मण के क्रोध और आत्मसम्मान का प्रतीक है, कुलधरा!

यदि कभी भी जैसलमेर जाने का मौका मिले तो रेत में बसे इस स्वर्णिम इतिहास को अवश्य देखें.

उज्ज्वल चन्द्र प्रकाश राठी
क्षे.म.प्र.का., कोलकाता

अहमदाबाद की झूलती मीनारें

भारत की प्राचीन एवं मध्यकालीन इमारतों को देख कर यह तो आभास होता है कि उन्हें बनाने हेतु वास्तु कला की उन्नत तकनीक, गणित की समझ और विज्ञान का ज्ञान आवश्यक है. इन सबके समावेश से बनी इमारतें, ऐसी संरचना होती हैं जो ना केवल अद्भुत हैं अपितु वर्षों से अपने पूर्ण वैभव को प्राप्त किये हुए हैं. ऐसी ही एक इमारत देखने को मिलती है, अहमदाबाद शहर में! सारंगपुर दरवाजे की विपरीत दिशा में निर्मित सीधी बशीर मस्जिद की मीनार और कालुपुर रेलवे स्टेशन के समीप राजबीबी मस्जिद की मीनार. सीधी बशीर, अहमदाबाद की सबसे उंची मीनार है जो कि अहमदाबाद रेलवे स्टेशन के निकट ही स्थित है.

सन 1452 में सुल्तान अहमद शाह, जिन्होंने अहमदाबाद शहर बसाया था, के एक मुलाज़िम सीधी बशीर द्वारा निर्मित यह मीनार प्रथम दृष्टि में शायद ही किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पाने में सफल हो पाए. वास्तुकार एवं इतिहासकारों की मानें तो निर्माता को निर्माण के समय स्वयं इन इमारतों की विशिष्टता का बोध नहीं था. क्योंकि इस वास्तु शैली की असंख्य इमारतें भारत में पहले से ही थीं. फिर वह क्या है, जो इन इमारतों को सामान्य से असामान्य बनाता है?

अंदर से खोखली इन इमारतों के झरोखे पूर्व-पश्चिम दिशा में हैं. गोलाकार सीढ़ियाँ, इस तीन मंजिली इमारत की सर्वोच्च मंजिल पर ले जाती हैं. यहीं पर है, वह असामान्य वास्तुशिल्प! मीनार को हल्का सा धक्का देने पर यह मीनार झूलने लगती है. बलुआ पत्थर से निर्मित इस मीनार को पूर्णतया प्राकृतिक वस्तुओं से जोड़ा गया है. बावजूद इसके ये मीनार हल्के से धक्के से आगे पीछे झूलने लगती है. यहाँ पर इनकी अद्भुतता समाप्त नहीं होती. जब एक मीनार को धक्का देकर झुलाया जाता है, तो एक निश्चित समय पर दूसरी मीनार स्वतः ही झूलने लगती है. 70 फीट ऊँची मीनारें अपने आप में रहस्य का राज छुपाये हुए हैं. ये दोनों मीनारें जब एक निश्चित आवृत्ति पर झूलती हैं तो इनके मध्य कंपन उत्पन्न होता है, परंतु इनको जोड़ने वाले दालान में किसी भी प्रकार का कोई कंपन या कोई आवृत्ति अनुभव नहीं होती. ऐसा क्या है, जो इस पत्थर की मीनार को इस प्रकार ना केवल झुला देता है अपितु दूसरी मीनार को भी झूलने पर विवश कर देता है.

आज तक इस घटना के पीछे का तथ्य एक अनसुलझा रहस्य ही बना हुआ है. ब्रिटिश हुकूमत के समय इन इमारतों की नींव को खोदा गया था ताकि इनके अनुबद्द क्रम में झूलने के रहस्य को ज्ञात किया जा सके. पर इसका परिणाम सिफर ही निकला. परंतु इस खुदाई ने इन मीनारों को जो क्षति पहुंचाई उसके कारण ये मीनार जर्जर अवस्था में पहुंच गयी. इसके उपरांत कई भूकंप आये परंतु ये मीनारें आज भी उसी प्रकार सुदृढ़ और अडिग हैं. कुछ वर्षों पूर्व भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण ने इन मीनारों में सामान्य जन के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया है.

अपने तरह की यह विश्व में दूसरी ऐसी इमारत है. इरान में भी इस प्रकार की इमारत है. वास्तु शिल्प के दृष्टिकोण से इन इमारतों के आगे पीछे झूलने की घटना को समझ पाना नामुमकिन है. अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक एवं अभियांत्रिकी अनुसंधान ने दिनांक 05 मई, 2013 को प्रकाशित एक लेख में इस मीनार के झूलने के वैज्ञानिक तरीके से

समझने का प्रयास किया. यह मीनार भी अन्य मीनारों की भांति ही नींव में काफी विस्तार लिये हुए है और नींव के ऊपर पतली हो गयी है.

अन्य इमारतों में किसी भी प्रकार की ग्रूव (नाली) नहीं बनाई जाती है और यदि बनाई जाती है तो खड़ी. उदाहरण के लिये ताजमहल की मीनार एकदम सपाट है. इसमें किसी भी प्रकार का कोई ग्रूव या नाली नहीं है. इस कारण से यह मीनार किसी भी परिस्थिति में ना झूलती है और ना ही किसी भी प्रकार के धक्के का इस पर कोई प्रभाव पड़ता है. ताजमहल की सपाट मीनार को देखा व समझा जा सकता है. वहीं कुछ मीनारों पर ग्रूव या नाली वर्टिकल या खड़ी होती है. कुतुब मीनार को देखिए, ग्रूव का खड़ा होना या मीनार का सपाट होना अलग-अलग वास्तुशैली है और इनका मीनार के झूलने या न झूलने से सैद्धांतिक रूप से कोई स्थापित संबंध नहीं है. परंतु सीधी बशीर की मीनार इस मामले में अपने आप में अनूठी है. इस मीनार पर बने ग्रूव हॉरिजॉन्टल यानि कि क्षैतिज हैं. आम बोलचाल की भाषा में समझा जाये तो यह मीनार एक स्प्रिंग के सिद्धान्त पर काम करती है, स्प्रिंग की भांति लचकदार और खड़ी. इस कारण इसके ऊपरी भाग पर ज़ोर डालने से मीनार में स्प्रिंग की भांति लचक आती है. परंतु यह सिद्धांत अगर मान भी लिया जाय तो यह केवल आधा अधूरा ही होगा. एक मीनार के झूलने पर दूसरी मीनार का झूलना इस सिद्धांत से स्पष्ट नहीं किया जा सकता है और न ही इसमें होने वाले कंपन को ही! इन सबके बीच दालान में किसी भी क्रिया-प्रतिक्रिया का पता नहीं लगना, इसे भी सिद्धांत से वर्णित नहीं किया जा सकता है. ऐसा माना जाता रहा है कि इन मीनारों को नीचे से वायु की सुरंग से जोड़ा गया है पर यह बात भी आज तक सिद्ध नहीं हो सकी है.

सुरक्षा कारणों से अब इन मीनारों के झूलने की घटना का प्रदर्शन जन सामान्य के लिये बंद कर दिया गया है. फिर भी यदि वास्तुकला के अनूठे व अद्वितीय धरोहर को देखना हो तो सड़क मार्ग से गीता मंदिर बस अड्डे से कालूपुर रेलवे स्टेशन के निकट जाया जा सकता है.

इस प्रकार के न जाने कितने ही अनूठे उदाहरण भारत में मिलेंगे जिनको विज्ञान के सिद्धांतों द्वारा वर्णित नहीं किया जा सकता है. परंतु इनके वजूद को नकारा भी नहीं जा सकता है. दिमाग की समझ से परे यह मीनार हमारे प्राचीन और अति विकसित अभियांत्रिकी का जीवंत प्रमाण है जो आज उपेक्षा का शिकार बने हुए हैं. अपनी प्राचीन वास्तुकला पर गौरवान्वित महसूस करते हुए इस मीनार को वास्तविक रूप से देखना निश्चित ही विस्मयकारी अनुभव होगा.

सुनील कुमार,
नोक्षेका, बेंगलूरु

कोडिन्ही के जुड़वा

इंसान कुदरत की अनमोल रचना है लेकिन कई बार कुदरत दो इंसानों को एक ही जैसी शक्ल और सूरत दे देती है. दुनिया भर में जुड़वा मौजूद हैं, लेकिन क्या आप ऐसी जगह जानते हैं, जहां एक ही जगह 400 जुड़वा रहते हैं यानी 800 लोग एक ही जैसे.

वैसे तो जुड़वा बच्चे कहीं भी हो सकते हैं लेकिन केरल के मल्लपुरम जिले में स्थित कोडिन्ही गांव है, जो जुड़वा बच्चों के मामले में सबको हैरत में डाल देता है. यह एक छोटा सा गांव है, जहां की आबादी चंद हजार है (लगभग दो हजार) लेकिन जुड़वाओं की संख्या यहां 400 से भी अधिक है यानी 800 लोग एक जैसी शक्ल और एक ही जैसे हाव भाव के साथ, है ना अद्भुत..?

केरल के मल्लपुरम जिले का कोडिन्ही गांव के घर-घर में जुड़वा दिख जाते हैं. कुछ साल पहले यह दुनिया की नजरों में इतना प्रसिद्ध

नहीं था लेकिन यहां कुछ स्थानीय लोगों ने सर्वे किया यह जानने के लिए कि यहां इस गांव में कितने जुड़वा बच्चे हैं. जब गिनती सामने आई, तो लोगों के होश उड़ गए. इस गांव में जुड़वा बच्चे होते रहे हैं पर कभी भी लोगों ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि गांव की आबादी में वह कितना बड़ा हिस्सा है. सर्वे में यह पाया गया कि करीब 2000 परिवार इस गांव में रहते हैं जिनमें करीब 400 जुड़वा-यानी 800 लोग हैं.

अपनी इसी खूबी के चलते कोडिन्ही विश्व स्तर पर अब प्रसिद्ध हो चुका है. विश्व के अधिकतर बड़े मीडिया हाउस यह स्टोरी कवर कर चुके हैं. विदेशों के कई वैज्ञानिक समय-समय पर यहां शोध करने आते रहते हैं.

क्यों होते हैं इस गांव में इतने जुड़वा? जितने मुंह उतनी बातें! कोई कहता है कि यहाँ की मिट्टी में ही कुछ बात है. कोई पानी कमाल का बताते हैं और कोई हवा की करिश्माई! परंतु आज तक कोई यह नहीं जान पाया कि यहां की मिट्टी में कुछ खास है या खान-पान में या यह कोई वरदान या श्राप?

हमें तो कई हिंदी फिल्में याद आ गईं. जैसे सीता और गीता, राम और श्याम जहां दो ही जुड़वा थे. परंतु यहां इस गांव में तीन लोग एक ही शक्ल के भी मिल जाएंगे, हालांकि उनकी संख्या बहुत कम है.

सामान्य रूप से भारत में हर हजार बच्चों में चार बच्चे जुड़वा पैदा होते हैं लेकिन कोडिन्ही गांव में हर हजार बच्चों में 45 फ़ीसदी बच्चे जुड़वा पैदा होते हैं.

विज्ञान के मुताबिक जुड़वा उन घरों में जन्म लेते हैं, जिन परिवारों में पहले से ही जुड़वा होने का इतिहास हो या किसी तरह की दवाइयों से भी जुड़वा बच्चे जन्म ले सकते हैं. परंतु जब केरल के कोडिन्ही गाँव की बात आती है तब जवाब में रहस्य और रहस्यमयी बन जाता है.

एक तर्क यह भी है कि अक्सर उन परिवारों में जुड़वा जन्म लेते हैं जहां नजदीकी रिश्ते में शादी की जाती है जो कि कोडिन्ही में संभव है परंतु विज्ञान ऐसी किसी भी संभावना को नकारता है.

इस जगह इतने अधिक जुड़वा पैदा होने के पीछे कारण क्या है, यह बात आज भी अज्ञात है. पहले डॉक्टरों ने यह तर्क दिया था कि यह सब खान-पान के कारण है लेकिन इस इलाके के लोगों का खान-पान केरल के अन्य इलाकों के समान ही है. इसलिए इस तर्क को खारिज कर दिया गया है. इसके अलावा डॉक्टर अभी तक कोई दूसरा कारण नहीं ढूंढ पाये हैं.

कुछ लोग इसे ऊपर वाले की विशेष कृपा मानते हैं, जिससे यहां पर अधिकांश जुड़वा पैदा होते हैं, वहीं कुछ लोग इसे अजब-गजब मानते हैं.

फिर क्यों पैदा हो रहे हैं इस गांव में जुड़वा बच्चे? यह अभी भी एक पहेली बनी हुई है, जिसे अभी तक कोई सुलझा नहीं पाया है.

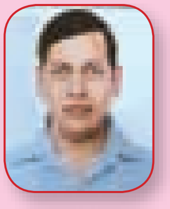

रविंद्र जलेश्वर सिंह
सीहोर शाखा, राजकोट

श्री तनोट राय मंदिर, जैसलमेर, राजस्थान

राजस्थान राज्य का सीमावर्ती जिला! जैसलमेर जिसका नाम आते ही रेगिस्तान, ऊंट और पाकिस्तान से जुड़ी अंतर-राष्ट्रीय सीमा की याद आने लगती है. लेकिन जैसलमेर को लेकर मेरे लिए एक और खास वजह है और वह है श्री तनोट राय माता का मंदिर.

यह मंदिर जैसलमेर जिले से लगभग 130 किमी दूर अंतर्राष्ट्रीय सीमा की ओर है. मंदिर से लगे हुए शिलालेख के अनुसार माता श्री हिंगलाज के वचनानुसार जैसलमेर राज्य में चेलक निवासी मामड़िया जी की प्रथम संतान के रूप में वि.सं. 808 चैत्र सुदी नवमी को भगवती श्री आवड देवी (तनोट राय माता) का जन्म हुआ. अपने अवतरण के बाद श्री आवड देवी ने बहुत चमत्कार दिखाए. तनोट के अंतिम राजा भाटी तनुरावजी ने विसं 847 में तनोटगढ़ की नींव रखी तथा विसं 888 में मंदिर की प्रतिष्ठा करवाई गई थी. मंदिर से पाकिस्तान बॉर्डर करीब 20 किमी दूर है.

1965 में भारत-पाक युद्ध के दौरान पाकिस्तान ने मंदिर तथा आस-पास के क्षेत्रों में करीब 3000 से ज्यादा बम गिराए थे. करीब 450 गोले मंदिर परिसर में गिरे लेकिन मंदिर को खरोंच तक नहीं आई. मंदिर में एक भी बम नहीं फूटा. इस घटना ने लोगों की श्रद्धा और भक्ति को और मजबूत कर दिया. 1965 में ही सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ़) ने यहाँ चौकी स्थापित कर मंदिर की पूजा अर्चना तथा व्यवस्था का कार्यभार संभाल लिया. वर्तमान में भी मंदिर का प्रबंध संचालन, सीमा सुरक्षा बल द्वारा किया जाता है.

इसी प्रकार 1971 के युद्ध में भी माता तनोट राय की कृपा से शत्रु के सैकड़ों टैंक व गाड़ियाँ भारतीय फौजों ने नेस्तनाबूत कर दी और शत्रु को भागने पर विवश कर दिया. माता तनोटराय का मंदिर स्थानीय नागरिकों के साथ भारतीय सैनिकों तथा सीमा सुरक्षा बल के जवानों की श्रद्धा का विशेष केंद्र है.

युद्ध के पश्चात मंदिर में एक विजय स्तम्भ भी बनाया गया है. कुछ वर्षों पहले तक मंदिर में युद्ध के समय गिरे शत्रु के बम लोगों को देखने के लिए रखे गए थे. वर्तमान में उनके मॉडल तथा भारतीय सैनिकों की शौर्य गाथा दर्शाते कुछ छायाचित्र लोगों के अवलोकनार्थ रखे गए हैं. मंदिर में संध्या समय में होने वाली आरती भी लोगों के आकर्षण का केंद्र है. यह आरती सीमा सुरक्षा बल के जवानों द्वारा की जाती है. इस आरती में भक्ति भावना के साथ जोश का अनूठा रंग नजर आता है. आरती देखने के लिए शाम 3-4 बजे से ही भक्तों/सैलानियों का पंक्तिबद्ध तरीके से बैठना शुरू हो जाता है.

मंदिर में भक्तों को श्रद्धा और भक्ति के साथ एक विशेष गर्व की भी अनुभूति होती है. मेरी गुजारिश है कि जब भी जैसलमेर जाएँ, माता तनोटराय मंदिर के दर्शन करें.

नवीन गुप्ता,
सरल, मुंबई (पश्चिम)

पद्मनाभस्वामी मंदिर – त्रिवेन्द्रम, केरल

भारत में हमें प्राचीन से प्राचीन मंदिर देखने को मिल जाएंगे. इनमें से कई मंदिर आज भी वैज्ञानिक रिसर्च से काफी दूर हैं और जिन मंदिरों पर वैज्ञानिकों ने रिसर्च की है, उसने सबका सर चकराकर रख दिया है. कई लोगों के मन में इसके खिलाफ जरूर शंका होगी, लेकिन फिर भी उनके पास कोई जवाब भी नहीं होगा. पद्मनाभस्वामी मंदिर एक ऐसा ही मंदिर है, जिसके तहखाने का रहस्य वैज्ञानिक भी नहीं खोल पा रहे हैं और ना ही उसका रहस्य सुलझा पा रहे हैं.

पद्मनाभस्वामी मंदिर केरल के त्रिवेन्द्रम में स्थित है. इसके तहखाने की खबर कुछ साल पहले काफी सुर्खियां बनी हुई थीं. लेकिन इसे खोलने की कोशिश वर्ष 1931 से शुरू हो गई, दरअसल 'मिश्र हज' ने वर्ष 1931 में एक किताब लिखी थी, जिसका नाम था 'Guide To Travancore'. इस किताब में बताया गया था कि जब पद्मनाभस्वामी मंदिर के कोबरा वाले तहखाने को खोलने की कोशिश की गई, तब उसमें से कई जहरीले सांप निकल कर बाहर आए और सबको वहाँ से भागना पड़ा. उन सब लोगों ने अगले कई सालों तक यह दावा किया कि उन सांपों ने उनका हर जगह पीछा किया है. इसके अलावा और भी कई किताबों में इस तहखाने के बारे में जिक्र किया गया है और इसके रहस्य के बारे में बात की गयी हैं.

इसके बाद वर्ष 2011 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश से पद्मनाभस्वामी मंदिर के तहखाने को खोलने के लिए एक टीम बनाई गई और उन लोगों ने इसके पूरे 6 तहखाने ढूंढ़ निकाले और इन्हें नाम दिया गया A,B,C,D,E,F. कुछ समय बाद 2 और तहखाने ढूंढ़ लिये गए, जिन्हें G और H नाम दिया गया. इसमें से B तहखाने को छोड़कर बाकी सारे तहखाने खोले गए और उनमें सोने की मूर्तियां, गहने, रत्न, हीरे आदि कई मूल्यवान चीजें मिलीं, जिनकी कुल कीमत तीन लाख करोड़ थी. लेकिन B तहखाना, जिसके दरवाजे पर कोबरा बना हुआ है, उसे नहीं खोला जा सका क्योंकि जब उस तहखाने का लोहे का दरवाजा खोला गया तो उसके अंदर एक और लकड़ी का दरवाजा पाया गया. जब उस लकड़ी के दरवाजे को तोड़कर खोला गया तो उसके अंदर एक और लोहे का भारी दरवाजा निकला और उस दरवाजे को खोलने का कोई रास्ता नहीं था. ऐसा लग रहा था जैसे उस दरवाजे को लगाया ही ऐसे गया है कि कोई उसे दोबारा खोल ना सके. वहां मौजूद साधुओं से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि इस दरवाजे पर 'नाग बंधन' लगाया गया है. यानी इसे शक्तिशाली मंत्रों से बंद किया गया है और इस दरवाजे को सिद्ध पुरुष ही खोल सकते हैं, जो इन मंत्रों की जानकारी रखते हों. अगर इसे ऐसे ही खोलने की कोशिश की गई तो वह संभव नहीं होगा. हर दरवाजा खोलने पर उसके अंदर एक और दरवाजा निकलता जाएगा और इसे कभी खोला नहीं जा सकेगा.

आइए, अब मंदिर के बारे में जानते हैं. पद्मनाभस्वामी मंदिर भारत के केरल राज्य में तिरुअनन्तपुरम (त्रिवेन्द्रम) में स्थित है. इस मंदिर के निर्माण में बहुत सी शैलियों का मिश्रण किया गया है. देशी केरल शैली और द्रविड़ शैली का संयुक्त रूप से इस्तेमाल कर इस मंदिर का निर्माण किया गया है. इसकी दीवारें ऊंची हैं जो मन को लुभाती

हैं. यह दुनिया के सबसे धनी मंदिरों में से एक है. अकूत धन संपत्ति, सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात के लिए इस मंदिर ने दुनिया में इतिहास रचा है. मंदिर के गर्भ गृह में भगवान विष्णु की विशाल मूर्ति है. इस प्रतिमा में भगवान विष्णु शेषनाग पर विराजमान हैं. यहाँ पर भगवान पद्मनाभस्वामी त्रावनकोर के राज परिवार के शासक थे. उस समय शासन कर रहे त्रावणकोर के महाराज मूलम थिरूनल रोमा वर्मा, श्री पद्मनाभ दाता के रूप में मंदिर के ट्रस्टी थे. वे स्वयं को भगवान पद्मनाभ के दास मानते थे. इस मंदिर में हिन्दुओं को ही प्रवेश मिलता है. मंदिर प्रवेश के लिए विशेष पोशाक निर्धारित की गयी है.

पद्मनाभस्वामी मंदिर का उल्लेख ब्रह्म पुराण, मत्स्य पुराण, वर: पुराण, स्कन्द पुराण, पद्म पुराण, वायु पुराण, भगवत पुराण और महाभारत आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थों में मिलता है. यह मंदिर 500 बी.सी. से 300 ए.डी. के बीच के तमिल साहित्य के संगम के दौर का है. कई इतिहासकार इसे स्वर्ण मंदिर कहते हैं. अपनी अथाह धन संपत्ति के लिए यह मंदिर अकल्पनीय माना जाता है. 9 वीं सदी के तमिल साहित्य, कविताओं और संत कवि नाम्माल्वर के अनुसार इस मंदिर में सोने की दीवारें हैं. मंदिर में कुछ स्थानों को देखकर लगता है कि आप जैसे स्वर्ग में आ गए हों. यह मंदिर प्रमुख 108 धार्मिक स्थलों में से एक है और इसके दिव्य प्रबंध की महिमा देखते ही बनती है. इस मंदिर के दिव्य प्रबंध की महिमा मलाई नाडू के 13 धार्मिक स्थलों में से एक है. 8 वीं सदी के संत कवि नाम्माल्वर पद्मनाभ की महिमा गाया करते थे.

मंदिर की मुख्य बातें-

1. भगवान विष्णु यहाँ के प्रमुख देव और पद्मनाभ स्वामी मंदिर तथा त्रावणकोर के शासक भी माने जाते हैं. यहाँ मौजूद मुकुट 18 वीं सदी के त्रावणकोर के राजा का है और शाही परिवार के सदस्य उनकी ओर से राज करते हैं. यह शाही मुकुट हमेशा त्रावणकोर मंदिर में सुरक्षित रहता है.

2. इस मंदिर का निर्माण द्रविड़ और देशी केरल शैली से बना है. केरल का कोई मंदिर इतना बड़ा नहीं है. इनमें कइयों की ढलान वाली छत है, जिनकी कुछ कहानियां भी कही जाती हैं.

3. पद्मनाभन स्वामी मंदिर का खजाना दूसरे किसी संस्थान या मंदिरों के खजानों से अधिक है. वर्ष 2011 में इस मंदिर का तहखाना खुला, जिसमें इतना धन निकला की यह मंदिर दुनिया का सबसे अमीर मंदिर बन गया. इसके पहले 90$ बिलियन का मुगल खजाना सबसे बड़ा था.

4. लक्ष-दीपम् त्योहार इस मंदिर में हर छ: साल के बाद मनाया जाता है. यह इस मंदिर का सबसे बड़ा त्योहार है. जिसमें हजारों, लाखों दिये मंदिर में जलाए जाते हैं. इसे मकर सक्रांति के दिन मनाया जाता है. इस दिन पद्मनाभ, नरसिम्हा और कृष्ण की तस्वीरों के साथ विशाल शोभा यात्रा निकलती है.

5. कुछ समय पहले यह मंदिर तब चर्चा में आया था जब एक लाख करोड़ से अधिक का खजाना यहां मिला था. कहते हैं कि इससे कहीं अधिक खजाना वहां के तहखानों में बंद है. अब यह मंदिर एक बार फिर से चर्चा में है. यहां से 186 करोड़ रुपये का सोना चोरी हो गया है.

6. कहा जाता है कि 10 वीं शताब्दी में इस मंदिर का निर्माण कराया गया था. हालांकि कहीं-कहीं इस मंदिर के 16वीं शताब्दी के होने का भी जिक्र है. लेकिन यह बात स्पष्ट है कि 1750 में त्रावणकोर के एक योद्धा राजा मार्तंड वर्मा ने आसपास के इलाकों को जीत कर यह संपदा बढ़ाई.

त्रावणकोर के शासकों ने शासन को दैवी शक्ति दिलाने के लिए अपना राज्य भगवान को समर्पित कर दिया था. उन्होंने भगवान को ही राजा घोषित कर दिया था. मंदिर से भगवान विष्णु की एक मूर्ति मिली है जो शालिग्राम पत्थर से बनी हुई है. वर्ष 1991 में त्रावणकोर के अंतिम महाराजा बलराम वर्मा की मौत हो गई. वर्ष 2007 में एक पूर्व आईपीएस अधिकारी सुंदरराजन ने याचिका कोर्ट में दाखिल कर राज परिवार के अधिकार को चुनौती दी. वर्ष 2011 में सुप्रीम कोर्ट ने तहखाने खोलकर खजाने का ब्यौरा तैयार करने को कहा. दिनांक 27 जून, 2011 को तहखाने खोलने का काम शुरू किया गया. तहखाने खुले तो लोगों की आंखे खुली रह गई. बताया तो यह भी जा रहा है कि मंदिर से सोने के बर्तनों के साथ अन्य काफी चीजें भी गायब हैं.

बंद तहखाने के मामले में वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि इसमें प्राचीन विज्ञान की कोई कड़ी हो सकती है. हो सकता है कि इसमें जहरीली गैस भरी हो और वह जानलेवा भी हो सकती है. इतने साल बीत जाने के बाद आज तक बस इस तहखाने को खोलने की बातें ही की जा रही हैं. क्योंकि अगर भारत को लूटने वाले अंग्रेज इस खजाने को हाथ भी नहीं लगा पाए, तो कुछ तो रहस्यमय होगा ही इस तहखाने में! इन सब सवालों का जवाब तो उस तहखाने में ही छुपा हुआ है, लेकिन आज इसे देखकर हमें ऐसा नहीं लगता कि इन सवालों का जवाब हमें जल्दी मिल पाएगा. कुछ भी कहिए लेकिन त्रावणकोर का यह मंदिर अपने आप में कुछ रहस्य लिए हुए और अद्भुत है.

सुभाष चन्द्र,
क्षे. का. मदुरै

समस्तीपुर का सांपों का मेला

भारतीय संस्कृति में जीव का विशेष महत्व है. गाय को माता के रूप में तो पीपल के पेड़ को भी देवता स्वरूप पूजा जाता है. हमारी इसी संस्कृति का एक अहम हिस्सा है नागपंचमी. नागपंचमी साँपों को समर्पित हिंदुओं का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है. नागजाति का वैदिक युग में बहुत लंबा इतिहास रहा है, जो भारत से लेकर चीन तक फैला है. चीन में आज भी ड्रैगन यानि महानाग की पूजा होती है, उनका राष्ट्रीय चिन्ह भी यही ड्रैगन है. भारतीय पौराणिक कथाओं में 12 नागों का उल्लेख मिलता है. नाग भारतीय संस्कृति का अहम हिस्सा है. जहां नाग एक तरफ भगवान शंकर के आभूषण के रूप में उनके गले में लिपटे रहते हैं तो वहीं शिवजी का निर्गुण-निराकार रूप शिवलिंग भी सर्पों के साथ ही सजता है. भगवान विष्णु शेषनाग की शय्या पर ही शयन करते हैं. शेषनाग विष्णुजी की सेवा से कभी विमुख नहीं होते. मान्यता है कि जब-जब भगवान विष्णु पृथ्वी पर अवतार लेते हैं, तब-तब शेषनाग जी

उनके साथ अवतरित होते हैं. रामावतार में लक्ष्मणजी तथा कृष्णावतार में बलराम जी के रूप में शेषनाग ने भी अवतार लिया था.

आइये, अब हम बात करते हैं बिहार के समस्तीपुर से 23 किलोमीटर दूर स्थित सिंधियाघाट की, जहां प्रतिवर्ष साँपों के एक आश्चर्यजनक मेले का आयोजन किया जाता है. विश्व में विरले ही होते हैं जो साँप से नहीं डरते. यहाँ हर साल नागपंचमी के दिन लोग जुलूस में साँपों को लेकर चलते हैं. हर साल की तरह इस बार भी 15 अगस्त, 2018 को नागपंचमी के मौके पर बिहार के समस्तीपुर में साँपों का मेला लगा. सिर्फ बिहार ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों से भी लोग इस अद्भुत मेले को देखने पहुंचे. ये मेला लगभग 300 वर्षों से लगता आ रहा है. इस दौरान पहले तो भगवती की आराधना की जाती है और फिर शुरू होता है गंडक नदी से साँपों को निकालने का प्रचलन! लोगों की मान्यता है कि इस दिन मांगी गई मन्नतें जरूर पूरी होती हैं. इस मेले के लिए लोग एक महीना पहले से ही साँपों को पकड़ कर रखने लगते हैं.

साँपों के इस अद्भुत मेले में श्रद्धालुओं में शामिल व्यक्तियों, बच्चे, बूढ़े सभी के गले व हाथ में साँप होते हैं तो वहीं साँपों के इस आश्चर्यजनक दृश्य को देख सामान्य जनों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं. कोई साँपों के साथ खेलते हुए दिखता है तो कोई साँपों को कुछ खिलाते हुए! कुछ देर बाद इन साँपों को दूध पिलाकर मन्नत मांगने के बाद छोड़ दिया जाता है. नागपंचमी के दिन साँपों को पकड़ने की प्रथा कई पीढ़ियों से यहां चली आ रही है. मान्यता है कि वर्षों पहले ऋषि, कुश का साँप बनाकर पूजा करते थे लेकिन अब लोग वास्तव में साँप पकड़कर पूजा करते हैं. स्थानीय लोगों का दावा है कि वर्षों

से चले आ रहे इस मेले में आज तक किसी को भी साँप ने नहीं काटा है. मेले के इस अवसर पर मृदंग बजाते हुए पुजारी भजन गाते हैं और लोग गले एवं हाथों में साँपों को लेकर झूमते दिखते हैं. महीनों पहले साँपों को पकड़ने का सिलसिला शुरू होता है वह नागपंचमी के दिन तक चलता रहता है एवं साँपों को पकड़कर टोकरी में रखा जाता है. हजारों श्रद्धालु पूजा-अर्चना करने के बाद साँपों का करतब देखते हैं और अंत में अपनी मन्नतें मांग कर उन्हें जंगल में छोड़ देते हैं. आश्चर्य चकित करने वाला यह अनोखा दृश्य देखकर कुछ लोग सहम जाते हैं तो कुछ आस्था के कारण दिव्य शक्ति की अनुभूति करते हैं.

भारत की प्राचीन संस्कृति में साँप हमेशा मौजूद रहे हैं. ऐसा कोई भारतीय मंदिर नहीं है जहां साँप न हो. इसका एक पहलू है कि इसे एक प्रतीक के रूप में लिया जाता है. योग में कुंडली मार कर बैठा हुआ साँप कुंडलिनी का प्रतीक माना जाता है. इसे प्रतीक माने जाने का कारण यह है कि चेतना और क्षमता के स्तर पर आकाशीय प्राणियों जैसे: यक्ष, गंधर्व को इंसानों से बेहतर माना जाता है. जब भी इन प्राणियों ने अस्तित्व के इस आयाम में प्रवेश किया, तो उन्होंने हमेशा एक साँप का रूप धारण किया. पृथ्वी पर मौजूद सभी प्राचीन और पौराणिक कथाओं में इसकी चर्चा की गई है. भारत में शिव के नागभूषण होने की कहानी से लेकर ऐसी अनगिनत कहानियाँ हैं.

पुराणों में नरक में नागलोक होने की बात कही गई है- साँपों के एक पूरे समाज की कल्पना है, जिसमें सिर्फ साँप ही नहीं बल्कि सर्पवंश के मनुष्य भी शामिल हैं. उनको नागा कहा जाता है. उन्होंने इस राष्ट्र की संस्कृति और दूसरी कई संस्कृतियों को सवांरने का काम किया है. ऐसा माना गया है कि साँप की बोधशक्ति इतनी तेज होती है कि जिन पहलुओं को जानने के लिए इंसान बेचैन और बेताब रहता है, साँप उनको बड़ी आसानी से जान लेता है.

महाराष्ट्र और कर्नाटक के कुछ भागों में नाग देवता के स्थायी मंदिर है जहां उनकी विशेष पूजा काफी धूमधाम से की जाती है. यह दिन सपेरों के लिए भी विशेष महत्व का होता है. मोहनजोदड़ो, हड़प्पा व सिंधुघाटी की सभ्यता के अवशेष साक्षी हैं कि साँपों के पूजन की परंपरा आदिकाल से प्रचलित है. सही मायनों में नागपंचमी का त्यौहार हमें नागों के संरक्षण की प्रेरणा देता है. पर्यावरण की रक्षा और वनसंपदा के संवर्धन में हर जीव-जन्तु की अपनी भूमिका तथा योगदान है, फिर सर्प तो लोक आस्था में भी मौजूद हैं. लेकिन अब भारतीय संस्कृति में भी पूजनीय नागों को व्यापारिक लाभ के लिए मारा और बेचा जाता है. साँपों की खाल, जहर और अन्य उत्पाद अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में काफी महंगे बिकते हैं तथा इनकी मांग भी काफी है. यही वजह भी है कि साँपों को अंधाधुंध मारा जाता है. वन विभाग और सरकार की तरफ से साँपों को संरक्षित करने के कई उपाय तो किए जा रहे हैं लेकिन साँपों के इलाके में मानवों की चहल पहल ने इन शांत जीवों को उग्र होने पर विवश कर दिया है.

मो. जावेद अर्शद

क्षे. का., समस्तीपुर

आइए, रेस्तराँ चलें...

मैंने आज अहमदाबाद के एक ऑफ बीट रेस्तराँ में चाय पी और मुझे लगा कि मैंने जो अहसास पाया है उसे आप सबके साथ साझा करूं और पता लगाऊं कि आप उस रेस्तराँ के बारे में क्या सोचते हैं?

भारत देश अद्भुत स्थानों, परंपराओं और आश्चर्यजनक विधाओं से भरपूर है. यहां की संस्कृति का मूल आधार है धर्म और धर्म की मान्यताएं. आजादी के उपरांत भारत ने एक धर्मनिरपेक्ष देश के रूप में स्वयं को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया है. यहां सभी धर्मों को सम्मान दिया जाता है, किसी भी धर्म के अनुयायियों को बिना किसी अन्य धर्म की निंदा या अपमान किये स्वयं को विकसित करने, सम्मान से जीवनयापन करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है और ऐसा सौहार्द्र विश्व में आपको कहीं भी नहीं दिखेगा.

"न्यू लक्की रेस्तराँ'', जी हां, लाल दरवाजा अहमदाबाद में स्थित एक प्रसिद्ध रेस्तराँ. आप सोचते होंगे कि इसमें आश्चर्य की क्या बात है? जी हां कुछ नहीं, यह एक रेस्तराँ है जहां अहमदाबाद के अमीर, गरीब सभी लोग खान-पान के लिए आते जाते हैं. यह अहमदाबाद का बहुत प्रसिद्ध रेस्तराँ है.

आइए, हम इसके संबंध में कुछ तथ्यों को आपके समक्ष रखते हैं. अहमदाबाद के लाल दरवाजा की परिधि का अधिकांश स्थान कभी एक कब्रस्तान था, वहीं अहमदाबाद में एक रेस्तराँ चला करता था. यह रेस्तराँ उसी कब्रस्तान वाली जमीन पर बना है, रेस्तराँ के मालिक ने देखा कि उसके कारोबार को कभी कोई परेशानी नहीं आई तो रेस्तराँ के मालिक के मन में अपने ग्राहकों को एक अनोखा एहसास करवाने का ख्याल आया, जिसके लिये शुरूआत में तो सभी लोगों ने उनके विचार को अवश्य नकारा होगा, परंतु अपना मन बना चुके उस व्यक्ति ने वह कर दिखाया जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था.

आइए, मैं आपको उस रेस्तराँ के मालिक 'श्री कृष्णन कुट्टी' से मिलवाता हूँ.

अहमदाबाद के जीवराय में रहने वाले श्री कृष्णन कुट्टी, केरल के रहने वाले हैं और सन 1950 से अहमदाबाद में रहने आ गये थे. परिवार में पत्नी एवं एक बेटे एवं दो बेटियां हैं. प्रारंभ से ही लाल दरवाजा के पास कब्रस्तान की जमीन पर रेस्तराँ, इनका कारोबारी स्थान रहा है, जो पिछले लगभग 65 वर्षों से चल रहा है और यह रेस्तराँ अपनी अनोखी परंपरा का स्वामी भी है.

श्री कुट्टी चाहते तो बुलडोजर चलवाकर जमीन से उन कब्रों को हटवा सकते थे परंतु उन्होंने इसके स्थान पर उन कब्रों में दफ्न मृत व्यक्तियों को सम्मान देने का विचार किया और उसके लिए अपने रेस्तराँ के ले-आउट को ही बदल दिया. श्री कुट्टी ने निर्णय लिया कि रेस्तराँ के साथ-साथ कब्रस्तान में दफन मृत शरीरों की कब्रें भी यहीं रहेंगी.

चूंकि रेस्तराँ पहले से ही श्री कुट्टी के लिए भाग्यशाली रहा है, इसलिए उन्होंने इसे 'न्यू लकी रेस्तराँ' नाम दिया, बकौल उनके इस रेस्तराँ में आने वाले उनके सभी ग्राहकों के लिये भी यह रेस्तराँ लकी ही सिद्ध होगा. पूर्व में इस रेस्तराँ में चाय और बन मस्का ही सर्व किया जाता था जो आज भी सर्व किया जाता है और नये बने परिसर में हर प्रकार के भोजन को भी सर्व किया जाता है जिनमें गुजराती, दक्षिण भारतीय, राजस्थानी और पंजाबी प्रमुख हैं.

श्री कुट्टी ने अपने रेस्तराँ के एरिया में आने वाली लगभग इक्कीस कब्रों को ठीक कराया और उनकी चारों ओर लोहे की छड़ों की चार दिवारी बनवायी ताकि रेस्तराँ में आने वाले के पाँव कब्रों से नहीं टकरायें. इन कब्रों के चारों ओर ग्राहकों के लिए टेबल कुर्सियां बिछाई

लकी रेस्टोरेंट के बाहर का दृश्य

लकी रेस्टोरेंट के अंदर का दृश्य

एम एफ हुसैन की कृति

जाती हैं ताकि ग्राहक आराम के साथ वहां चाय, नाश्ता, खाना इत्यादि का सेवन कर सकें.

राजीव नायर, श्री कृष्णन कुट्टी के सुपुत्र, ने बताया कि प्रतिदिन प्रात: जब भी रेस्तराँ का शटर उठाया जाता है सबसे पहले हम सभी कर्मचारियों सहित रेस्तराँ के साथ सभी कब्रों को साफ जल से धोते हैं और उसके बाद उन पर चादरें चढ़ाई जाती हैं तथा साथ ही साथ ताजे फूल भी चढ़ाए जाते हैं. इस प्रकार से रेस्तराँ के कारोबारी दिन का प्रारंभ पूजा अर्चना के साथ होता है. पिछले 65 वर्षों से भी अधिक का समय बीतने पर भी उन्हें कभी किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं आई है. बल्कि अहमदाबाद में प्रत्येक जाति एवं धर्म के लोग इस रेस्तराँ में जाते हैं और जलपान करते हैं. साथ ही मृत शरीरों की कब्रों के बीच व्यक्त न किये जाने वाले उस अहसास को जीते हैं जो अपने आप में अकल्पनीय है.

आज जब जीते जी इंसान धर्मों को आपस में लड़ाने पर जुटे हुए हैं वहीं एक केरलवासी अहमदाबाद में दूजे धर्म के मृत व्यक्तियों की कब्रों को सहेज कर रखे हुए है जो अकल्पनीय और एक धर्मनिरपेक्ष भावना का मजबूत और सच्चा उदाहरण है.

लकी रेस्तराँ के एक स्थाई ग्राहक रहे हैं, विश्व के जाने माने पेंटर एम एफ हुसैन. हुसैन कहा करते थे कि वो जब भी अहमदाबाद आते हैं लकी रेस्तराँ आकर चाय जरूर पीते हैं क्योंकि कब्रों के बीच उन्हें 'जीवन और मृत्यु' का एक अकल्पनीय अहसास होता है. हुसैन ने अपनी एक पेंटिंग भी लकी रेस्तराँ को भेंट की थी जो आज भी वहां शोभायमान है और रेस्तराँ के लिए गर्व की बात है.

हमने श्री राजीव से पूछा कि क्या कभी इन कब्रों में दफन मृत व्यक्तियों के वारिसों ने कोई एतराज तो नहीं किया या जिस प्रकार से पीरों की कब्रों पर उर्स किये जाते हैं, क्या कभी यहां भी कोई उर्स होता है....? श्री राजीव ने हमें बताया कि आज तक कभी किसी ने इन कब्रों के बारे में कोई एतराज नहीं किया है बल्कि यहां आने वाला प्रत्येक ग्राहक बिना किसी डर या दहशत से यहां चाय, भोजन का आनंद उठाता है. हमने भी देखा कि रेस्तराँ खचाखच भरा रहता है और वेटर्स / रों को तो खड़े रहने का समय ही नहीं मिल पाता है. प्रात: 5 बजे से रात्रि 1 बजे तक निरंतर रूप से चलने वाले इस रेस्तराँ के बारे में राजीव जी ने बताया कि मुहर्रम के समय दो दिनों के लिए यह रेस्तराँ बंद रहता है और अगस्त / सितंबर माह में मुस्लिम तिथि के अनुसार विशेष कर दोपहर बाद नये रेस्तराँ को बंद कर दिया जाता है और यहां नमाज पढ़ी जाती है और उर्स के रूप में कव्वालियां भी गायी जाती हैं. हां, यह सब आम जनता के लिये नहीं होता है. इसमें केवल रेस्तराँ के मालिक एवं कर्मचारी और उनके परिवार वाले शरीक होते हैं.

आप और हम में कितने ऐसे लोग हैं जो रेस्तराँ के इस असाधारण प्रयोग को आसानी से आत्मसात कर लेंगे........... मुश्किल है......बहुत मुश्किल....शायद कोई नहीं........

हमने जब श्री कुट्टी से इन कब्रों के इतिहास के संबंध में पूछा तो उन्होंने कहा कि इसके बारे में उन्हें ज्यादा जानकारी नहीं है कि ये कब्रें कब की हैं और किनकी हैं. परंतु ऐसा सुना है कि ये कब्रें करीब सोलहवीं शताब्दी की हैं और ये मुस्लिम पीरों से संबंधित हैं.

श्री कुट्टी के अनुसार इन कब्रों के प्रति उनकी श्रद्धा ने उनके कारोबार को चार चांद लगाये हैं. उनके ग्राहकों ने भी कभी इस परंपरा पर कोई एतराज नहीं जताया बल्कि वो भी यहां आते है और बेफिक्र और बेझिझक रेस्तराँ के इस अनोखे वातावरण का आनंद लेते हैं. मुझे यकीन है कि यहां आने से प्रत्येक ग्राहक के मन में भी इन कब्रों के प्रति भय या डर के स्थान पर श्रद्धा एवं सम्मान की भावना का उदय होता होगा. किसी जीवित व्यक्ति से हम रूबरू होकर वार्ता करते हैं, लड़ते हैं, झगड़ते हैं परंतु भय नहीं रखते परंतु मृत व्यक्ति हमारे सामने न होते हुए भी हमारे मन में भय का अहसास होता है, जोकि मन की एक अवस्था है. मैं तो लकी रेस्तराँ अवश्य जाऊंगा..... चाय पीने. क्या आप भी चलेंगे मेरे साथ ...चलेंगे ना.......?

प्रदीप सिंह

क्षे.का., अहमदाबाद

करणीमाता मंदिर, राजस्थान

राजस्थान के बीकानेर जिले से 30 किलोमीटर दूर देशनोक स्थित करणी माता का मंदिर हिन्दू धर्म का एक प्रसिद्ध मंदिर है, जिसे 'चूहों का मंदिर' भी कहते हैं. इस मंदिर का निर्माण बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने 15 वीं शताब्दी में करवाया था.

इस मंदिर में मुख्यत: काले चूहे पाए जाते हैं जबकि कुछ मात्रा में सफ़ेद चूहे भी पाए जाते हैं जिनका दिखना श्रद्धालुओं के लिए शुभ माना जाता है और माना जाता है कि इनके दिखने से मन चाही मुराद पूरी हो जाती है. इस मंदिर को 'चूहों का काबा' भी कहते हैं. इस प्रांगण में चूहों की अत्यधिक संख्या के कारण श्रद्धालु अपने कदम बड़े संभाल कर रखते हैं क्योंकि पैरों से दबकर चूहे का मर जाना अशुभ माना जाता है. सुबह और सायंकालीन आरती के समय चूहों की चहल पहल देखते ही बनती है.

एक मान्यता के अनुसार करणी माता के सौतेले बेटे की कुएं में गिरने से मृत्यु हो गयी थी, पर माँ करणी ने यमराज से बेटे को जीवित करने की मांग की और उनके आग्रह पर उनके पुत्र को यमराज ने जीवन दान तो दिया लेकिन चूहे के रूप में और तभी से यह माना जाता है कि करणी माता के वंशज मृत्युपर्यंत चूहे के रूप में जन्म लेते हैं और मंदिर में निवास करते हैं.

मंदिर प्रांगण की बनावट की बात करें तो मंदिर के मुख्य द्वार पर संगमरमर की नक्काशी, चाँदी के द्वार, सोने का छत्र चूहों के प्रसाद के लिए चाँदी की परत देखने लायक है. इस मंदिर की स्थापत्य शैली मुगल वास्तुकला एवं राजपूती संस्कृति से प्रेरित है. संगमरमर से बने इस भवन की भव्यता देखने लायक है.

इस मंदिर के बारें में मान्यता है कि करणी माता माँ जगदंबा की अवतार थीं. जिस स्थान पर यह मंदिर है, वहाँ माँ अपने इष्ट देव की पूजा करती थीं और उनकी इच्छानुसार ही इस गुफ़ा में उनकी मूर्ति की स्थापना की गई.

माँ करणी का जन्म विक्रम संवत 1444 अश्विनी शुक्ल सप्तमी 20 सितंबर, 1387 ई. को सूआप में मेहाजी किनिया चारण गौत्र के घर में हुआ था.

माँ करणी एक ग्रामीण कन्या थी, जिनका बचपन में नाम रिघुबाई था, जिनके बारे में कई चमत्कारी घटनाएं जुड़ी हुयी हैं. इतिहासकार बताते हैं कि माँ करणी संवत 1595 चैत्र शुक्ल नवमी को दिव्य ज्योति में अंतर्धान हो गयीं थी.

करणी माता ने पूगल के राव शेखा को मुल्तान के कारागृह से मुक्त करवा कर उसकी पुत्री रंगकंवर का विवाह राव बीका से संपन्न करवाया था. सन 1485 में राव बीका के आग्रह पर बीकानेर के किले की नींव भी करणी माता के द्वारा रखी गयी थी.

वर्ष में दो बार नवरात्रि में इस मंदिर में विशाल मेला लगता है. तब भारी संख्या में श्रद्धालु दूर-दूर से यहां आते हैं. मंदिर पहुँचने के लिए बीकानेर से वाहन के जरिए एवं देशनोक रेलवे स्टेशन से भी पहुँचा जा सकता है.

हेमन्त कुमार लखेरा
क्षे.का., जयपुर

भानगढ़ का किला

आप सब ने भानगढ़ किले के बारे में सुना होगा जिसे 'भूतों का किला' भी कहा जाता है. भानगढ़ का किला राजस्थान राज्य के अलवर जिले में स्थित है. भानगढ़ के पास कुछ ही दूरी पर विश्व प्रसिद्ध सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान है.

अब हम थोड़ा सा भानगढ़ किले की संरचना के बारे में जानते हैं. भानगढ़ में कई देवी देवताओं के मंदिर हैं. इसके मुख्य द्वार पर हनुमान जी का मंदिर है और उसके बाद वहाँ का बाजार शुरू होता है. इस किले के मंदिर की दीवारों पर बहुत ही बढ़िया कारीगरी की गई है, जिससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि महल कितना खूबसूरत होगा.

भानगढ़ किले को आमेर के राजा भगवंत दास ने वर्ष 1573 में बनवाया था और यह उसके 300 वर्षों तक आबाद रहा. उसके बाद कई राजा आए, युद्ध किए और वीरगति को प्राप्त हुए. अंत में जयपुर के महाराजा सवाई सिंह ने दुश्मनों को हराकर भानगढ़ किले पर कब्जा किया और माधो सिंह के वंशजों को गद्दी दे दी.

कहा जाता है कि भानगढ़ की राजकुमारी रत्नावती बहुत खूबसूरत थी जिसके चर्चे पूरे राज्य में मशहूर थे. राजकुमारी रत्नावती के लिए कई राज्यों से विवाह के प्रस्ताव आ रहे थे. उसी दौरान राजकुमारी अपनी सखियों के साथ किले के बाहर बाजार में निकली और एक इत्र की दुकान पर पहुंची. उसी समय बाजार में सिंधिया सेवड़ा नाम का व्यक्ति राजकुमारी की खूबसूरती का दिवाना हो गया और उससे प्रेम करने लगा. सिंधिया सेवड़ा काला जादू का महारथी था और राजकुमारी को हासिल करना चाहता था.

जिस दुकान से राजकुमारी के लिए इत्र जाता था उसने उस दुकान पर जाकर रत्नावती को भेजे जाने वाले इत्र पर काला जादू कर उस पर वशीकरण मंत्र का प्रयोग किया. जब राजकुमारी उस इत्र की बोतल को उठा रही थी, वह इत्र की बोतल पत्थर पर जा गिरी और सारा इत्र पत्थर पर जा गिरा. उसके बाद वह पत्थर सिंधिया के पीछे चल पड़ा और उसने तांत्रिक को कुचल दिया जिससे उसकी मौत हो गई .

मरने से पहले तांत्रिक ने श्राप दिया कि इस किले में रहने वाले सभी लोग जल्दी मर जाएंगे और वो दोबारा जन्म नहीं ले पाएंगे और ता उम्र उनकी आत्माएं भटकती रहेंगी.

संयोगवश, कुछ दिनों के बाद भानगढ़ और अजबगढ़ के बीच युद्ध हुआ जिससे किले में रहने वाले सभी लोग मारे गए. यहां तक कि राजकुमारी भी उस श्राप से न बच सकी और उनकी भी मौत हो गई. इस कत्लेआम के बाद से आज भी उन लोगों की आत्माएं किले में भटकती हैं, ऐसा माना जाता है.

कहा जाता है कि भानगढ़ किले में सूरज ढलने के बाद वहां आत्माएं जाग जाती हैं और वे रूहें आज भी किले में भटकती रहती हैं. इस सच्चाई का पता लगाने के लिए भारत सरकार ने अर्ध-सैनिक बलों की एक टुकड़ी यहां लगाई थी. लेकिन वो भी असफल रही. कई सैनिकों ने रूहों के इस इलाके में होने की पुष्टि की थीं.

इस किले में आज भी जब आप अकेले होंगे तो तलवारों की टंकार और लोगों की चीख़ों को महसूस कर सकते हैं. कहा जाता है कि इसके भीतरी कमरों में महिलाओं की रोने या फिर चूड़ियों के खनकने की आवाजें साफ सुनाई देती हैं. किले के पिछले हिस्से में जहां एक छोटा सा दरवाजा है, उस दरवाजे के पास बहुत अंधेरा रहता है. कई बार वहां किसी के बात करने या एक विशेष प्रकार की गंध को महसूस किया जाता है. वहीं किले में शाम के वक्त बहुत ही सन्नाटा रहता है और अचानक ही किसी के चीखने की भयानक आवाज इस किले में गूँजती है.

इस किले की देख-रेख भारत सरकार की ओर से की जा रही है. किले के चारों तरफ एएसआय (ASI) की टीम मौजूद रहती है. एएसआय (ASI) का सख्त आदेश है कि शाम सूर्यास्त के बाद इस इलाके में किसी भी व्यक्ति को रुकने की मनाही है. क्योंकि कहा जाता है कि इस किले में सूर्यास्त के बाद जो भी गया है, वह वापस नहीं आया है.

धीरज अग्रवाल
क्षे.का., ग्वालियर

चुम्बकीय पहाड़ी, लेह लद्दाख

लद्दाख एक उच्च अक्षांशीय मरुस्थल है क्योंकि यहां हिमालय मॉनसून को रोक देता है. लद्दाख उत्तर-पश्चिम हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र में आता है. यहां जलवायु अत्यंत शुष्क एवं कठोर है एवं औसत तापमान 5 डिग्री है. जम्मू कश्मीर राज्य में लद्दाख एक ऊंचा पठार है जिसका अधिकतम हिस्सा 9800 फीट से ऊंचा है. लद्दाख हिमालय और काराकोरम पर्वत श्रृंखला और सिन्धु नदी की ऊपरी घाटी पर फैला है.

दुनियाभर में ऐसी कई रहस्यमयी जगहें हैं, जिनसे जुड़ा सच वैज्ञानिक भी तलाश रहे हैं. लेह-लद्दाख में ऐसी ही एक खास जगह है, जिसे 'चुम्बकीय पहाड़ी' (मैग्नेटिक हिल) के नाम से जाना जाता है. गुरुत्वाकर्षण के नियम के अनुसार यदि हम किसी वस्तु को ढलान पर छोड़ दें तो वह नीचे की तरफ लुढ़केगी लेकिन चुम्बकीय पहाड़ी पर गुरुत्वाकर्षण का नियम फेल हो जाता है. समुद्र तल से 11 हजार फीट की ऊंचाई पर यह एक ऐसा पहाड़ है जो धातु को अपनी ओर खींचता है और उससे बने वाहनों को भी, किसी चमत्कार से कम नहीं है. इस जगह की खासियत यह है कि यहां पहुंचने वाली गाड़ियां बिना पेट्रोल और धक्का मारे ही 4 किलोमीटर तक चल सकती हैं. 20 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से वे पहाड़ी पर चढ़ती है और ड्राइवर को केवल गाड़ी की स्टेरिंग संभालनी होती है. रोड की बायीं ओर पीले रंग के बोर्ड पर अंग्रेजी में लिखा है- 'The Phenomenon that defies gravity. Park your vehicle in the box marked with paint on the road & experience the wonder.' (एक ऐसी घटना जो गुरुत्वाकर्षण को मात दे. रोड पर बनाये बॉक्स पर अपनी गाड़ी रखिये, जादू का अनुभव कीजिये.) सड़क पर एक बॉक्स पेंट किया गया है जिसके अंदर लोग अपनी कार या बाइक को न्यूट्रल पर रखकर आजमाते हैं. बॉक्स की एक ओर ढलान है, जबकि दूसरी ओर चढ़ाई. अगर आप गाड़ी को न्यूट्रल में रखकर खड़ी कर दे तो गाड़ी नीचे की ओर नहीं बल्कि पहाड़ी के ऊपर की ओर चल पड़ती है. इस स्थान की एक खास बात यह है कि गाड़ी जब पहाड़ी से उतरती है तो इसकी स्पीड नार्मल की अपेक्षा 3 गुनी हो जाती है. यानी आप गाड़ी को न्यूट्रल करके उतर रहे हैं तो गाड़ी अपने आप 30 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से चलेगी.

जमीन पर दौड़ने वाली गाड़ियां ही नहीं, बल्कि हवा में उड़ने वाले विमान भी इस चुम्बकीय प्रभाव से खुद को नहीं बचा पाते. मैग्नेटिक हिल के ऊपर से विमान उड़ा चुके पायलट्स का दावा है कि यहां से गुजरते वक्त विमान में हल्के झटके महसूस होते हैं. यही वजह है कि पायलट इस क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले ही विमान की रफ्तार बढ़ा लेते हैं ताकि प्लेन को पहाड़ के चुम्बकीय प्रभाव से बचाया जा सके. वैज्ञानिकों का मानना है कि गुरुद्वारा पठार साहिब के निकट स्थित पहाड़ी में गज़ब की चुम्बकीय शक्ति है. इस पहाड़ी की चुम्बकीय शक्ति से आसमान में उड़ने वाले जहाज भी नहीं बच पाते हैं. कुछ लोग इसे गुरुत्वाकर्षण शक्ति कहते हैं तो कुछ इसे सिर्फ एक भ्रम मानते हैं लेकिन अब तक इस पहाड़ी का रहस्य सुलझाया नहीं जा सका है.

बेंगलुरु के इंजीनियरिंग के कुछ छात्र इस रहस्यमयी ताकत का पता लगाने गए थे. उन्होंने पाया कि मैग्नेटिक हिल की जियोग्राफिक और एल्टीट्यूड पोजीशन कुछ ऐसी है कि गाड़ियां अपने आप ही ऊपर की ओर बढ़ती जाती हैं. हालांकि लोग इसे ग्रैविटी का चमत्कार मानते हैं. वे इस बात की पुष्टि तो नहीं करते लेकिन उनका मानना है कि यह एक तरह का साइकॉलॉजिकल इल्यूशन है, जो लोगों की नजरों को धोखा देता है.

वैज्ञानिक इस जगह के बारे में कई कारण देते हैं. उनके अनुसार इस पहाड़ी के आसपास की क्षेत्रीय संरचना 'दृष्टि भ्रम' जैसा माहौल पैदा करती है, जिससे नीचे की तरफ लुढ़कती हुई वस्तु ऊपर की तरफ चढ़ती दिखाई देती है. दूसरा कारण यह है कि दृष्टि भ्रम की स्थिति में कोई चीज अपेक्षाकृत छोटी या बड़ी दिखाई देती है. इनके अलावा एक कारण यह भी माना जाता है कि पहाड़ी क्षेत्रों में सड़कों का क्षैतिज तल स्पष्ट नहीं है. वैज्ञानिकों के मुताबिक इस हिल में गज़ब की चुम्बकीय ताकत है या ग्रेविटी की वजह से यह सब होता है, लेकिन यह ग्रैविटी कहां से आती है इसका पता अब तक नहीं लगाया जा सका है. फिलहाल असली कारण जो भी हो आम लोगों के बीच इसे चुम्बकीय पहाड़ी के रूप में मान्यता मिली है.

संतोष कुमार राम
क्षे.का., रायपुर

प्रकृति का चमत्कार - काल भैरव

उज्जैन, भारत के मध्य प्रदेश राज्य का एक प्रमुख शहर है जो क्षिप्रा नदी के किनारे बसा है. यह एक अत्यन्त प्राचीन शहर है. यह शहर विक्रमादित्य राजा के राज्य की राजधानी थी. इसे 'कालिदास की नगरी' के नाम से भी जाना जाता है. यहाँ हर 12 वर्षों में सिंहस्थ कुंभ मेला लगता है. भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में एक 'महाकाल' इसी नगरी में स्थित है.

उज्जैन को मंदिरों का नगर भी कहा जाता है. हर गली में कई मंदिर आपको मिल जायेंगे. एक कहावत के अनुसार अगर एक युवा व्यक्ति रोज़ एक मंदिर के दर्शन करने लगे और जीवनपर्यंत वह इसी क्रम में दर्शन करता रहे तो भी मंदिर खत्म नहीं होंगे.

इन्हीं मंदिरों में से एक विशेष मंदिर का ज़िक्र हम यहां कर रहे हैं, वह है काल भैरव का मंदिर! यह मंदिर उज्जैन में प्रवाहित क्षिप्रा नदी के तट पर उज्जैन शहर से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर भैरव-गढ़ में स्थित है. इसकी बसावट एक उपनगर के समान है. कपड़े की छपाई वाले अधिकांशतः लोग यहाँ रहते हैं. इस स्थान के देव हैं 'भैरव'.

यह बस्ती एक टीले पर बसी हुई है, इस कारण भी इसे भैरव-गढ़ के नाम से जाना जाता है. इस टीले के पश्चिमोत्तर दिशा के अधिकांश भाग में शहर पनाह (पत्थर की ऊंची दीवार) बनी हुई है. इसमें अंदर ही क्षिप्रा नदी के उत्तर तट पर काल भैरव का मुख्य मंदिर है. मंदिर अति प्राचीन है. पुराणों में अष्ट भैरवों का उल्लेख आता है, उनमें से यह प्रमुख है. यह मंदिर राजा भद्रसेन द्वारा बनवाया गया था. इसी स्थान के पास बायीं ओर स्थित 300 हाथ चौड़े और 30 हाथ ऊँचे महल में सम्राट अशोक द्वारा उज्जैन का जेल-खाना बनवाया गया था. सम्राट अशोक के काल में इसे नरक या नरकागार भी कहा जाता था. आजकल यहां उज्जैन का बड़ा जेल बना हुआ है. जेल के कैदियों द्वारा छपाई कार्य से बनाई गयीं भैरूगढ़ प्रिंट की चादरें काफी प्रसिद्ध हैं.

मंदिर के नीचे क्षिप्रा नदी का सुन्दर और पुख्ता तट बना हुआ है. मंदिर का मुख्य द्वार बहुत विशाल एवं भव्य बना हुआ है. द्वार के अंदर प्रवेश करते ही एक विशाल दीप स्तम्भ दिखाई देता है. इसके पश्चात काल भैरव का मंदिर आता है. यहाँ प्रसिद्ध तांत्रिक गोपीनाथ, राम-अवधेश, मौनी बाबा, सुधाकर एवं केलकर साहब काल भैरव की मूर्ति अत्यन्त भव्य एवं प्रभावोत्पादक हैं.

काल भैरव की मूर्ति को मदिरा का प्रसाद चढ़ाया जाता है. अचरच की बात यह है कि मूर्ति के मुख में कोई छिद्र नहीं है मदिरा पान कराने के पूर्व मुख्य पुजारी अनेक विचित्र भंगिमाएं करते हैं, जिन्हें देखने से ऐसा लगता है जैसे वे देव से विनती कर रहे हों, कि वे मदिरा पान कर लें.

मंदिर के बाहर देसी मदिरा की कई दुकानें हैं, जहाँ से प्रसाद के लिये भक्तगण बोतल ले जाते हैं. मदिरा का रंग सामान्यतः लाल होता है. पुजारी विनती के अपने चक्र के उपरांत स्टील की एक गहरी प्लेट में भक्त द्वारा लायी गयी उस बोतल से कुछ शराब उस स्टील की प्लेट में डालते हैं, और उसे आदर सहित काल भैरव जी की मूर्ति के मुख से लगाते हैं, देखते ही देखते वह प्लेट खाली हो जाती है.

तदुपरांत पुजारी जी उस प्लेट को, जो आधी से अधिक खाली हो गयी है, मदिरा की बोतल से पुनः पूरा भर देते हैं और उसे फिर से भैरव जी के मुँह से लगा देते हैं. प्लेट फिर से आधी से अधिक खाली हो जाती है. इस आधी प्लेट को पुजारी जी भैरव जी का प्रसाद मान कर मदिरा की बोतल में डाल देते हैं. भक्तगण इसमें से कुछ प्रसाद ग्रहण कर लेते हैं और बाकी अपने साथ ले जाते हैं, ताकि अन्य भक्तगणों को जो उनके साथ नहीं आ पाये, उन्हें दिया जा सके.

काल भैरवजी जो मदिरा ग्रहण करते हैं, वह जाती कहाँ है? यह जानने के लिये एक जिज्ञासु ने रात में गुप्त रूप से मंदिर के पीछे बहुत दूर तक खुदाई की, मगर उसे कोई नली/नाली/ पाइप/टंकी या कोई अन्य ऐसा उपकरण प्राप्त नहीं हुआ, जिससे यह सिद्ध किया जा सके कि यह एक चमत्कार नहीं बल्कि मानव निर्मित एक साजिश है.

यह वास्तव में एक अचरज की बात है कि काल भैरव जी मदिरापान करते हैं. यदि हाँ तो कैसे? यदि नहीं तो वह मदिरा जाती कहाँ है? इन प्रश्नों का उत्तर मानव मस्तिष्क से देना संभव प्रतीत नहीं होता और हृदय अचरज से प्रकृति माता के प्रति नतमस्तक हो जाता है.

राहुल गुप्ता
भोपाल (मुख्य) शाखा, भोपाल

गुरु डोंगमार लेक, सिक्किम

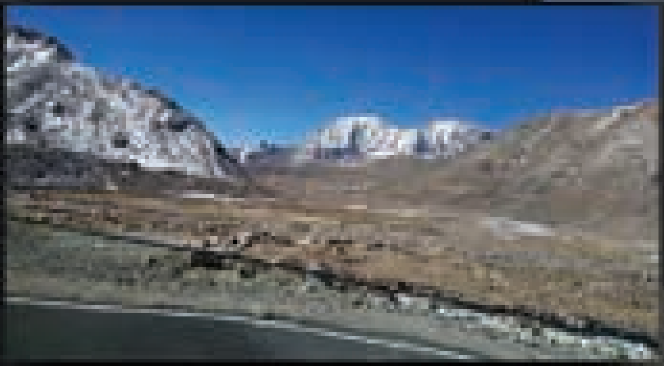

विश्व के सबसे ऊंचाई पर जितने भी लेक हैं, उनमें से एक महत्वपूर्ण लेक है, गुरु डोंगमार लेक. यह 17800 फुट (54300 मीटर) की ऊंचाई पर स्थित भारत का इकलौता लेक है, जिसे बुद्धिस्ट, हिन्दू और सिखों द्वारा बहुत पवित्र माना जाता है. यहाँ पहुँचने के लिए लाचेन से थांगु होकर जाना पड़ता है. ऊबड़-खाबड़ और बर्फ के साथ यह भूभाग अटा होता है तथा यहाँ हवा में ऑक्सीजन की कमी भी रहती है.

कहा जाता है कि पहले यह लेक सालभर के लिए बर्फ से ढंकी हुई रहती थी. वर्ष भर बर्फ से ढंकी हुई होने के कारण लोगों को इस लेक का पानी पीने के लिए नहीं मिलता था. तब तिब्बत से भारत लौटनेवाले गुरु पद्मसंभव को यहाँ के लोगों ने अपनी समस्या बतायी. गुरु पद्मसंभव जी ने लेक के कुछ हिस्से पर अपने हाथ रखे, जिससे वह उतना हिस्सा ठंड में भी नहीं जमता है और लोगों को पीने का पानी मिल जाता है. इस पवित्र पानी को लोग यहाँ से लौटते समय साथ ले जाते हैं. गुरु डोंगमार लेक की सुंदरता और इतनी ऊंचाई पर मौजूदगी, दोनों ही अद्भुतता की मिसाल है.

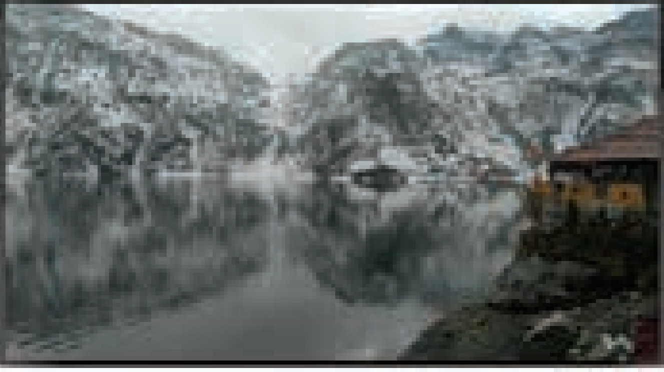

डॉ. सुलभा कोरे
यूनियन धारा

कोणार्क सूर्य मंदिर - अद्भुत शिल्प

जब भारत भ्रमण की बात आती है तो दर्शनीय स्थलों की गिनती में ओडिशा के कोणार्क सूर्य मंदिर का विचार अनायास ही मन में आ जाता है. बेहद खूबसूरत और रहस्यमयी कोणार्क का सूर्य मंदिर पुरी के उत्तर पूर्वी किनारे पर समुद्र तट के करीब है. यह भारतवर्ष के चुनिन्दा सूर्य मन्दिरों में से एक है. सन 1984 में इस मंदिर को यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज में भी शामिल किया गया और साथ ही यह मंदिर भारत के 7 आश्चर्यो में से एक है. कोणार्क शब्द, कोण और अर्क शब्दों के मेल से बना है. अर्क का अर्थ होता है सूर्य जबकि कोण से अभिप्राय कोने या किनारे से रहा होगा. कोणार्क मंदिर को पहले समुद्र के किनारे बनाया जाना था लेकिन समंदर धीरे-धीरे कम होता गया और मंदिर भी समंदर के किनारे से थोड़ा दूर हो गया. कोणार्क सूर्य-मन्दिर का निर्माण लाल रंग के बलुआ पत्थरों तथा काले ग्रेनाइट पत्थरों से हुआ है. मंदिर के गहरे रंग के लिये इसे 'काला पैगोडा' कहा जाता है. शिल्पकला के हिसाब से यह अपने आप में एक अद्वितीय कृति है. इसके जीवंत शिल्प को देख कर महान कवि व नाटककार रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इस मन्दिर के बारे में लिखा है:- 'कोणार्क, जहां पत्थरों की भाषा मनुष्य की भाषा से श्रेष्ठतर है'.

इस मंदिर के निर्माण के साथ ओडिशा के स्थानीय लोगों द्वारा सुनाई जाने वाली अनेक किंवदंतियाँ जुड़ी हुई हैं. इस मंदिर का निर्माण 13 वी शताब्दी में गंग वंश के महाराजा नरसिंहदेव ने किया था. यहाँ पर स्थानीय लोग प्रस्तुत सूर्य-भगवान को बिरंचि-नारायण कहते हैं. कहते हैं कि मंदिर के अंदर भगवान सूर्य की प्रतिमा हवा में झूलती रहती है. इसके लिए मंदिर शीर्ष और बेसमेंट पर चुंबक लगे हुए हैं और मूर्ति के बीचों-बीच एक हीरा लगा हुआ है जिससे सूर्य की किरणें रिफ्लेक्ट होती हैं. यह मंदिर बहुत बड़े रथ के आकार में बना हुआ है, जिसमें कीमती धातुओं के पहिये, खम्भे और दीवारें बनी हैं. मंदिर पूर्व दिशा की ओर झुका होने के कारण पूरे वर्ष सूर्य की पहली किरण मंदिर के मुख्य द्वार पर ही पड़ती है. यहां मंदिर के पहिये धूपघड़ी का काम करते हैं, जिसकी सहायता से हम दिन-रात दोनों ही समय सही समय का पता लगा सकते हैं. मंदिर का मुख्य भाग आज काफी ध्वस्त हुआ है. कलिंग शैली में निर्मित इस मन्दिर स्थल को बारह जोड़ी चक्रों के साथ सात घोड़ों द्वारा खींचते हुये निर्मित किया गया है, जिसमें सूर्य देव को विराजमान दिखाया गया है. परन्तु वर्तमान में सात में से एक ही घोड़ा बचा हुआ है. मन्दिर के आधार को सुन्दरता प्रदान करते ये बारह चक्र साल के बारह महीनों को परिभाषित करते हैं तथा प्रत्येक चक्र आठ आरों से मिल कर बना है, जो एक दिन के आठ पहरों को दर्शाते हैं. मुख्य मन्दिर तीन मंडपों में बना है. इनमें से दो मण्डप ढह चुके हैं, तीसरे मण्डप में जहाँ मूर्ति थी, अंग्रेज़ों ने स्वतंत्रता से पूर्व ही रेत व पत्थर भरवा कर सभी द्वारों को स्थायी रूप से बंद करवा दिया था ताकि यह मन्दिर और क्षतिग्रस्त ना हो. इस मन्दिर में सूर्य भगवान की तीन प्रतिमाएं हैं:

इसके प्रवेश द्वार पर दो सिंह, हाथियों पर आक्रामक होते हुए रक्षा में तत्पर दिखाये गए हैं. दोनों हाथी, एक-एक मानव के ऊपर स्थापित हैं. ये प्रतिमाएं एक ही पत्थर की बनी हैं. ये 28 टन की 8.4 फीट लंबी 4.9 फीट चौड़ी तथा 9.2 फीट ऊंची हैं. मंदिर के दक्षिणी भाग में दो सुसज्जित घोड़े बने हैं, जिन्हें ओडिशा सरकार ने अपने राजचिह्न के रूप में स्वीकार किया है. ये 10 फीट लंबे व 7 फीट चौड़े हैं. यह मंदिर सूर्य देव की भव्य यात्रा को दिखाता है. इसके प्रवेश द्वार पर ही नट मंदिर है. यह वह स्थान है, जहां मंदिर की नर्तकियां, सूर्यदेव को अर्पण करने के लिये नृत्य किया करतीं थीं. मुख्य गर्भ गृह में प्रधान देवता का वास था, किंतु वह अब ध्वस्त हो चुका है. नाट्यशाला अभी पूरी बची है. नट मंदिर एवं भोग मण्डप के कुछ ही भाग ध्वस्त हुए हैं. मंदिर का मुख्य प्रांगण 857 फीट X 540 फीट का है. यह मंदिर पूर्व-पश्चिम दिशा में बना है. मंदिर अब आंशिक रूप से खंडहर में परिवर्तित हो चुका है. यहां की शिल्प कलाकृतियों का एक संग्रह, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के सूर्य मंदिर संग्रहालय में सुरक्षित है. यहां का स्थापत्य अनुपात दोषों से रहित एवं आयाम आश्चर्यचकित करने वाला है. मंदिर का प्रत्येक इंच, अद्वितीय सुंदरता और शोभा वाली शिल्पाकृतियों से परिपूर्ण है. इसके विषय भी मोहक हैं, जो सहस्रों शिल्प आकृतियाँ, भगवानों, देवताओं, गंधर्वों, मानवों, वादकों, प्रेमी युगलों, दरबार की छवियों, शिकार एवं युद्ध के चित्रों से भरी पड़ी हैं. इनके बीच-बीच में पशु-पक्षियों (लगभग दो हज़ार हाथी, केवल मुख्य मंदिर के आधार की पट्टी पर भ्रमण करते हुए) और पौराणिक जीवों के अलावा महीन और पेचीदा बेल

बूटे तथा ज्यामितीय नमूने अलंकृत हैं. ओडिया शिल्पकला की हीरे जैसी उत्कृष्ट गुणवत्ता पूरे परिसर में दिखाई देती है.

यह मंदिर अपनी श्रृंगारिक शिल्पाकृतियों के लिये भी प्रसिद्ध है. इस प्रकार की आकृतियां मुख्यत: द्वारमण्डप के द्वितीय स्तर तक ही सीमित हैं. वहीं मानव, देव, गंधर्व, किन्नर आदि की आकृतियां भी ऐन्द्रिक मुद्राओं में दर्शित हैं. इनकी मुद्राएं श्रृंगारिक हैं और कामसूत्र से ली गईं हैं. इन आकृतियों के विषय को स्पष्ट किंतु अत्यंत कोमलता एवं लय में संजोकर दिखाया गया है. निसंदेह यह ओडिशा की सर्वोत्तम कृति है. इसकी उत्कृष्ट शिल्प-कला, नक्काशी, एवं पशुओं तथा मानव आकृतियों का सटीक प्रदर्शन, इसे अन्य मंदिरों से कहीं बेहतर सिद्ध करता है. इस मंदिर के निर्माण से अनेकों तथ्य और किंवदंतियाँ जुड़ी हुई हैं.

पौराणिक कथा कहती है कि भगवान श्री कृष्ण के पुत्र साम्ब को श्राप से कोढ़ रोग हो गया था. साम्ब ने कोणार्क के मित्रवन में चंद्रभागा नदी के सागर संगम पर बारह वर्षों तक तपस्या कर सूर्य देव को प्रसन्न किया था. सूर्यदेव, जो सभी रोगों के नाशक थे, उनके वरदान से साम्ब के कुष्ठरोग का भी निवारण हो गया. तदुपरान्त साम्ब ने भगवान सूर्य के मन्दिर निर्माण का निश्चय किया. अपने रोग-नाश के उपरांत चंद्रभागा नदी में स्नान करते हुए, उसे सूर्यदेव की एक मूर्ति मिली. यह मूर्ति सूर्यदेव के शरीर के भाग से देवशिल्पी श्री विश्वकर्मा ने बनायी थी. साम्ब ने अपने बनवाये मित्रवन के एक मन्दिर में इस मूर्ति को स्थापित किया, तब से यह स्थान पवित्र माना जाने लगा. किन्तु साक्ष्य और इतिहासकारों के अनुसार गंग वंश के राजा लांगूल नृसिंहदेव ने अपने वंश का वर्चस्व सिद्ध करने हेतु राजसी घोषणा कर इस मंदिर के निर्माण का आदेश दिया. बारह सौ वास्तुकारों और कारीगरों ने बिसु महाराणा के पर्यवेक्षण में अपनी सृजनात्मक प्रतिभा और ऊर्जा से परिपूर्ण कला से बारह वर्षों की अथक मेहनत से इसका निर्माण किया. राजा ने अपने राज्य के बारह वर्षों की कर-प्राप्ति के बराबर का धन व्यय कर दिया था किन्तु मंदिर के निर्माण की पूर्णता दिखायी नहीं दे रही थी. तब राजा ने एक निश्चित तिथि तक कार्य पूर्ण करने का सख्त आदेश जारी कर कहा कि यदि नियत तिथि तक कार्य पूरा नहीं हुआ तो सभी बारह सौ वास्तुकारों के सर, धड़ से अलग कर दिए जाएंगे. बिसु महाराणा स्वयं सर्वश्रेष्ठ वास्तुकार थे किन्तु इस मंदिर के निर्माण के पूरे होने में एक ही बाधा आ रही थी - मंदिर का शिखर निर्माण! बहुत प्रयासों के बाद भी शिखर की केंद्रीय शिला खड़ी नहीं हो पा रही थी. इन असफलताओं तथा राजा की सख्त घोषणा सुनकर सभी कारीगरों में निराशा और खौफ का माहौल था. इसी बीच बिसु महाराणा का 12 वर्षीय पुत्र धर्मपाद जिसे 1 माह का छोड़कर बिसु महाराणा 12 वर्षों से इस मंदिर के काम में तल्लीन थे, अपने पिता से मिलने आया. पुत्र से मिलने की खुशी के साथ बिसु के मन में राजा की घोषणा का खौफ भी था जिसे वह चाह कर भी पुत्र से छिपा नहीं पाये. सभी शिल्पकारों की परेशानी देख कर धर्मपाद ने अब तक के निर्माण का गहन निरीक्षण किया. उसे मंदिर निर्माण का व्यावहारिक ज्ञान नहीं था परन्तु उसने मंदिर स्थापत्य शास्त्रों का पूर्ण अध्ययन किया हुआ था. उसने मंदिर की अंतिम केन्द्रीय शिला को लगाने की समस्या सुलझाने का प्रस्ताव दिया और रात भर में केंद्रीय शिला लगाकर मंदिर का शिखर पूर्ण कर आश्चर्य में डाल दिया. सभी कारीगर इससे बहुत खुश हुए पर यह सोच कर पुन: सभी हताश हो गए कि यदि राजा को पता चल जाएगा कि जो कार्य बारह सौ शिल्पकार बारह वर्षों में नहीं कर पाए वह एक 12 वर्षीय बालक ने एक रात में कर दिखाया तो वह ऐसे भी सभी शिल्पकारों को मार डालेगा. धर्मपाद नें उसी रात मंदिर के शीर्ष से कूद कर आत्महत्या कर ली. अगली सुबह इस विलक्षण प्रतिभावान बालक का शव सागर तट पर मिला. धर्मपाद ने अपनी जाति के हितार्थ अपनी जान दे दी. कहते हैं कि इस मंदिर में उसी समय से पूजा अर्चना बंद हो गई.

इस मंदिर का शिल्प जितना अद्भुत है उतनी ही अद्भुत है इसके निर्माण और ध्वंस से जुड़े तथ्य और किंवदंतियाँ! महत्वपूर्ण वास्तु दोष होने के कारण यह मंदिर अपने निर्माण के बाद शनै शनै ध्वस्त होता गया लेकिन वास्तु दोष से परे इस मंदिर के बारे में एक और बड़ा रहस्य है, इसके शीर्ष का चुंबकीय पत्थर! कहा जाता है कि इस मंदिर के शिखर पर एक चुंबकीय पत्थर लगा था जो केंद्रीय शिला का कार्य कर रहा था. जिससे मंदिर की दीवारों और छत के सभी पत्थर संतुलित रहते थे, इस पत्थर के कारण समुद्र मार्ग के सागरपोत इस ओर खिंचे चले आते थे, साथ ही समुद्र मार्ग से आने वाले पोतों के चुम्बकीय दिशा निरूपण यंत्र सही दिशा नहीं बताते थे. इन्हीं कारणों से अपने समुद्रपोतों को बचाने के लिए मुस्लिम नाविक इस पत्थर को निकाल ले गए और केंद्रीय शिला के हटने से इस मंदिर की सभी दीवारों का संतुलन खो गया और और परिणामस्वरूप वे गिर पड़ी. किन्तु इस घटना का कोई ऐतिहासिक विवरण या तथ्य नहीं मिलता वैसे तो अनेक किवदंतियां है, जिन्हें बताया जाए तो पृष्ठ कम पड़ जाएंगे लेकिन कोणार्क का सूर्य मंदिर अपने अनूठेपन को लेकर आज भी पूरे विश्व में प्रसिद्ध है.

दूर-दूर से लोग इस मंदिर के शिल्प और स्थापत्य कला को देखने आते हैं. लेकिन इस अद्भुत मंदिर के ध्वंस का मूल कारण आज भी रहस्य बना हुआ है.

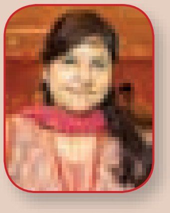

शारदा साव

क्षे.का., दुर्गापुर

साँपों का गाँव - शेटफल

इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत में धर्म का बहुत महत्व है और धर्म के चलते ही यहां देवी देवताओं के साथ-साथ कुछ जीव जंतुओं को भी पूजा जाता है, जिनमें से एक है - साँप. भारत में प्राचीन काल से ही सांपों की पूजा की जाती है. ऐसा माना जाता है कि साँप भगवान शिव का एक रुप है. आमतौर पर लोगों को सांप का नाम सुनते ही 'सांप सूंघ' जाता है लेकिन आपको यह जानकर हैरानी होगी कि भारत में ही एक जगह ऐसी भी है जहां के लोग सांपों को पालते हैं. जी हां, जैसे हम कुत्ता या बिल्ली पालते हैं, ठीक वैसे ही महाराष्ट्र के सोलापुर जिले में स्थित शेटफल नाम के इस गांव में सांप पाले जाते हैं और ये कोई आम प्रजाति के साँप नहीं, बल्कि सांपों में सबसे खतरनाक मानी जाने वाली कोबरा प्रजाति के सांप हैं. हैरानी की बात यह है कि कोबरा प्रजाति के ये साँप यहां के लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते.

शेटफल गांव में सांपों को पालने का तरीका

शेटफल गांव में सांपों के रहने की जगह घरों के अंदर ही बनाई जाती है. घर चाहे पक्का हो या कच्चा, सांपों के रहने की जगह बना ही ली जाती है. हालांकि इस गांव में ज़्यादातर घर कच्चे हैं लेकिन फिर भी हर घर की छत में आपको छेद जरूर मिलेगा क्योंकि इन छेदों में ही सांप रहते हैं. सांपों के रहने के स्थान को देवस्थान कहते हैं. देवस्थान का अर्थ है - वह स्थान जहां भगवान आराम करते हैं.

शेटफल गांव के लोगों में नहीं है कोई डर

आमतौर पर साँप देखने पर आप क्या करते हैं? मदद के लिए चिल्लाते हैं, हैं ना? लेकिन यहां तो एक घर से दूसरे घर में सांप ऐसे घूमते हैं जैसे घर में कोई मेहमान आया हो और खास बात यह है कि शेटफल गांव के लोग अपने इस मेहमान से डरते नहीं. इतना ही नहीं, बड़े तो बड़े, यहां के तो बच्चों के मन में भी सांप को लेकर कोई डर नहीं है. यहां तक कि ये बच्चों के स्कूलों में भी घूमते रहते हैं लेकिन बच्चों के लिए तो जैसे ये किसी का दौरे पर आने जैसा है.

शेटफल गांव में पर्यटकों का लगा रहता हैं तांता

इस विचित्र जगह को देखने के लिए देश भर से लोगों का तांता लगा रहता है. ऐसा साल में एक दो बार नहीं बल्कि हर दिन होता है. जिन लोगों को रोमांचक चीजों की तलाश रहती है उनके लिए एक बार तो यह जगह देखनी बनती है. हालांकि बहुत से लोगों के लिए सांपों के पास जाना काफी मुश्किल होता है लेकिन फिर भी वे इस जगह को अपने रोमांच की सूची में शामिल कर ही लेते हैं.

शेटफल गाँव आने के लिए सही मौसम

अगर आपको भी रोमांच पसंद है और आप शेटफल गांव को अपनी चैक लिस्ट में शामिल करने वाले हैं तो आपके लिए बरसात के मौसम में आना बहुत फायदेमंद होगा. सांप जैसे जीव शर्मीले होते हैं इसलिए अधिकतर अपने बिल से बाहर नहीं निकलते लेकिन बरसात के मौसम में ठंडक के लिए बाहर निकलने से ये हिचकिचाते नहीं हैं.

शेटफल गाँव पहुँचने का तरीका

- पुणे से शेटफल गाँव पहुँचने के लिए 200 किमी की यात्रा करनी होगी.
- सोलापुर जंक्शन से शेटफल गाँव नजदीक है - केवल 38 किमी. सोलापुर जंक्शन से शेटफल गाँव जाने के लिए आपको कैब या बस आसानी से उपलब्ध है.

राधा रमण शर्मा
क्षे.का., कोल्हापुर

लुका छिपी करता समुद्र तट

भारत, प्रकृति के चमत्कारों का देश है, जो कई रहस्यमयी और जादुई जगहों की खोज, समझने, अनुभव करने और आनंद लेने के लिए भरा है. इस तरह के आश्चर्यों में से एक ओडिशा के उत्तर पूर्वी तट पर बंगाल की खाड़ी के एक छोटे से शहर चांदीपुर में एक रहस्यमय, तेजस्वी, विशिष्ट और 'विश्वास करो या न करो' बात है. चांदीपुर यानि कैसुरीनस, नारियल के पेड़ों और तटीय वनस्पति से घिरी सुनहरी रेत का एक विस्तृत खंड है. चांदीपुर समुद्र तट पर कई लोग इस अजीब घटना के बारे में नहीं जानते होंगे. यह अजीब है लेकिन सच है. यह समुद्र तट कम ज्ञात है, लेकिन यहाँ के प्राकृतिक चमत्कार से लोग वाकिफ़ हैं. यहाँ समुद्र रहस्यमय तरीके से और समय-समय पर समुद्र तट से भाटे के दौरान दूर जाता है और उच्च ज्वार के दौरान समुद्री तट पर लौटता है. भाटा वह समय होता है जब समुद्र का पानी तट से दूर चला जाता है और निचले स्तर तक गिर जाता है. जैसा कि समुद्र तट दिन में दो बार जादुई और शानदार खेल खेलता है, इसे 'लुका-छिपी' समुद्र तट कहा जाता है. समुद्र का पानी लगभग 5 किलोमीटर तक फैल जाता है और फिर अद्भुत और रोमांचकारी ध्वनि के साथ तट पर वापस लौटता है. यह घटना एक अविस्मरणीय दुर्लभ घटना और अनुभव है. जब समुद्र पुनरावृत्ति करता है तो यह गोले, घोड़े की नाल या लाल केंकड़ों के रेंगने और छोटी मछलियों को पीछे छोड़ देता है और क्षेत्र कई समुद्री जीवों के लिए जैव विविधता से समृद्ध होता है. समुद्र के पानी के पीछे हटने के बाद, कोई भी समुद्र के पानी में पैरों को डूबा सकता है और उसे दिखाई दे सकता है कि कोई समुद्र के पानी पर चल रहा हो. यहाँ का सूर्य उदय और सूर्य अस्त बहुत ही शानदार है. समुद्र का देखना और समुद्र का गायब हो जाना, मोहित करना, रोमांचित करना और सभी पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है. तथा उनकी याद में एक सुखद अमिट छाप छोड़ता है. रक्षा अनुसंधान और विकास विभाग के तहत रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) चांदीपुर में स्थित है और इस क्षेत्र में एकीकृत परीक्षण रेंज, मिसाइल परीक्षण के साथ है. आकाश, अग्नि, एस्ट्रा ब्रह्मोस, निर्भय, प्रहार, शौरीया और पृथ्वी जैसे बैलिस्टिक मिसाइलों को यहां से लॉन्च किया गया था. इस स्थान को पहले 'व्हीलर द्वीप' के रूप में जाना जाता था, इसका नाम बदलकर डॉ. ए.पी.जे. (दिवंगत भारतीय राष्ट्रपति को सम्मानित करने के लिए) 'अब्दुल कलाम द्वीप' रखा गया है. यहां के स्वादिष्ट समुद्री भोजन का स्वाद लेना भी अच्छा है. चांदीपुर में भुवनेश्वर से 206 किलोमीटर दूर, ओडिशा राज्य की राजधानी, बालासोर से रेल और सड़क मार्ग से जाया जा सकता है.

पुष्पांजलि महापात्रा
जगतसिंहपुर शाखा, भुवनेश्वर

रानी की वाव –

पाटन , गुजरात

रानी की वाव, अहमदाबाद से लगभग 140 कि.मी. उत्तर पश्चिमी भाग में, पाटन शहर के पास मौजूद है. पाटन तत्कालीन राजाओं के सोलंकी वंशजों की प्राचीनतम राजधानी हुआ करती थी. सोलंकी वंशज पहली सहस्त्राब्दी के बदलते युग के दौरान इस क्षेत्र पर शासन करते थे. रानी की वाव एक जटिलतापूर्वक बनायी गयी बावड़ी है. यह बावड़ी सरस्वती नदी के किनारे स्थित है. इस वाव के निर्माण के पीछे का मुख्य कारण था पानी का प्रबंध, क्योंकि इस क्षेत्र में बहुत ही कम वर्षा होती है. दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि शायद रानी उदयमती जरूरतमंद लोगों को पानी प्रदान करके पुण्य कमाना चाहती थी. यह बावड़ी भूमिगत पानी स्त्रोतों से थोड़ी अलग है. रानी की वाव मारू-गुर्जरा आर्किटेक्चर स्टाइल में एक कॉम्प्लेक्स में बनवायी गयी थी.

प्राचीन मान्यताओं के अनुसार इसका निर्माण सोलंकी साम्राज्य के संस्थापक मुलाराजा के बेटे भीमदेव प्रथम (एडी 1022 से 1063) की याद में 1050 एडी में उनकी विधवा पत्नी उदयमती ने करवाया था, जिसे बाद में करणदेव प्रथम ने पूरा किया. इस बावड़ी को बाद में सरस्वती नदी ने पूरी तरह से जलव्याप्त कर दिया था और वर्ष 1980 तक यह बावड़ी पूरी तरह से पानी से भरी हुई थी. कुछ समय बाद जब आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया ने इसे खोज निकाला था, उस समय इसकी हालत काफी खस्ता थी. भारत के इस अद्वितीय स्थल ने 22 जून, 2014 में विश्व धरोहर (यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साईट) के स्थलों में अपना स्थान ग्रहण किया.

प्राचीन जानकारी के अनुसार यह आकर्षक बावड़ी तक़रीबन 64 मीटर लम्बी, 27 मीटर गहरी और 20 मीटर चौड़ी होगी. पूरब से पश्चिम की तरफ बने 'वाव' में यह कुआं बिल्कुल पश्चिम दिशा में बनाया गया है. अपने समय की सबसे प्राचीन और सबसे अद्भुत निर्मितियों में एक में इस बावड़ी का समावेश किया गया है. वर्तमान में हमें बावड़ी का थोड़ा सा हिस्सा ही पूरी तरह से दिखाई देता है लेकिन बावड़ी में स्थापित एक खंभा हमें आज भी दिखाई देता है, जो प्राचीन समय की अद्भुत कलाकृतियों-आकृतियों का उदाहरण है. कहा जाता है कि बावड़ी के नीचे एक छोटा द्वार भी है, जिसके भीतर 30 किलोमीटर की एक सुरंग भी है लेकिन फ़िलहाल इस सुरंग को मिट्टी और पत्थरों से ढक दिया गया है. पहले यह सुरंग बावड़ी से निकलकर सीधी सिधपुर गाँव को जाकर मिलती थी. कहा जाता है कि राजा इसका उपयोग गुप्त निकास द्वार के रूप में करते थे.

रानी की वाव - पाटन, गुजरात

'रानी की वाव' का गहरा कुआँ

ब्रह्मा, विष्णु, महेश की मूर्तियाँ

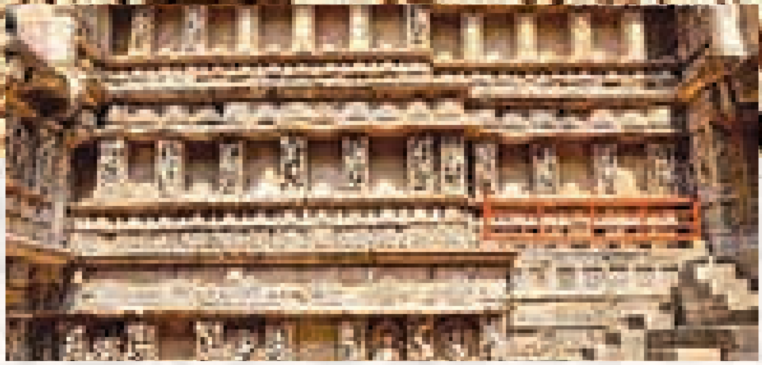

रानी की वाव की सुसज्जित दीवारें

सीढ़ियों वाली अलंकृत बावड़ी

सीढ़ियों वाली बावड़ी की पूरी संरचना भू-स्तर से नीचे बसी हुई है. इसलिए जब आप उसकी ओर बढ़ते हैं तो आपको अपने आस-पास सिर्फ हरी-भरी जमीन ही नज़र आती है, जिस पर बने हुए मार्ग आपको जमीन में बनी एक बड़ी सी सुराख़ की ओर ले जाते हैं. इस सुराख़ के प्रवेश द्वार पर पहुँचते ही आपको वहां की विशाल सीढ़ियों पर बनी बड़ी-बड़ी संरचनाएं नज़र आती हैं तथा वहां की दीवारों पर आपको उत्कीर्ण शिल्पकारी दिखाई देती है. इस बावड़ी का निचला स्तर शायद बाहरी वातावरण से अधिक संपर्क में न होने के कारण आज भी काफी अच्छी स्थिति में है.

रानी की वाव की मूर्तियाँ

सीढ़ियों वाली इस बावड़ी की दीवारों पर बनी कलाकृतियां मुख्य रूप से भगवान विष्णु से संबंधित है. भगवान विष्णु के दशावतार के रूप में ही बावड़ी में मूर्तियों का निर्माण किया गया है, जिनमें मुख्य रूप से कल्कि, राम, कृष्णा, नरसिम्हा, वामन, वराह और दूसरे मुख्य अवतार भी शामिल हैं. इसी के साथ यहां पर स्त्री के साज-श्रृंगार के सोलह विविध प्रकार को नारी मूर्तियों द्वारा दर्शाया गया है. इसके अलावा यहां पर नागकन्याओं की भी कुछ मूर्तियाँ मिलती हैं. बावड़ी की दीवारों पर भी काफी अलंकरण देखने को मिलता है. सबसे निचली सतह पर शेषनाग की कलाकृति है. यूनेस्को के अनुसार 'वाव' में 500 से ज्यादा मुख्य कलाकृतियां हैं. वहीं हजार से भी ज्यादा छोटे-बड़े शिल्प दिखते हैं. इस बावड़ी में प्रत्येक स्तर पर स्तंभों से बना हुआ गलियारा है जो वहां के दोनों तरफ की दीवारों को जोड़ता है. इस गलियारे में खड़े होकर आप रानी के वाव की सीढ़ियों की प्रशंसा ही कर सकते हैं. इन स्तंभों की बनावट देखकर ऐसा लगता है कि पत्थरों को ही कलश के आकार में ढाल दिया गया हो. इस प्रकार की शैली आप पूरे गुजरात में देख सकते हैं.

रानी की वाव का गहरा कुआँ

रानी की वाव में नीचे अंतिम स्तर पर एक गहरा कुआं है जो ऊपर से भी देखा जा सकता है. यह कुआं भी इस सम्पूर्ण बावड़ी की तरह उत्कीर्ण कलाकृतियों से सुशोभित है. इस कुएं के अन्दर और गहराई तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं. लेकिन आज अगर आप उपर से नीचे देखें तो आपको वहां पर दीवारों से बाहर निकले हुए सिर्फ कुछ कोष्ठ ही नज़र आएंगे जो कभी किसी प्रकार की वस्तु या संरचना को रखने हेतु इस्तेमाल किए जाते थे. अगर आप इस कुएं में भीतर तक जाएं तो आपको उसके तल में स्थित शेष शैय्या पर लेटे हुए विष्णु की मूर्ति देखने को मिलती है.

पुरातत्वविदों का मानना है कि विष्णु की यह मूर्ति शायद इस बावड़ी को क्षीरसागर समान मानने के लिए बनाई गयी है.

रानी की वाव देखने के बाद आप जरूर हमारे पूर्वजों के दृष्टिकोण और कला की प्रशंसा करेंगे. सीढ़ियों वाली यह बावड़ी न सिर्फ इस क्षेत्र द्वारा प्रदान किए गए थोड़े से पानी को इकट्ठा करने की जगह थी, बल्कि यह एक ऐसी जगह है जहां पर आकर लोग शांति और सुख का एहसास करते हैं. यह पूरी बावड़ी प्राचीन काल की मान्यताओं और संस्कृति पर लिखी हुई जैसी कोई पुस्तिका है जो आनेवाली पीढ़ी के लिए विषेशरूप से लिखी गयी है. यह बावड़ी एक प्रकार से हमारी संस्कृति और परंपराओं का ज्ञान सागर है, जो अपनी सीढ़ियों द्वारा आपको हमारी संस्कृति की गहराई तक ले जाती है.

भारतीय रिजर्व बैंक ने हाल ही में 100 रुपए का नया नोट जारी किया. इस नोट पर यूनेस्को की विश्व धरोहर की सूची में शामिल गुजरात के पाटन में स्थित इस 'रानी की वाव' का चित्र दिखाया गया है. 'रानी की वाव' आज से करीब हजार साल पहले की भारतीय शिल्पकला की अद्भुत कारीगरी का नमूना है.

आप जब गुजरात जाएँ, तो रानी की वाव अवश्य देखिए.

हर्ष ओझा
क्षे. का. अहमदाबाद

डावकी की उड़ने वाली नावें

यूँ तो पूरे भारत में हमें अचम्भित करने वाले स्थान देखने को मिलते हैं परन्तु पूर्वोत्तर क्षेत्र की बात ही निराली है.

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में देश के आठ राज्य - अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा राज्य स्थित हैं जो न केवल भौगोलिक दृष्टि से वरन् राजनीतिक रुप से पूरे देश में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं. भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए भी जाना जाता है.

जब भी हम भारत के किसी भी पूर्वोत्तर राज्य की कल्पना करते हैं तो हमें वहां के बारे में कुछ जिज्ञासा उत्पन्न होती है. इसका कारण वहां पर छिपी हुई प्रकृति और संस्कृति है. हम हमेशा उन चीजों में अधिक रुचि रखते हैं जो अज्ञात और रहस्यमय हैं और उत्तर पूर्व भारत का क्षेत्र हमेशा से ही विस्मित करने वाला रहा है.

यहां हम मेघालय राज्य की चर्चा कर रहे हैं, जहां विभिन्न मनोरम स्थानों के अतिरिक्त डावकी नाम का एक छोटा सा शहर है जो राज्य की पश्चिम जयंतिया पहाड़ियों के सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित है. यह शहर गुवाहाटी से लगभग 200 किलोमीटर की दूरी पर है. डावकी मेघालय राज्य में आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है, जिसकी वजह वहां पर बहने वाली नदी उमंगोट है .

उमंगोट नदी का स्वच्छ और शीतल पानी तथा इसके आसपास की खूबसूरत हरियाली इसके सौंदर्य की छटा को और अधिक निखारती है. पानी इतना अधिक स्वच्छ है कि यह कांच के होने का भ्रम पैदा करता है. इस नदी के 10 फुट के नीचे तक के पत्थर साफ तौर पर देखे जा सकते हैं. यह कहना अतिशंयोक्ति न होगी कि यह नदी भारत की सभी नदियों में से सबसे अधिक स्वच्छ नदी है.

नदी के पारदर्शी जल में नौकाएं भ्रमण करती हैं तो दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि वे नौकाएं पानी पर नहीं चल रही हैं बल्कि पानी के ऊपर तैर रही हैं. हम इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि नौकाएं पानी पर न चल कर हवा में उड़ रही हैं और नदी सूखी हुई है. यही कारण है कि यहां की प्रसिद्ध नदी उमंगोट एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रुप में जानी जाती है.

इस नदी के एक ओर भारत और दूसरी ओर बांग्लादेश है. दिन के समय इसके दोनों ही किनारों पर दोनों ही देशों के लोग स्नान आदि करते हुए दिखायी देते हैं. यही नहीं, दो देशों की सीमाओं के बीच में होने के कारण इसके एक छोर पर भारतीय सैनिक और दूसरी ओर बांग्लादेशी सैनिक अपनी-अपनी सीमाओं की रक्षा में तैनात दिखायी देते हैं.

डावकी शहर भारत और बांग्लादेश के बीच स्थित है और दोनों देशों के बीच का व्यापारिक केंद्र है जो शहर में स्थित प्रसिद्ध उमंगोट नदी और एक खूबसूरत पुल के लिए प्रसिद्ध है. लोग इस शहर में उमंगोट नदी में नाव की सवारी का आनंद लेने के लिए आते हैं और आस-पास के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करते हैं. डावकी बांग्लादेश की सीमा से सिर्फ 2 किमी दूर है. न केवल यह शहर बल्कि इसके पास बना हुआ 'गेटवे टू बांग्लादेश' भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है.

डावकी मुख्य रूप से कोयला खदानों और चूना पत्थर के निर्यात के लिए जाना जाता है जो भारत और बांग्लादेश के बीच व्यापार को बनाए रखता है. वास्तव में, यह एकमात्र स्थान है जो भारत एवं

बांग्लादेश को आपस में जोड़ता है. कृषि और खनन के अलावा मछली पकड़ना यहां के मुख्य व्यवसायों में से एक है, इसलिए उमंगोट नदी में मछली पकड़ने की नावें दिखायी देना एक आम दृश्य है.

यहां का मौसम पूरे वर्ष अत्यन्त सुहावना रहता है. परन्तु वसंत ऋतु के दौरान पर्यटक गतिविधियों को व्यापक रूप से देखा जा सकता है. तापमान की बात करें तो गर्मियों में यहां 20 से 25 डिग्री सेल्सियस और सर्दियों में 16 से 17 डिग्री सेल्सियस रहता है.

एक तरफ यह जैंतिया हेमा खिरिम की पहाड़ियों के बीच का एक प्राकृतिक स्थल है, वहीं दूसरी तरफ, यह भारत-बांग्लादेश सीमाओं में से एक है. उमंगोट नदी के पार सड़क मार्ग के रुप में एक पुल है जो दोनों देशों की सीमाओं को जोड़ता है. यह पुल वर्ष 1932 में अंग्रेजों द्वारा बनाया गया था. डावकी में एक छोटा सा बाजार भी है, जहां दोनों सीमाओं के लोग व्यावसायिक गतिविधियां करते हैं.

इसमें कोई शक नहीं कि मेघालय एक ऐसा राज्य है जहाँ विस्मितताओं की भरमार है. डावकी से लगभग 95 किमी की दूरी पर शिलांग है, जहां से डावकी शहर की यात्रा पहाड़ी क्षेत्रों के बीच से होकर गुजरती है जो अपने हरे-भरे परिवेश से हमें आनन्दित करती है.

डावकी, उमंगोट नदी और यहां की प्राकृतिक छटा न केवल हमें शान्ति प्रदान करती है वरन् अपने पर्यावरण की रक्षा करने के लिए प्रेरित भी करती है. पर्वतों से निकलने वाली यह नदी दोनों ही देशों को समान भाव से अपना जलापर्ण करती है. इस नदी के दोनों ओर जब दोनों ही देशों के लोग स्नान करते हैं और इस जल का प्रयोग करते हैं तो यह नदी आपसी भाईचारे एवं मानवता का संदेश देती है. यही इसकी महान अद्भुता है जो हमें अचम्भित भी करती है और सहिष्णुता की सीख भी देती है.

पी. सी. पाणिग्राही,

केन्द्रीय कार्यालय,मुंबई

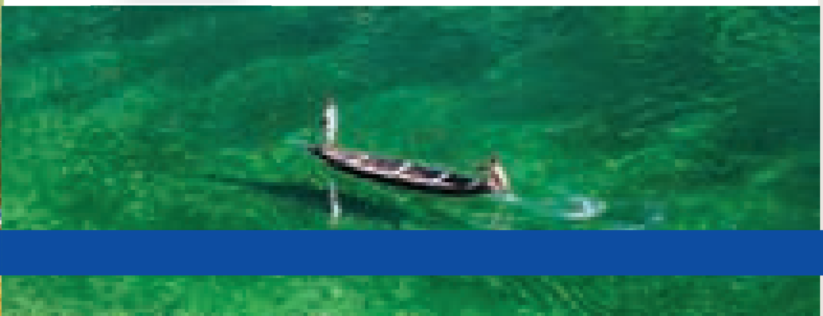

रूपकुंड झील अर्थात
नरकंकाल झील, उत्तराखंड

उत्तराखंड राज्य का निर्माण 9 नवंबर, 2000 को देश के 27 वें राज्य के रूप में हुआ. राज्य में हिमालय पर्वतमाला स्थित नंदा देवी चोटी सबसे ऊंची है जो जिला चमोली में है. हालांकि उत्तराखंड के बारे में क्या कहा जाए? यह राज्य अपनी अदभुतता के लिए ही जाना जाता है. यहां धार्मिकता और विशिष्टता हाथ में हाथ डाले चलती है. चिपको आंदोलन, नंदा देवी चोटी, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, जमनोत्री, वैली ऑफ फ्लावर, हेमकुंड साहिब, मसूरी एवं नैनीताल के साथ हरिद्वार, ऋषिकेश, जिम कार्बेट नेशनल पार्क भी राज्य की गरिमा को और बढ़ाते हैं.

उत्तराखंड के उत्तर पूर्व में हिमाचल, दक्षिण में उत्तर प्रदेश है. उत्तराखंड के साथ दो अंतर्राष्ट्रीय सीमा अर्थात 463 कि.मी. चीन के साथ तथा 303 कि.मी नेपाल के साथ जुड़ी हुई हैं.

इसी दर्शनीयता और प्रेक्षणीयता के साथ-साथ यहां की एक अदभुतता के साथ आज हम आपका परिचय करवाने जा रहे हैं. यह अद्भुत स्थान है, रूपकुंड झील जोकि बाद में कंकाल झील के नाम से जानी जाने लगी. इस झील की जानकारी, हम आपके साथ शेयर करने जा रहे हैं:

रूपकुंड झील बन गयी विश्व की एकमात्र नर कंकाल झील

रूपकुंड नर कंकाल झील उत्तराखंड राज्य में हिमालय की गोद में स्थित 40 से 30 फुट आकार की एक हिम आच्छादित झील है जो अपने किनारे पाये जाने वाले 500 से अधिक नर कंकालों के लिए प्रसिद्ध है. यह एक निर्जन स्थान है और हिमालय की लगभग 5029 मीटर (16499 फीट) की ऊंचाई पर स्थित है. भयानक हिमकगारों युक्त कुंड आकृति वाली इस हिमानी झील का पता सर्वप्रथम ब्रिटिश अन्वेषकों को सन् 1898 ई में लगा. इन नरकंकालों को वर्ष 1942 में नन्दादेवी गेम रिजर्व रेंजर, एच के माधवल एवं स्काटिश लेफ्टिनेंट हेमिल्टन द्वारा फिर से खोज निकाला गया. जब वे रूपकुंड तक पहुंचे तो बर्फ पिघलने की वजह से उन्हें लेक की तलहटी में अस्थि अवशेष, चप्पलें, लकड़ी की वस्तुएं एवं सम्पूर्ण पिंजर दिखाई दिये. वर्ष 1955 में तत्कालीन वन उप मंत्री जगमोहन सिंह नेगी के साथ वहाँ जाने पर रूपकुंड के नरकंकालों के नृवंश और ऐतिहासिकता का अन्वेषण प्रारम्भ हुआ.

लखनऊ विश्वविद्यालय, मिशिगन एवं मिनिसोटा विश्वविद्यालय द्वारा इन नर कंकालों का रेडियो कार्बन डेटिंग करवाने के बाद यह निष्कर्ष निकला कि ये अवशेष कम से कम 650 वर्ष पुराने हैं. जिसमें 150 वर्षों की कमी या वृद्धि की जा सकती है. वर्ष 2004 में भारतीय एवं यूरोपीय वैज्ञानिकों के दल ने रूपकुंड और आसपास के इलाके का दौरा किया और कुछ अहम सुराग खोजे. जिसमें गहने, खोपड़ियाँ, हड्डियाँ और शरीर के संरक्षित उतक मिले. डी.एन.ए परीक्षण से यह ज्ञात हुआ कि 500 या 600 आदमियों का यह समूह था, जिसमें कुछ छोटे कद के व्यक्ति भी शामिल थे. संभवत: स्थानीय लोग जो कुली का कार्य कर रहे थे और बाकी लंबे कद के व्यक्ति थे. खोपड़ियों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ये लोग किसी बीमारी से नहीं बल्कि अचानक आई ओला आंधी से मरे थे. यहां गिरे हुए ओले क्रिकेट के गेंदों जितने बड़े थे और खुले हिमालय में कोई ओट और ठौर न मिलने के कारण सभी लोग मारे गए. कम घनत्व वाली हवा और बर्फ़ीला वातावरण होने के कारण कई लाशें भली भांति संरक्षित रह गयी थी. उसमें से कुछ झील में चली गयी और उस रूपकुंड झील को इन लाशों ने कंकाल झील कहने के लिए बाध्य कर दिया. स्थानीय पुराने लोगों के अनुसार 9 वीं शती में कन्नौज के राजा जसधवल, अपनी गर्भवती पत्नी बालम्पा, अपने नौकरों तथा नृत्य दल को लेकर नंदादेवी का दर्शन करने जा रहे थे. उनके साथ कुछ स्थानीय लोग भी थे और इसी ग्रुप को ओला आँधी की वजह से रूपकुंड लेक के पास अपनी जानें गंवानी पड़ी.

प्रकृति का खेला कहिए या फिर अद्भुतता, रूप कुंड की सुंदरता तो है ही लेकिन इन कंकालों को सदियों से सुरक्षित रखने की उसकी अद्भुतता ने इस नर कंकाल झील को अद्भुतता का दर्जा दे दिया है.

वैसे रूपकुंड झील हिमालय की गोद में स्थित एक मनोहारी और सुंदर पर्यटन स्थान है. यह हिमालय की दो चोटियों अर्थात त्रिशूल और नंदघुंगटी की तलहटी में स्थित है. यह झील वर्ष के ज्यादातर समय बर्फ से ढकी रहती है. प्रत्येक पतझड़ में यहाँ धार्मिक आयोजन किया जाता है, जिसमें आस-पास के गाँव के लोग शामिल होते हैं. यह धार्मिक आयोजन यानि नंदादेवी राज जाट उत्सव जो रूपकुंड में बड़े पैमाने पर प्रत्येक बारह वर्ष में एक बार मनाया जाता है. हालांकि रूपकुंड की यात्रा एक सुखद अनुभव है. पूरे रास्ते भर, व्यक्ति अपने चारों ओर से पर्वत शृंखलाओं से घिरा हुआ होता है और प्रकृति के अद्भुत नजारे से रूबरू होता रहता है. लेकिन यह स्थान ट्रैकिंग के लिए ज्यादा मशहूर है और यहाँ का ट्रेक ज्यादा चुनौती भरा माना जाता है. शायद इसी चुनौती को लेने के लिए यहाँ युवा वर्ग बड़ी संख्या में आकर अपनी हिम्मत को आजमाता है.

वर्ष के ज़्यादातर समय के लिए बर्फ से ढकी रूपकुंड झील (कंकाल झील) में इसी वजह से शायद वे नरकंकाल और वस्तुएं सुरक्षित रही होंगी. यह झील अपनी इसी अद्भुतता और रूहानी तथा प्राकृतिक सुंदरता को लेकर पूरे विश्व में जानी जाती है.

संजय कुमार जैन

एफ आर आई देहरादून

'यहां रुकना मना है'- थ्री किंग्स चर्च, गोवा

गोवा, एक ऐसा राज्य जिसका नाम सुनते ही याद आता है, दूर-दूर तक फैला समुद्र किनारा, ऐतिहासिक वस्तुएं, चर्च, मछलियां, उन्मुक्त जीवन शैली, थिरकते कदम और काजू से बनी लाजवाब फेनी! अपने समुद्री बीचों और मनमोहक आबोहवा के साथ गोवा - भारत के चुनिंदा, सबसे खास पर्यटन स्थलों में गिना जाता है. गोवा मुख्यत: अपने आकर्षक समुद्री तटों, शांतिपूर्ण वातावरण एवं सी-फूड्स के लिए जाना जाता है, जहां ज़्यादातर विदेशी पर्यटक आना पसंद करते हैं. गोवा में घूमने-फिरने के लिए ढेरों स्थान मौजूद हैं, लेकिन चकाचौंध भरे शहरी खूबसूरती के मध्य कुछ ऐसे भी स्थान हैं, जो अपने आप में अद्भुत हैं, अविश्वसनीय हैं और अकल्पनीय हैं साथ ही अकल्पनीय अनुभवों के लिए जाने जाते हैं. ऐसे स्थानों पर स्थानीय लोग गलती से भी नहीं जाते.

स्थानीय निवासियों की मान्यता के अनुसार गोवा का सबसे अकल्पनीय और अद्भुत स्थान है 'थ्री किंग्स चर्च' जिसे 'Our Lady of Remedios Chapel' भी कहा जाता है, यह स्थान गोवा के वलसाव गांव में स्थित है, जो मडगांव रेलवे स्टेशन और वास्को द गामा अंतरराष्ट्रीय विमानपत्तन से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यहां सूरज ढलने के बाद पर्यटकों की आवाजाही वर्जित है.

स्थानीय निवासियों के अनुसार बताया जाता है कि बहुत पहले, इस स्थान पर तीन पुर्तगाली राजाओं का शासन हुआ करता था और

वे हमेशा उस जगह पर राज करने के लिए आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे. पुर्तगाली लोकतंत्र के नियम एवं कानून से बंधे होने के कारण वो राज नहीं कर सकते थे. इस समस्या से वे तीनों बहुत परेशान थे. तीनों में से एक राजा जिसका नाम होलगर था, उसने राजा बनने के लिए एक योजना बनाई और अपने दोनों साथी राजाओं को जहर दे कर मार दिया. जब इस घटना के बारे में स्थानीय लोगों को पता चला तो उन्होंने राजा को घेर लिया. राजा इतना डर गया था कि उसने मौत को गले लगाना मुनासिब समझा और उसने जहर खा कर आत्महत्या कर ली. स्थानीय निवासियों ने तीनों राजाओं की समाधि इसी चर्च के पास बना दी.

स्थानीय लोगों का मानना है कि आज भी यहां उन तीनों राजाओं की आत्माएं भटकती हैं. स्थानीय निवासियों ने वहां अजीब सी रूहानी ताकत को महसूस किया है. इंडियन पैरानार्मल सोसाइटी की टीम ने भी इनकी ताकतों को महसूस किया है और इन सबको अपने कैमरे में कैद किया है. उनका कहना है कि ये रूहानी ताक़तें, यहां आने वाले लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाती है परंतु अपने होने का एहसास जरूर कराती हैं. इसी वजह से यह चर्च 'थ्री किंग्स चर्च' के नाम से प्रसिद्ध हो गया और गोवा के सबसे अकल्पनीय स्थानों में जाना जाने लगा.

यह चर्च उत्रोड़ा और माजोर्डा समुद्री तट का मनमोहक एवं सुंदर दृश्य प्रदान करता है तथा यह चर्च चारो ओर से घने जंगलों से घिरा हुआ है. यहां से सूर्यास्त देखने का अपना अलग ही मजा है, लेकिन ध्यान रहे, यहां सूर्यास्त के बाद 'रुकना मना है'.

सुधीर प्रसाद,
पी बी ओ डी, कें.का., मुंबई.

गृह मंत्रालय, मुंबई की प्रतिनिधि डॉ. सुनीता यादव, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा दि. 14.11.2018 को क्षे. का. इंदौर का निरीक्षण किया गया. इस अवसर पर डॉ. यादव का स्वागत करते हुए क्षेत्र प्रमुख, इंदौर, श्री राजेश कुमार, साथ ही उपस्थित उप क्षेत्र प्रमुख, सुश्री रश्मि बाला गुप्ता एवं प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री निधि सोनी.

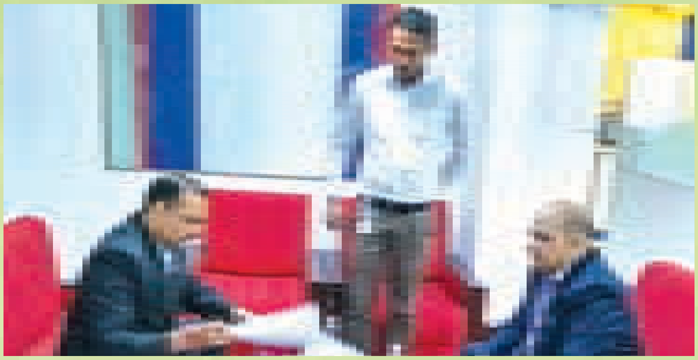

दिनांक 24.12.2018 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर में श्री हरीश सिंह चौहान, सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निरीक्षण किया गया. इस अवसर पर निरीक्षण करते हुए श्री चौहान जी के साथ हैं, रायपुर के क्षेत्र प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी.

दि.19.12.2018 को क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें क्षेत्र की विभिन्न स्थानीय एवं दूरस्थ शाखा के स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया. कार्यशाला का शुभारंभ उप क्षेत्र प्रमुख श्री विकास धवन ने किया. स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र के राजभाषा प्रभारी, श्री अर्पित जैन, प्रबन्धक(राभा) एवं क्षेत्रीय कार्यालय की श्रीमती उपासना सिरसैया, प्रबन्धक (राभा) ने इस कार्यशाला में समन्वयक की भूमिका निभाई.

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर दिनांक 10.01.2019 को भिलाई, यूएलपी भिलाई, चरोदा, अहिवारा शाखा के स्टाफ सदस्यों हेतु राजभाषा एवं बैंकिंग विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था. जिसमें कुल 19 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया

नराकास, नाशिक के तत्वावधान मे विभिन्न कार्यालयों में आयोजित 'टिप्पण एवं प्रारूप लेखन', 'वादविवाद', 'निबंध लेखन' प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था, जिसमे यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, नासिक के 3 प्रतिभागियों को नराकास छमाही बैठक में पुरस्कृत किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना द्वारा दिनांक 01.12.2018 को आयोजित एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला

नराकास (बैंक), एर्णाकुलम द्वारा 60 वीं अर्ध-वार्षिक बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह दि. 26.10.2018 को आयोजित किया गया. इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ए कृष्णस्वामी, क्षेत्र प्रमुख, नो.क्षे.कार्यालय, एर्णाकुलम ने की. इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में श्री के पी शर्मा, उप.निदेशक (का) प्रभारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्चि एवं विशेष अतिथि श्री के पी पटनायक, महा प्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक, एर्णाकुलम को आमंत्रित किया गया था.

दिनांक 30.10.2018 को श्री शैलेष कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक(राजभाषा) द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया. इस अवसर पर उपस्थित हैं, केंद्रीय कार्यालय से पधारे राजभाषा प्रमुख, श्री राजेश कुमार, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा); क्षेत्र प्रमुख, श्री सी एम गुप्ता एवं उप क्षेत्र प्रमुख, श्री पी एन चौधरी.

नराकास के तत्वावधान में क्षेत्रीय कार्यालय, नासिक द्वारा हिन्दी पखवाड़े में आयोजित 'शब्द जोड़ प्रतियोगिता' के विजेताओं को नराकास छमाही बैठक में क्षेत्र प्रमुख, डॉ. अजित मराठे द्वारा पुरस्कृत किया गया.

दि. 17.12.2018 को क्षेमप्र कार्यालय, भोपाल की अंचलीय अर्ध वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया, जिसमे अंचल के अधीन सभी क्षेत्रों के राजभाषा प्रभारियों ने सहभागिता की. अंचल प्रमुख श्री विनायक व्ही. टेम्भुर्ने, उप अंचल प्रमुख, श्री आर के जागलान, क्षेत्र प्रमुख भोपाल, श्री गुरतेज सिंह, उप क्षेत्र प्रमुख, भोपाल श्री विकास धवन, सहायक महाप्रबंधक, श्रीमती याचना पालीवाल इस बैठक में उपस्थित रहे. साथ में हैं, भोपाल अंचल के विविध क्षेत्रीय कार्यालयों में पदस्थ राजभाषा

दि.20.12.2018 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इंदौर के तत्वावधान में आयोजित बैठक में, नराकास पत्रिका 'राजभाषा प्रवाह' के विमोचन के अवसर पर मंच पर नराकास अध्यक्ष एवं सचिव के साथ उपस्थित श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर. इस बैठक में राजभाषा अधिकारी, सुश्री निधि सोनी ने भी सहभागिता की.

दि.12.12.2018 को राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्री रामजीत सिंह द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया. इसी अवसर पर क्षेत्र प्रमुख, श्री राजेश कुमार की उपस्थिति में राजभाषा में बेहतरीन कार्य करने वाले कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया.

राजभाषा पुरस्कार

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेमप्रका, लखनऊ को वर्ष 2017-18 के लिए हिन्दी में श्रेष्ठ व उल्लेखनीय कार्य निष्पादन पर उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड राज्य के बैंकों में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. पुरस्कार वितरण दिनांक 19.11.2018 को चंडीगढ़ में सम्पन्न हुआ. इस अवसर पर माननीय गृह राज्यमंत्री, भारत सरकार, श्री किरेन रीजीजू से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री लाल सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक, लखनऊ, साथ में डॉ विपिन बिहारी, संयुक्त सचिव, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं बैंक के लखनऊ अंचल के राजभाषा प्रभारी- श्री अरुण कृष्ण, मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा).

दिनांक 18.12.2018 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बड़ौदा द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. शील्ड प्रदान करते हुए बैंक नराकास, बड़ौदा के अध्यक्ष श्री के. आर. कनौजिया एवं राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गृह मंत्रालय की उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ. सुनीता यादव; शील्ड ग्रहण करते हुए क्षेत्र प्रमुख, बड़ौदा श्री राजीव कुमार झा एवं राजभाषा अधिकारी, सुश्री राधा मिश्र.

सोलापुर नराकास की ओर से राजभाषा में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु हमारी सोलापुर शाखा के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए राजभाषा अधिकारी, श्री राधारमन शर्मा एवं उप शाखा प्रमुख, सोलापुर श्री अंकित शर्मा.

दिनांक-29.09.2018 को नराकास, दुर्गापुर द्वारा राजभाषा के उत्कृष्ठ कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्गापुर को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. पुरस्कार प्रदान करते दुर्गापुर स्टील प्लांट के सीईओ, श्री अरुण कुमार रथ एवं पुरस्कार ग्रहण करते क्षेत्र प्रमुख, दुर्गापुर श्री गणेश तिवारी.

नराकास, नागपुर की अर्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन दिनांक 24 अक्तूबर 2018 को नागपुर स्थित होटल तुली इंपीरियल में किया गया. इस बैठक में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार ग्रहण करते हुये क्षेत्रीय कार्यालय के उप क्षेत्र प्रमुख श्री उत्पल कर व राजभाषा अधिकारी श्री मुकेश पाटिल.

वर्ष 2017-18 के दौरान राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य-कार्यनिष्पादन के लिए नराकास गाजीपुर से हमारे क्षेका गाजीपुर को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. पुरस्कार राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाज़ियाबाद के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अजय मलिक के कर कमलों से प्रदान किया गया, जिसे गाजीपुर क्षेत्र प्रमुख, श्री संजय नारायण एवं राजभाषा अधिकारी, श्री किशोर कुमार द्वारा ग्रहण किया गया.

बैंक नराकास, मुंबई की ओर से वर्ष 2017-18 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई (दक्षिण) को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 15.11.2018 को आयोजित नराकास की छमाही बैठक में समिति के अध्यक्ष डॉ. एन. मुनिराजु एवं डॉ. सुनीता यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन) पश्चिम क्षेत्र, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से पुरस्कार ग्रहण करते हुए क्षेत्र प्रमुख, मुंबई (दक्षिण) श्री प्रमोद कुमार सोनी तथा मुख्य प्रबंधक(राजभाषा) श्री नवल किशोर दीक्षित.

नराकास, मदुरै की 60 वीं अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक में हमारे बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै को वर्ष 2017-18 के लिए 'राजभाषा शील्ड' का प्रथम पुरस्कार दिया गया. यह पुरस्कार गृह मंत्रालय, कोचीन कार्यालय के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री कुमार पॉल शर्मा और नराकास के अध्यक्ष द्वारा उप क्षेत्र प्रमुख, श्री बेन्नी स्टीफन ने प्राप्त किया. इसी बैठक में राजभाषा अधिकारी सुभाष चन्द्र को 'श्रेष्ठ राजभाषा अधिकारी' के प्रथम पुरस्कार के लिए चुना गया.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वाराणसी की 14वी छमाही बैठक में श्री अजय मलिक, उपनिदेशक(कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय एवं अध्यक्ष, नराकास से तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते क्षेत्र प्रमुख, श्री टाटा वेंकट वेणुगोपाल एवं राजभाषा प्रभारी, श्री विक्रांत कुमार.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आजमगढ़ द्वारा हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, आजमगढ़ को वर्ष 2017-18 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 06.12.2018 को आयोजित नराकास की अर्द्ध-वार्षिक बैठक तथा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में यह पुरस्कार प्रदान किया गया. इस अवसर पर श्री लुक़मान अली खान, अध्यक्ष, नराकास तथा श्री रघुनाथ राम, प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय आजमगढ़, आजमगढ़ क्षेत्र के राजभाषा प्रभारी श्री अमित कुमार अग्रहरी को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए.

दि. 27.11.2018 को नराकास (बैंक) के तत्वाधान में इंडियन बैंक द्वारा आयोजित 'टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता' में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की श्रीमती एन वी एन आर अन्नपूर्णा, सहायक प्रबन्धक को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. इस नराकास (बैंक) विशाखपट्टणम की 14वीं बैठक में उपस्थित श्री टेक चंद, उप निदेशक, गृह मंत्रालय, बेंगलुरु एवं श्री ई कोट्टी रेड्डी, नराकास अध्यक्ष, उप महा प्रबन्धक, आंधा बैंक के कर कमलों द्वारा श्रीमती एन वी एन आर अन्नपूर्णा को पुरस्कार प्रदान किया गया.

जाम्बुर (लघु अफ्रीका)

वेरावल से करीबन कुछ घंटों की दूरी पर तलाला शहर के पास में जाम्बुर गाँव है, जिसे लघु अफ्रीका के नाम से भी जाना जाता है. इस गाँव की सबसे बड़ी खासियत है, यहाँ रहने वाले लोग, जो सीदी जाति के हैं और मुख्यत: उनका वजूद अफ्रीका में पाया जाता है. दक्षिण अफ्रिका में हब्सी के रूप में पहचाने जाने वाले नीग्रो जनजाति के लोग गुजरात में लम्बे समय से रहते आ रहे हैं.

गुजरात का सौराष्ट्र, केसर आमों के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है. अगर किसी ने भी सौराष्ट्र के तलाला के आमों को चखा है तो केसर आमों के अलावा और हैरत में डालने वाले इन लोगों को आप यहाँ पायेंगे.

यह प्रजाति पूर्णत: गुजराती बोलती है पर उनकी सभ्यता, संस्कृति में आज भी ओकी रीति रिवाज की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है. जो भी पर्यटक गिर के शेर देखने जाते हैं वो हमेशा इनके ओकी पारंपरिक नृत्य का आनंद लेते ही हैं.

माना जाता है कि आज से लगभग 750 साल पहले पुर्तगालियों द्वारा गुलाम बनाकर इन लोगों को भारत में लाया गया था, कुछ लोगों का यह कहना भी है कि जूनागढ़ के तत्कालीन नवाब एक बार अफ्रीका गए और वहां एक महिला को निकाह कर के भारत लाये और वहाँ से 100 गुलामों को भी लाये थे. यह जनजाति पाकिस्तान में भी पाई जाती है. वहीं से धीरे-धीरे इनका समुदाय जूनागढ़ में विकसित हुआ. यह ओकी प्रजाति यहाँ सीदी के नाम से जानी जाती है, इनमें से कुछ लोगों ने इस्लाम तो किसी ने इसाई धर्म को अपनाया जबकि कुछ लोग हिन्दू धर्म को भी मानते हैं. इन्होंने भारत भर में अपनी कुछ अलग ही पहचान बनाई हुई है. सीदी लोग निकाह भी काज़ी के रूबरू ही पढ़ते हैं और वो पीर बाबा को मानते हैं, जिनकी दरगाह भरुच के रतनपुर ज़िले में है. जहाँ वो सालाना उर्स के लिए जाया करते हैं. वहाँ से वापस अपने घर आने के बाद वो त्योहारों की तरह नृत्य और धमाल करते हैं. इस नृत्य में उसी अफ्रीकन परंपरा को देखा जा सकता है, जिसमें पुरुष, प्राणियों के चमड़े का लिबास पहनते हैं और अपने चेहरों को विविध रंगों से रंगते हैं, इस लिबास में नृत्य के साथ वे ढोल बजाते हैं, जिसे मुशिरा बोला जाता है.

सीदी लोगों को वहां 'सीदी बादशाह' के नाम से भी जाना जाता है. वो मुख्य रूप से गाय, बकरी रखते हैं और खेती करते हैं. मुख्य रूप से परंपरागत बाजरा और ज्वार के साथ-साथ आम की भी खेती करते हैं. कुछ लोग जंगल में रक्षक के तौर पर भी काम करते हैं.

एक अलग ही दुनिया बसा के रहते हैं, यह सीदी बादशाह! अफ्रीका को भारत में बसाए ये लोग भारतीय इतिहास के साथ वर्तमान को भी उजाला दे रहे हैं. इनकी जाति कहीं न कहीं विकास से महरूम है परंतु फिर भी इतिहास की धरोहर को संभाले वो भारत का नाम दुनिया में रोशन कर रहे हैं.

धर्मेश तन्ना
वेरावल शाखा, राजकोट

बैलेंसिंग रॉक या संतुलन शिला

मेरा शहर जबलपुर अद्भुत प्राकृतिक सौन्दर्य से भरा शहर है. कल-कल करती माँ नर्मदा, श्वेत संगमरमर का भेड़ाघाट, धुआंधार जलप्रपात और चट्टानों से घिरा है जबलपुर (मध्य प्रदेश का एक प्राचीन शहर). इन सबमें अलग और आश्चर्य चकित करने वाली है --- बैलेंसिंग रॉक या संतुलन शिला. भौगोलिक संरचना की दृष्टि से एक अद्भुत संरचना.

जबलपुर से 6 किलोमीटर दूर मदनमहल किले के रास्ते में शैलपर्ण उद्यान के पास, पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है यह बैलेंसिंग रॉक.

क्या है यह बैलेंसिंग रॉक? दो बड़ी-बड़ी गोलाकार चट्टानें मात्र कुछ फीट के आधार पर एक दूसरे से टिकी है. एक ठोस चट्टान और उनके ऊपर संतुलन करती दूसरी गोल चट्टान. दिखने में अद्भुत और कुछ खतरनाक सी लगती है, अब गिरी तब गिरी. पर्यटक भी इसे हिलाने का प्रयत्न करते हैं, पर मजाल है एक इंच भी इधर-उधर हो. सच तो यह है कि बड़े से बड़ा भूकंप भी इन्हें हिला नहीं पाया है.

प्रागेतिहासिक पृथ्वी की संरचना के समय से मदन महल की पहाड़ियां गोंडवाना ट्रैक के नाम से जानी जाती है. कहा जाता है ये पहाड़ियां हिमालय से भी पुरानी है. दो पत्थरों के बीच वर्षों तक पानी और हवा के बहाव से पैदा हुए कटाव के कारण संतुलन शिलाओं का निर्माण होता है. भारत में महाबलीपुरम् और पश्चिम बंगाल में इस तरह की शिलाएं पायी गई हैं. विश्व में कई देशों में इस तरह की शिलायें पायी गयी हैं. अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, फिनलैंड, पोलैंड, कैनेडा, कोलिफोर्निया आदि देशों में संतुलन शिलाएं हैं।

करोड़ों वर्षों पूर्व भूगर्भीय हलचलों, ज्वालामुखी के कारण इस बैलेंसिंग रॉक रचना हुई. कई भूवैज्ञानिक और पुरातत्वविद इसके पीछे का रहस्य जानने का प्रयत्न करते रहे हैं. जबलपुर में सन 1997 में आया बड़ा भूकम्प भी इसे हिला नहीं पाया. इसका एक ही जवाब उन्हें मिला कि ये पत्थर अपने गुरुत्वाकर्षण बल के कारण एक दूसरे पर टिके हुए हैं.

पुरातत्वविद नारायण व्यास बताते हैं-जबलपुर भूकम्प के मामले में काफी संवेदनशील है. प्रकृति में किसी उथल-पुथल के दौरान ही यह पत्थर चट्टान पर आ टिका है. यह ग्रेफाइट का पत्थर, है जो काफी मजबूत है. सैकड़ों सालों से यह पत्थर यहीं पर टिका है.

मेरा बचपन इन्हीं पहाड़ियों के बीच खेलते कूदते बीता है. मेडिकल कॉलेज रोड पर शारदा देवी मंदिर के लिए जाते समय यह बैलेंसिंग रॉक है. अपने मित्रों के साथ साइकिल पर जाते- जाते कई बार इस अजूबे को देखा करते थे. पेड़ों और सीताफल के बागानों के झुरमुटों के बीच से मस्ती करती हमारी मित्र टोली ने कई बार अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने का प्रयास भी किया है और यह भी साबित करने का प्रयास किया है कि हमने इतने बड़े पत्थर को हिलाया है. यह बात अलग है कि सच हम भी जानते थे और सुनने वाले भी.

मैं कुछ बड़ा हुआ और भौगोलिक संरचनाओं को समझने लगा. पर सारे तथ्यों से परे एक कुतूहल हमेशा मन में बना रहा कि कैसे ये दोनों चट्टानें करोड़ों वर्षो से मात्र छोटे से आधार पर एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं.

कई प्रश्न उभरते गये और समय के प्रवाह में धुंधले भी होते गये. आज जब इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने की कोशिश की, तब जो उत्तर मिला वह मुझे जीवन का बहुत बड़ा पाठ पढ़ा गया, वह है संतुलन. दो पत्थरों के बीच जो संतुलन है, जिस आधार पर एक ठोस चट्टान से बड़ा सा गोल पत्थर जुड़ा है उस जुड़ाव का संतुलन यही कारण है. भूकंप भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं पाया.

हमारे जीवन मूल्यों का आधार अगर ठोस है तो बड़ी से बड़ी कठिनाई भी हमें हिला नहीं सकती, बस, हमें आधार और आपदाओं के बीच गुरुत्वाकर्षणीय संतुलन बनाकर चट्टान की तरह खड़ा होना पड़ेगा.

मोहन बोधनकर
क्षे. का., जबलपुर

जगन्नाथ पुरी मंदिर

माना जाता है कि भगवान विष्णु जब चारों धाम यात्रा पर जाते हैं तो हिमालय की ऊंची चोटियों पर बने अपने धाम बद्रीनाथ में स्नान करते हैं. पश्चिम में गुजरात के द्वारिका में वस्त्र पहनते हैं. पुरी में भोजन करते हैं और दक्षिण में रामेश्वरम में विश्राम करते हैं. द्वापार युग के बाद भगवान कृष्ण पुरी में निवास करने लगे और बन गए जग के नाथ अर्थात जगन्नाथ. पुरी का जगन्नाथ धाम चार धामों में से एक है. यहां भगवान जगन्नाथ बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ विराजते हैं.

वर्तमान में जो मंदिर है वह 7वीं सदी में बनवाया गया था. हालांकि इस मंदिर का निर्माण ईसा पूर्व 2 में भी हुआ था. यहां स्थित मंदिर 3 बार टूट चुका है. 1174 ईसवी में ओडिशा शासक अनंग भीमदेव ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था. मुख्य मंदिर के आसपास लगभग 30 छोटे-बड़े मंदिर स्थापित हैं.

आईए जानते हैं इस मंदिर की खास बातें जो रहस्यों से परे और किसी चमत्कार से कम नहीं हैं -

हवा के विपरीत लहराता ध्वज : श्री जगन्नाथ मंदिर के ऊपर स्थापित ध्वज सदैव हवा के विपरीत दिशा में लहराता है. ऐसा किस कारण होता है यह तो वैज्ञानिक ही बता सकते हैं लेकिन यह निश्चित ही आश्चर्यजनक बात है.

यह भी आश्चर्य की बात है कि प्रतिदिन सायंकाल मंदिर के ऊपर स्थापित ध्वज को मानव द्वारा उल्टा चढ़कर बदला जाता है. ध्वज भी इतना भव्य है कि जब यह लहराता है तो इसे सब देखते ही रह जाते हैं. ध्वज पर शिव का चंद्र बना हुआ है. एक पुजारी मंदिर के 45 मंज़िला शिखर पर स्थित झंडे को रोज बदलता है. ऐसी मान्यता है कि अगर एक दिन भी झण्डा नहीं बदला गया तो मंदिर 18 वर्षों के लिए बंद हो जाएगा.

गुंबद की छाया नहीं बनती : यह दुनिया का सबसे भव्य और ऊंचा मंदिर है. यह मंदिर 4 लाख वर्गफुट क्षेत्र में फैला है और इसकी ऊंचाई लगभग 214 फुट है. मंदिर के पास खड़े रहकर इसका गुंबद देख पाना असंभव है. मुख्य गुंबद की छाया दिन के किसी भी समय अदृश्य ही रहती है. हमारे पूर्वज कितने बड़े इंजीनियर रहे होंगे यह इस एक मंदिर को देखकर समझा जा सकता है.

चमत्कारिक सुदर्शन चक्र : पुरी में किसी भी स्थान से आप मंदिर के शीर्ष पर लगे सुदर्शन चक्र को देखेंगे तो वह आपको सदैव अपने सामने ही लगा दिखेगा. इसे नीलचक्र भी कहते हैं. यह अष्टधातु से निर्मित है और अति पावन और पवित्र माना जाता है.

हवा की दिशा : सामान्य दिनों के समय, हवा समुद्र से जमीन की तरफ आती है और शाम के दौरान इसके विपरीत, लेकिन पुरी में इसका उल्टा होता है. अधिकतर समुद्री तटों पर आमतौर पर हवा समुद्र से जमीन की ओर आती है, लेकिन यहां हवा जमीन से समुद्र की ओर जाती है.

गुंबद के ऊपर नहीं उड़ते पक्षी : मंदिर के गुंबद के ऊपर से विमान नहीं उड़ाया जा सकता. मंदिर के शिखर के पास पक्षी उड़ते नजर नहीं आते, जबकि देखा गया है कि भारत के अधिकतर मंदिरों के गुंबदों पर पक्षी बैठ जाते हैं या आसपास उड़ते हुए नजर आते हैं.

दुनिया का सबसे बड़ा रसोईघर : 500 रसोइए, 300 सहयोगियों के साथ बनाते हैं भगवान जगन्नाथ जी का प्रसाद! लगभग 20 लाख भक्त कर सकते हैं यहां भोजन! कहा जाता है कि मंदिर में प्रसाद कुछ हजार लोगों के लिए ही क्यों न बनाया गया हो लेकिन इससे लाखों लोगों का पेट भर सकता है. मंदिर के अंदर पकाने के लिए भोजन की मात्रा पूरे वर्ष के लिए रहती है. प्रसाद की एक भी

मात्रा कभी भी व्यर्थ नहीं जाती.

मंदिर की रसोई में प्रसाद पकाने के लिए 7 बर्तन एक-दूसरे पर रखे जाते हैं और सब कुछ लकड़ी पर ही पकाया जाता है. इस प्रक्रिया में शीर्ष बर्तन में सामग्री पहले पकती है फिर क्रमश: नीचे की तरफ एक के बाद एक पकती जाती है अर्थात सबसे ऊपर रखे बर्तन का खाना पहले पक जाता है. है न चमत्कार?

समुद्र की ध्वनि : मंदिर के सिंहद्वार में पहला कदम रखने पर ही (मंदिर के अंदर से) आप सागर द्वारा निर्मित किसी भी ध्वनि को नहीं सुन सकते. आप (मंदिर के बाहर से) एक ही कदम को पार करें, तब आप इसे सुन सकते हैं. इसे शाम को स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता है.

इसी तरह मंदिर के बाहर स्वर्ग द्वार है, जहां पर मोक्ष प्राप्ति के लिए शव जलाए जाते हैं लेकिन जब आप मंदिर से बाहर निकलेंगे तभी आपको लाशों के जलने की गंध महसूस होगी.

रूप बदलती मूर्ति : यहां श्रीकृष्ण को जगन्नाथ कहते हैं. जगन्नाथ के साथ उनके भाई बलभद्र (बलराम) और बहन सुभद्रा विराजमान हैं. तीनों मूर्तियां काष्ठ की बनी हुई हैं.

यहां प्रत्येक 12 साल में एक बार बनता है प्रतिमा का नव कलेवर. मूर्तियां नई जरूर बनाई जाती हैं लेकिन आकार और रूप वही रहता है.

इस मंदिर की सबसे खास बात तो स्वयं भगवान जगन्नाथ हैं, जिनका अनोखा रूप कहीं अन्य स्थान पर देखने को नहीं मिलता है. नीम की लकड़ी से बना इनका विग्रह अपने आप में अद्भुत है जिनके बारे में कहा जाता है कि यह एक खोल मात्र है. इसके अंदर स्वयं भगवान श्रीकृष्ण मौजूद होते हैं.

विश्व की सबसे बड़ी रथयात्रा : आषाढ़ माह में भगवान रथ पर सवार होकर अपनी मौसी रानी गुंडिचा के घर जाते हैं. यह रथयात्रा 5 किलोमीटर में फैले पुरुषोत्तम क्षेत्र में ही होती है. रानी गुंडिचा भगवान जगन्नाथ के परम भक्त राजा इंद्रद्युम्न की पत्नी थी इसीलिए रानी को भगवान जगन्नाथ की मौसी कहा जाता है.

अपनी मौसी के घर भगवान 8 दिन रहते हैं. आषाढ़ शुक्ल दशमी को वापसी की यात्रा होती है. भगवान जगन्नाथ का रथ नंदीघोष है. देवी सुभद्रा का रथ दर्पदलन है और भाई बलभद्र का रथ तल ध्वज है. पुरी के गजपति महाराज सोने की झाड़ू बुहारते हैं जिसे छेरा पैररन कहते हैं.

हनुमानजी करते हैं जगन्नाथ की समुद्र से रक्षा : माना जाता है कि 3 बार समुद्र ने जगन्नाथ जी के मंदिर को तोड़ दिया था. कहते हैं कि महाप्रभु जगन्नाथ ने वीर मारुति (हनुमान जी) को यहां समुद्र को नियंत्रित करने हेतु नियुक्त किया था, परंतु जब-तब हनुमान भी जगन्नाथ-बलभद्र एवं सुभद्रा के दर्शनों का लोभ संवरण नहीं कर पाते थे और वे प्रभु के दर्शन के लिए नगर में प्रवेश कर जाते थे, ऐसे में

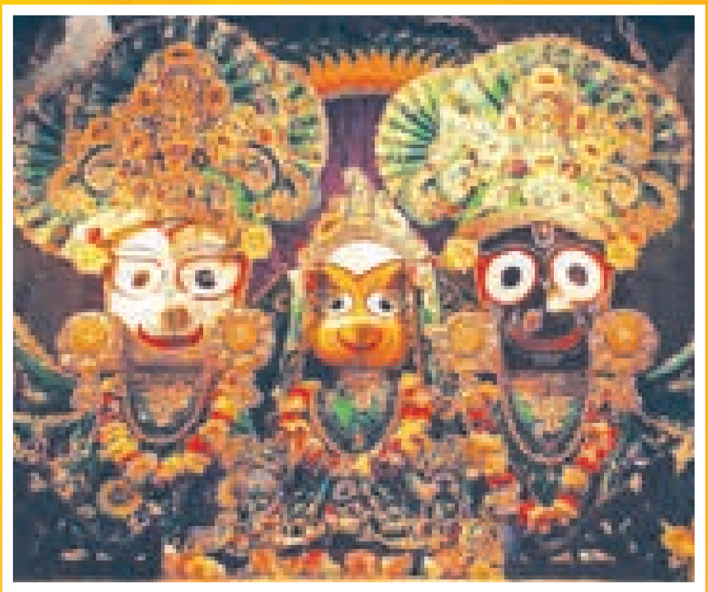

समुद्र भी उनके पीछे नगर में प्रवेश कर जाता था. केसरी नंदन हनुमान जी की इस आदत से परेशान होकर जगन्नाथ महाप्रभु ने हनुमान जी को यहां स्वर्ण बेड़ी से आबद्ध कर दिया. यहां जगन्नाथ पुरी में ही सागर तट पर बेड़ी हनुमान का प्राचीन एवं प्रसिद्ध मंदिर है. भक्त लोग बेड़ी में जकड़े हनुमान जी के दर्शन करने आते हैं.

- महान सिख सम्राट महाराजा रणजीत सिंह ने इस मंदिर को प्रचुर मात्रा में स्वर्ण दान किया था, जो कि उनके द्वारा स्वर्ण मंदिर, अमृतसर को दिए गए स्वर्ण से कहीं अधिक था.
- पांच पांडव भी अज्ञातवास के दौरान भगवान जगन्नाथ के दर्शन करने आए थे. श्री मंदिर के अंदर पांडवों का स्थान अब भी मौजूद है. भगवान जगन्नाथ जब चंदन यात्रा करते हैं तो पांच पांडव उनके साथ नरेन्द्र सरोवर जाते हैं.
- कहते हैं कि ईसा मसीह सिल्क रूट से होते हुए जब कश्मीर आए थे तब पुन: बेथलेहम जाते वक्त उन्होंने भगवान जगन्नाथ के दर्शन किए थे.
- 9वीं शताब्दी में आदिशंकराचार्य ने यहां की यात्रा की थी और यहां पर उन्होंने चार मठों में से एक गोवर्धन मठ की स्थापना की थी.
- इस मंदिर में गैर-भारतीय धर्म के लोगों का प्रवेश प्रतिबंधित है. माना जाता है कि ये प्रतिबंध कई विदेशियों द्वारा मंदिर और निकटवर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ और हमलों के कारण लगाया गया है. पूर्व में मंदिर को क्षति पहुंचाने के प्रयास किए जाते रहे हैं.

कृष्णा साव

क्षे.का., विशाखापट्टणम

कुट्टानाड़-केरल

कुट्टानाड़ केरल में एक ऐसा अद्भुत क्षेत्र है जिसमें इसकी संस्कृति, विकास, कृषि प्रथाओं और प्राकृतिक सुंदरता से संबन्धित कई दिलचस्प पहलू हैं. केरल के आलप्पुषा जिले में स्थित क्षेत्र के एक बड़े हिस्से के साथ, यह एक ऐसी भूमि है जहां बैकवाटर और नहरें केरल के किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में अपनी उपस्थिति सर्वाधिक दर्शाती हैं. कुट्टानाड़ में मुख्य रूप से धान के खैतो के विशाल हिस्से हैं जिसकी निरंतरता नहरों द्वारा तोड़ दी जाती है, जिससे आसपास के क्षेत्र में के रुप में बैकवाटर फैलता है. यहां कृषि अभ्यास की एक अनूठी विशेषता समुद्र तल से नीचे खेती है जो अपने आप में अत्यंत विशेष है और सम्पूर्ण भारत में यह एकमात्र ऐसा स्थान है. इसके साथ ही साथ यह पर्यटन स्थल के रूप में अत्यधिक प्रचलित है. इसके एक तरफ अलेप्पी जैसा खूबसूरत पर्यटन केंद्र है, जहां देश-विदेश से लोग केरल के बैक वॉटर में नौका विहार का आनंद उठाते हैं और दूसरी तरफ कुमारकॉम का पक्षी विहार है, जहां देशी-विदेशी पक्षी प्रवास के समय आते रहते हैं और यह प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग समान वातावरण प्रदान करता है.

इतिहास :

किंवदंती के अनुसार कुट्टानाड़ का क्षेत्र प्राचीन समय में एक जंगल क्षेत्र था, जिसे बाद में एक जंगल की आग से नष्ट कर दिया गया, इस प्रकार इसे "चट्टानाड़" या "जला दिया गया" नाम दिया गया. कहा जाता है कि चुट्टनद ही कालांतर में कट्टनाद बन गया है. इतिहास कुट्टानाड़ को एक ऐसे क्षेत्र के रूप में मानता है, जो प्राचीन केरल पर शासन करने वाले चोल राजवंश के शासनकाल में था और राजवंश के प्रसिद्ध राजाओं में से एक, चेरन चेंगुटवन ने कुट्टानाड़ से अपने विशाल साम्राज्य पर शासन किया. यह जगह उस समय बौद्ध धर्म का एक प्रसिद्ध केंद्र भी था. इसलिए, जिसे बुद्धानाद भी कहा तो जाता है, जो बाद में कुट्टानाड़ बन गया.

भौगोलिक स्थिति :

पूरे कुट्टानाड़ क्षेत्र को व्यापक रूप से निचला, ऊपरी और उत्तरी कुट्टानाड़ में वर्गीकृत किया गया है जो अलापुड़ा, कोट्टयम, और पथानमथीट्टा जिलों का मिश्रित भाग है और नहरों और विभिन्न जलमार्गों से घिरा हुआ है. कुट्टानाड़ के कुछ जाने-माने गांवों में कन्यारी, रमांकरी, चेननामकरी, नेदुमुडी, कुमारकोम, अदथुआ, कवलम, पुलिंकुनु, किदंगारा, मुतार, नेरेतुतुपुरम, थालावाड़ी, चंपक्कुलम, पेपाद, करिचल, चेरुथाना, करुवाट्टा, नारकथारा, ममकोम्पू और थायंकर.

कुट्टानाड़ के गांव अत्यधिक सुंदर हैं और फोटोग्राफी में रुचि रखने वालों के लिए एक प्रसिद्ध केंद्र है. यह जगह प्रवासी पक्षियों के लिए एक स्वर्ग है और दिसम्बर से फरवरी माह के बीच यहां पर प्रवासी पक्षियों का निवास रहता है, इसी क्रम में कुमारकॉम में एक

पक्षी अभयारण्य भी स्थित है जो केरल के पर्यटन का एक प्रमुख केंद्र है. इस क्षेत्र में बैकवाटर और नहरों का उपयोग स्थानीय लोगों द्वारा माल और लोगों के परिवहन के लिए किया जाता है.

प्रमुख व्यवसाय :

कुट्टानाड़ में प्रमुख व्यवसाय चावल की खेती है जो इसके गीले भूभाग पर की जाती है, जिसकी मुख्य विशेषता इसका समुद्र तल से 2.6 मीटर नीचे होना है. इस भूभाग को 6 छोटी और बड़ी नदियों द्वारा सिंचित किया जाता है. इसके मुख्य चावल की खेती ने कुटानाड़ को एक विशेष उपाधि प्रदान की है - केरल के चावल का कटोरा। यहां, सालाना तीन फसलें उगाई जाती हैं. शुरुआती दिनों में जब चावल की खेती ने कुट्टानाड़ में लोकप्रियता हासिल करना शुरू किया, तो वेम्बनाड़ झील के बड़े हिस्सों को चावल की खेती के लिए स्थानीय किसानों द्वारा पुन: स्थापित किया गया. थानेरमुखम बंड कुट्टानाड़ क्षेत्र में एक प्रसिद्ध स्थलचिह्न है और अपने खेती क्षेत्र में महत्व प्राप्त करता है. यह वेम्बनाड़ झील के पार एक नमक जल बाधा है जिसका निर्माण कुट्टानाड़ विकास योजना के रूप में वर्ष 1974 में किया गया था जो झील के पानी को दो हिस्सों में विभाजित करता है: झील के एक हिस्से में निकलने वाली नदियों द्वारा जमा किए गए ताजा पानी और दूसरे हिस्से में खारा पानी. चावल की खेती उस तरफ ज्यादा होती है जिसमें पूरे साल ताजा पानी होता है। और खारे पानी के तरफ का मुख्य व्यवसाय मछली पालन और विकास के तौर पर किया जाता है.

केरल में कुछ उत्कृष्ट सुंदरता के साथ एक कृषि क्षेत्र के अलावा, कुट्टानाड़ के क्षेत्र ने केरल के सांस्कृतिक क्षेत्र में भी नाम कमाया है. मलयालम साहित्य, सिनेमा, लोक कला और नाटक में इस क्षेत्र का अत्यधिक महत्व है, समय-समय पर यहाँ साहित्य, सिनेमा और लोक कला के रंगमच की भूमिका में इस क्षेत्र का उपयोग होता रहा है. अलेप्पी इस क्षेत्र का एक ऐसा स्थल है, जो भारत के साथ ही साथ पूरे विश्व में अपने पर्यटन और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। हर समय यहाँ पर्यटकों का तांता लगा रहता है और देश-विदेश से लोग आकर इसकी प्राकृतिक सुंदरता और इसके अनोखेपन का आनंद उठाते हैं.

कुट्टानाड़, इस प्रकार केरल के प्राकृतिक गौरवों में एक गहना है और यह एक ऐसी भूमि भी है जिसने केरल के सांस्कृतिक विरासत में अपना स्वयं का महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है. यात्रियों को हमेशा कुट्टानाड़ में एक ऐसी अनुभूति मिलती है जो उन्हें प्रत्येक क्षण आश्चर्यचकित करती है. हाउसबोट पर परिभ्रमण, धान के खेतों की सुंदर सुंदरता और नारियल के सुंदर सलीके से लगे पेड़, स्थानीय और साथ ही प्रवासी पक्षियों के झुंड, बैकवाटर पर घूमने वाले पालतू बत्तखों की पैडलिंग, केरल के लोकप्रिय स्थानीय व्यंजन, बैक वाटर गांवों और उसके लोगों के कई पहलू , सभी कुट्टानाड़ को एक अनूठी भूमि बनाते हैं जिसमें कभी खत्म न होने वाले सुंदरता और भविष्य के लिए अपार संभावनाएं निहित हैं.

गौरव प्रताप सिंह
नोक्षेका एर्णाकुलम

मां मुंडेश्वरी धाम

भभुआ, बिहार

भारत का इतिहास प्राचीनतम एवं विरासत से परिपूर्ण कई जानकारियों को समाए हुए है. यहां की समृद्ध परंपराएं तथा आध्यात्मिक घटनाएं इस देश के प्राचीन रहस्यों को उजागर करती हैं. धरती, पर्वत एवं धाराएं कई ऐसे रहस्यों को जो कि अद्भुत, अविश्वसनीय एवं अकल्पनीय है, आज भी रहस्य के रूप में अपने आगोश में समाहित किये है. भारत विविधताओं का देश है तथा यहां कई परंपराएं एवं विश्वास फलीभूत होता देखा गया है. आज भी यह परंपराएं, क्रियाएं एवं गतिविधियां कायम हैं परंतु कभी कभार आंखों के सामने घटित इन घटनाओं पर विश्वास नहीं होने के बावजूद भी वे रहस्यमयी प्रतीत होती हैं.

ऐसा ही एक प्राचीन मंदिर बिहार के कैमूर जिले के मुख्यालय भभुआ से लगभग 10 किलोमीटर दक्षिण में अवस्थित है - मां मुंडेश्वरी मंदिर धाम. कैमूर की पहाड़ी पर लगभग 650 फीट की ऊंचाई पर माता मुंडेश्वरी विराजती हैं जो कई रहस्यों के समेटे भक्तों की आस्था का केंद्र बनी हुयी हैं. इस मंदिर के गर्भगृह में मां मुंडेश्वरी के अलावा भगवान शिव का पंचमुखी शिवलिंग भी विद्यमान है जो अपने रहस्यमयी दर्शन के लिए भी प्रसिद्ध है. यह मंदिर भारत के प्राचीन मंदिरों में से एक माना जाता है. ऐसा कहा जाता है कि इस मंदिर में तेल एवं अनाज का प्रबंध एक स्थानीय राजा द्वारा किया गया था, जिसका उल्लेख शिलालेख में उत्कीर्ण राजाज्ञा में भी पाया गया है. अर्थात राजाज्ञा के पूर्व भी यह मंदिर यहां था, इसका पता चलता है. वर्तमान में पहाड़ी पर स्थित यह मंदिर भग्नावशेष के रुप में है. ऐसा लगता है कि किसी ने इस मंदिर को तोड़ा है. मूर्तियों के अंग ऐसे टूटे हैं मानो किसी तेज हथियार से उन पर चोट की गयी है.

पंचमुखी महादेव मंदिर के गर्भ गृह में अवस्थित है तथा दूसरे भाग में मां मुंडेश्वरी की मूर्ति स्थापित है. यहां मां मुंडेश्वरी की दक्षिणमुखी मूर्ति की पूजा-अर्चना की जाती है. माता की मूर्ति 3.5 फीट उंची है. इस मंदिर में माता के कई चमत्कार देखने को मिलते हैं जबकि शिवलिंग भी अपने आप में कई अद्भुत करिश्मों की प्रत्यक्ष साक्ष्य है. इस मंदिर का संबंध मार्कण्डेय पुराण से भी है.

इस मंदिर की महिमा अद्भुत है ऐसा माना जाता है. मां मुंडेश्वरी की स्थापना चंड-मुंड नाम के राक्षस के वध के पश्चात यहां की गई थी, चंड-मुंड शुंभ, निशुंभ नाम के राक्षस राजा का सेनापति था जिसका वध इसी भूमि पर हुआ था. चंड-मुंड नाम के असुरों का वध करने के लिए मां देवी यहां स्वयं प्रकट हुई थी तो चंड के विनाश के बाद मुंड युद्ध करते हुए इसी पहाड़ी पर कहीं छिप गया था. इसी स्थान पर मां देवी ने मुंड का वध किया था. इसलिए यह मंदिर, मां मुंडेश्वरी

मां मुंडेश्वरी मंदिर

मां मुंडेश्वरी की मूर्ति

पंचमुखी शिवलिंग

के नाम से विख्यात हुआ. पहाड़ी पर बिखरे हुए पत्थर और स्तंभ अभी मौजूद हैं, जिनको देखकर लगता है कि उन पर श्रीयंत्र, सिद्धयंत्र उत्कीर्ण हैं.

पंचमुखी शिवलिंग

मां मुंडेश्वरी मंदिर के गर्भगृह में पंचमुखी शिवलिंग का विद्यमान होना अपने आप में असीम तथा अद्भुत है. कहा जाता है कि इस मंदिर में शिव तथा शक्ति की पूजा एक साथ की जाती है. यह शिवलिंग भी चमत्कारिक तथा अद्भुत माना जाता है. यह शिवलिंग सुबह, दोपहर एवं शाम में स्वयं अपना रंग बदलता है तथा अलग-अलग रंगों में दिखाई देता है. शिवलिंग का रंग कब बदल जाता है और कैसे बदल जाता है, इसके बारे में पता भी नहीं चलता है. प्रत्येक सोमवार को बड़ी संख्या में यहां भक्तों द्वारा शिवलिंग पर जलाभिषेक किया जाता है. मंदिर के पुजारी द्वारा भगवान भोलेनाथ के पंचमुखी शिवलिंग का सुबह श्रृंगार करके रुद्राभिषेक किया जाता है.

मां मुंडेश्वरी द्वारा जिन्दा बलि स्वीकार किया जाना.

मां मुंडेश्वरी की महिमा तथा रहस्य काफी अद्भुत है. इस मंदिर की सबसे अद्भुत परंपरा में एक बात शामिल है कि इस मंदिर में बकरे की जिन्दा बलि स्वीकार की जाती है. यह इस मंदिर की ऐसी अद्भुत घटना है, जिसे मानना काफी मुश्किल प्रतीत होता है. यहां मां के चरणों में बलि के रुप में बकरे को अर्पित किया जाता है लेकिन उसे मारा नहीं जाता है. उसे केवल मां के चरणों में रख दिया जाता है, जिस पर मंदिर के पुरोहित द्वारा अक्षत तथा फूल रखते ही बकरा मूर्छित एवं अचेत हो जाता है. यह दृश्य तत्काल होता है. कुछ मिनट पश्चात पुरोहित द्वारा पुन: अक्षत एवं फूल को बकरे के शरीर पर रखा जाता है, जिसके बाद वह बकरा उठकर खड़ा हो जाता है. लोगों को इस पर यकीन नहीं होता है परंतु ऐसा वास्तविकता में होता है. इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां पशु बलि की सात्विक एवं सांकेतिक बलि की परंपरा आज भी जारी है.

इस मंदिर में सभी धर्मों के लोग पूजा-अर्चना के लिए आते हैं तथा अपनी मन्नत पूरी होने पर मां के चरणों में जिंदा बलि अर्पित करते हैं. यहां जिंदा बलि केवल परंपरा ही नहीं बल्कि एक चमत्कार जैसी होती है. भक्तों की ऐसी मान्यता है कि मां मुंडेश्वरी से सच्चे मन से मांगी गई हर मनोकामना पूरी होती है.

भारत के प्राचीन मंदिरों में ऐसा कुछ होता है, जिस पर किसी को विश्वास नहीं होता है. इस मंदिर में बलि के रुप में बकरे को चढ़ाया जाता है लेकिन उसे मारा नहीं जाता है. उसे केवल मां के चरणों में रख दिया जाता है.

इस मंदिर का उल्लेख कनिंघम ने अपनी पुस्तक में किया है. उसमें स्पष्ट रुप से उल्लेख है कि कैमूर में एक मुंडेश्वरी पहाड़ी है जहां एक मंदिर विद्यमान है. इस मंदिर का पता तब चला जब कुछ गड़रिये पहाड़ी के ऊपर गए और उन्होंने मंदिर को देखा. इस मंदिर के पास माघ पंचमी से पूर्णिमा तक वृहद स्तर पर मेले का आयोजन होता है, जिसमें लाखों की संख्या में भक्त पधारते हैं.

आज भी यह मंदिर आस्था का केंद्र बना हुआ है तथा यहां भक्तजन आकर मां मुंडेश्वरी का साक्षात दर्शन करते हैं. साथ ही पंचमुखी शिवलिंग के दर्शन से अभिभूत होते हैं.

डॉ. विजय कुमार पाण्डेय
क्षे.का. पटना

मृणालिनी साराभाई

जन्म	11 मई 1918
जन्मभूमि	केरल
मृत्यु	21, जनवरी 2016
मृत्यु स्थान	अहमदाबाद, गुजरात
कर्मभूमि	भारत
कर्म- क्षेत्र	शास्त्रीय नृत्य
पुरस्कार- उपाधि	पद्मभूषण, पद्मश्री, कालिदास सम्मान
प्रसिद्धि	शास्त्रीय नृत्यांगना
नागरिकता	भारत
अभिभावक	पिता- डॉ. स्वामीनाथन, माता- अम्मू स्वामीनाथन

11 मई, 2018 का दिन भी वैसा ही दिन था जैसा हर दिन होता है. जब आज मोबाइल पर कुछ सर्च करने के लिए गूगल की तरफ क्लिक किया तो गूगल का डूडल जो हर दिन-विशेष के हिसाब से खुद को ढाल लेता है, मृणालिनी साराभाई के 100वें जन्मदिवस पर नाचता हुआ दिखाई दिया. आज के जमाने का यह नया रंग है जिसमें कोई व्यक्ति-विशेष की समाधि या घर पर जाकर श्रद्धांजलि देता हुआ दिखाई नहीं देता है परंतु सोशल मीडिया या दूसरे किसी माध्यम से अपनी भावनाओं को सभी के बीच नहीं बोलते हुए भी, चिल्लाते हुए प्रतीत होता है. चलिये जमाने के साथ जो नहीं बदलता जमाना उसको भूल जाता है; इसलिए इस बदलाव को भी सकारात्मक रूप में लेते हैं. हम बात कर रहे थे मशहूर क्लासिकल डांसर मृणालिनी साराभाई की.

"मुझे पता नहीं मैं कहाँ से अस्तित्व में आई? मुझमें समझदारी कहाँ से आई, किसने मेरा रास्ता तैयार किया? हर एक दिन एक नया दिन, किसी भी घंटे का कुछ पता नहीं. यही अज्ञात क्षण निश्चित दिनों में बदल जाते हैं. मैंने महसूस किया कि मैं क्या थी और पाँच साल की उम्र में मेरी माँ बताती हैं, मैंने कहा था - मैं एक डांसर हूँ. आने वाले समय में नहीं, बीते समय में भी नहीं, मैं अभी इसी वक्त एक डांसर हूँ."

जरा सोच के देखिये कि पाँच साल की उम्र में जब बच्चों के खेलने कूदने और शैतानियों के दिन होते हैं, मृणालिनी साराभाई ने न सिर्फ यह तय कर लिया था बल्कि ऐलान कर दिया था कि वो डांसर हैं. 11 मई, 2018 को मृणालिनी साराभाई का 100 वां जन्मदिन था.

मृणालिनी का जन्म 11 मई, 1918 को केरल में हुआ था. उनके पिता डॉ. स्वामीनाथन मद्रास हाइकोर्ट में बैरिस्टर थे. माँ अम्मू स्वामीनाथन स्वतंत्रता सेनानी थीं, जो बाद में देश की पहली संसद सदस्य भी रहीं. मृणालिनी की बड़ी बहन लक्ष्मी सहगल, स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज के तहत बनी 'झाँसी की रानी रेजीमेंट' की कमांडर इन चीफ थीं. उनके बड़े भाई गोविंद स्वामीनाथन मशहूर वकील थे. मृणालिनी का बचपन स्विट्जरलैंड में बीता, जहां उन्होंने डांस की बारीकियाँ सीखी. इसके बाद रबींद्रनाथ टैगोर के मार्गदर्शन में उन्होंने शांति निकेतन में पढ़ाई की. कुछ समय वे अमेरिका में रहीं, जहां उन्होंने अमेरीकन एकेडमी ऑफ डेमोक्रेटिक आर्ट्स में एडमिशन ले लिया. भारत लौटने के बाद उन्होंने मीनाक्षी सुंदरम पिल्लई से भरतनाट्यम सीखा. गुरु कुंचू कुरुप से कथकली की ट्रेनिंग भी ली और यहीं से डांस उनकी जिंदगी बन गया. ये वो दौर था जब कलाकार सिर्फ एक फॉर्म नहीं सीखते थे. मृणालिनी साराभाई ने भी नृत्य की अलग-अलग शैलियों की बारीकियाँ सीखी. कुंजू कुरूप से कथकली सीखा. मीनाक्षी सुंदरम पिल्लई और मुथुकुमार पिल्लै से भरतनाट्यम सीखा. उनके हर एक गुरु का अपनी कला में जबरदस्त योगदान था. इसी दौरान उन्होंने विश्वविख्यात सितार वादक पंडित रविशंकर के भाई पंडित उदय शंकर के साथ भी काम किया. पंडित उदय शंकर का भारतीय कला को पूरी दुनिया में अलग पहचान दिलाने का श्रेय जाता है. उन्होंने आधुनिक नृत्य को लोकप्रियता और कामयाबी के अलग मुकाम पर पहुंचाया. इस

बीच मृणालिनी साराभाई कुछ दिनों के लिए अमेरिका भी गईं और वहाँ जाकर ड्रामटिक आर्ट्स की बारीकियाँ सीखी. इसके बाद मृणालिनी साराभाई ने देश दुनिया में भारतीय परंपरा का विकास किया.

ऑटोबायोग्राफी “द वॉइस ऑफ हार्ट” में मृणालिनी ने बताया कि वह 5 साल की उम्र से ही डांसर बनना चाहती थी. 24 साल की उम्र में मृणालिनी साराभाई ने अपना हमसफर विक्रम भाई साराभाई को चुना. 24 बरस की थी मृणालिनी साराभाई जब उन्होंने विक्रम साराभाई को अपना जीवनसाथी चुना. इसके पीछे का किस्सा दिलचस्प है. बेंगलूरु में मृणालिनी साराभाई का रंगप्रवेश हुआ. रंगप्रवेश यानि मंच पर विधिवत नृत्य. किसी भी कलाकार के जीवन में उस शहर का खास महत्व होता है, जहां उसका रंगप्रवेश हुआ हो. इसी शहर में कुछ दिनों बाद उनकी मुलाक़ात विक्रम साराभाई से हुई. विक्रम साराभाई जाने माने वैज्ञानिक थे, जिन्हें ‘फादर ऑफ इंडिया स्पेस प्रोग्राम’ भी कहा जाता था. विज्ञान ने डांस को चुना या डांस से विज्ञान प्रभावित हुआ पता नहीं परंतु दोनों ने जिंदगी को साथ बिताने का फैसला किया. ये फैसला आसान नहीं था. शादी के बाद मृणालिनी ने अपने पति के साथ अहमदाबाद में रहने का फैसला किया और वो अहमदाबाद शिफ्ट भी हो गईं. दोनों शहरों के कल्चर में जमीन आसमान का फर्क था. वर्ष 1948 में उन्होंने अहमदाबाद में दर्पण अकेडमी की स्थापना की. कहने को कल्चर अलग था भाषा अलग थी. लेकिन मृणालिनी साराभाई की संस्था में तमाम गुजराती लोगों ने नृत्य सीखा. यही नहीं मृणालिनी ने वर्ष 1949 में पेरिस में डांस किया था, जो उस वक्त के लिए बड़ी बात थी. उन्होंने 18 हजार से अधिक छात्राओं को भरतनाट्यम और कथकली में प्रशिक्षण दिया था. मृणालिनी साराभाई की संस्था ‘दर्पण’ से जुड़ा एक किस्सा बहुत कम लोगों को पता होगा. ये उस समय की बात है जब दर्पण में अच्छे खासे लोग डांस सीखने आते थे. डांस सीखने के बाद जब पहली बार उन्हें विधिवत नृत्य करना होता था तो उसे आरंगेत्रम कहा जाता था. आरंगेत्रम में होने यह लगा था कि जिस स्टूडेंट के माता-पिता पैसे रुपये से सम्पन्न होते थे, वो उसे बड़े जलसे की तरह मनाते थे. ऐसे में उन स्टूडेंट्स पर एक किस्म का दबाव होता था जो आर्थिक तौर पर सम्पन्न नहीं होते थे.

इस बात की जानकारी जब मृणालिनी साराभाई को हुई तो उन्होंने आरंगेत्रम का नाम बदलकर आराधना कर दिया. इसके बाद साड़ियां, संस्थान की तरफ से ही दी जाती थीं. एक साथ कार्ड छप जाया करते थे. फिजूलखर्ची पर रोक लगा दी गई. मृणालिनी साराभाई ने ‘आराधना’ को समर्पण और आस्था से जोड़ दिया. उनकी बेटी मल्लिका साराभाई भी जानी मानी क्लासिकल डांसर हैं जो आज उनकी विरासत को आगे बढ़ा रही हैं.

मृणालिनी साराभाई ने 300 से भी ज्यादा डांस ड्रामा कोरियोग्राफ करने के साथ ही कई सारे उपन्यास, कवितायें, नाटक और बच्चों की कहानियाँ भी लिखी. उनकी परफॉर्मेंस के दौरान अक्सर प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति को भी देखा जाता था.

डांस में मृणालिनी साराभाई के योगदान को देखते हुए उन्हें कई पुरस्कारों से नवाजा गया. वर्ष 1965 में पद्मश्री, वर्ष 1992 में पद्मभूषण और फिर भारत रत्न से सम्मानित किया गया. उन्हें वर्ष 1994 में संगीत नाटक अकादमी फ़ेलोशिप भी दी गई. उन्हें folklrico of mexico बैलेट कोरियोग्राफ करने के लिए मेक्सिको सरकार ने गोल्ड मेडल से नवाजा. मृणालिनी साराभाई गुजरात स्टेट हेंडीक्राफ्ट और हैंडलूम डेवेलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड की चेयरपर्सन थीं. वे सर्वोदय इन्टरनेशनल ट्रस्ट की ट्रस्टी भी थीं. इसके साथ ही वे नेहरू फाउंडेशन फॉर डेव्लपमेंट की चेयरपर्सन भी थीं. मृणालिनी देश में जितनी मशहूर थी विदेश में भी उनकी लोकप्रियता देखते ही बनती थी. उनके नाम पर क्लासिकल डांस के क्षेत्र में ‘मृणालिनी साराभाई अवार्ड फॉर क्लासिकल एक्सिलेन्स’ अवार्ड भी दिया जाता है. मृणालिनी साराभाई खुद को तकनीकों से दूर रखती थीं. उन्हें आधुनिकता के शोर में गुम होना पसंद नहीं था. वो कहती थीं कि उनके लिए डांस, लेखक जोसेफ केम्पबेल की उस भावना से जुड़ा हुआ है, जिसमें वो कहा करते थे कि उन्हें अपने आसपास नाटकीय अलंकरणों की जरूरत नहीं है. तकनीकों के जाल को मृणालिनी साराभाई एक तरह की कब्रगाह कहा करती थीं.

वर्ष 2016 की जनवरी का महीना था, उनकी तबीयत बिगड़ने पर उनको अस्पताल ले जाया गया लेकिन तब तक मृणालिनी किसी और दुनिया के सफर पर जाने का निर्णय ले चुकी थीं. अस्पताल में भर्ती करने के एक दिन बाद 21 जनवरी, 2016 को ही वे दुनिया को अलविदा कह चलीं. जब उन्होंने अंतिम सांस ली तो उनके सिरहाने, उनकी छाया, उनकी बेटी-मल्लिका साराभाई थीं. पूरा कमरा शिष्यों से भरा हुआ था. हर किसी का मन भारी था. लेकिन अपनी गुरु को श्रद्धांजलि देने के लिए हर कोई वहाँ नृत्य कर रहा था. इससे भावपूर्ण श्रद्धांजलि एक कलाकार के लिए और दूसरी हो भी क्या सकती थी.

वर्तिका बडगुर्जर

क्षे का भोपाल

बृहदेश्वर मंदिर

तंजावुर का पेरिया कोविल
(बड़ा मंदिर)

भारत में कई सारे मंदिर हैं जो अपने आप में ही अद्भुत है. उन मंदिरों में एक बृहदेश्वर मंदिर भी है. लगभग हजार साल पहले जब लोगों के पास तकनीक का जरा भी ज्ञान नहीं था, उस जमाने में बिना बुनियाद के साथ, वह भी बिना सीमेंट, चूना, ईंट तथा लोहे का इस्तेमाल किये बिना लगभग 216 फुट का मंदिर तमिलनाडु राज्य के तंजावूर शहर में निर्माण हुआ. 48 एकड़ में भव्य वास्तुकला के साथ निर्मित इस मंदिर के दर्शन के लिए भगवान द्वारा दी गयी दो आँखें कम पड़ जाती हैं.

इस मंदिर के निर्माण के बारे में एक कहानी प्रचलित है. महाराजा राजा चोल (प्रथम) जो चोल वंश के शासक थे, बहुत बड़े शिवभक्त थे. इसी भक्ति से उन्होंने अनेक शिव मंदिरों का निर्माण करवाया. जब वे श्रीलंका गए तब भगवान शिवजी ने सपने में उन्हें दर्शन दिये थे. उसी दर्शन की याद में उन्होंने बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया, जिससे साम्राज्य को भगवान शिव का आशीर्वाद सदैव मिलता रहे.

बृह का अर्थ है बहुत बड़ा, बृहद एवं विशाल. द्रविड़ वास्तु कला के अनुसार निर्मित यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और इस मंदिर के शिवलिंग को बृहदेश्वर नाम से संबोधित किया जाता है. 11वीं शताब्दी में राजा चोल (प्रथम) द्वारा इस मंदिर का निर्माण वर्ष 1004 में प्रारम्भ होकर जो मात्र 5 वर्ष में 1009 में पूरा किया गया था. राजा चोल द्वारा बनवाए गए बृहदेश्वर मंदिर को 'राजराजेश्वर मंदिर' एवं 'पेरिया कोविल (बड़ा मंदिर)' नाम से भी जाना जाता है .

विश्व में पूरी तरह ग्रेनाइट से बना हुआ बृहदेश्वर मंदिर पहला और एकमात्र मंदिर है. इस मंदिर के निर्माण के लिए 1,30,000 टन ग्रेनाइट का इस्तेमाल किया गया है. मंदिर के इलाके के आसपास लगभग 100 किमी की दूरी पर कहीं पर भी ग्रेनाइट पाया नहीं जाता और यह रहस्य अब तक खोजा नहीं गया है कि इतनी भारी मात्रा में ग्रेनाइट को यहां कहाँ से और कैसे लाया गया था.

यह मंदिर पूरी तरह से हल्के लाल रंग ग्रेनाइट से बनाया गया है. केवल ग्रेनाइट के भारी पत्थरों को एक के ऊपर एक रख कर फैले हुए अंदुरुनी प्रकार की ज्यामिती के प्रयोग के साथ इस मंदिर का निर्माण किया गया है. ग्रेनाइट पत्थर पर बारीकी से नक्काशी का कार्य करना बहुत कठिन होता है फिर भी चोल राजाओं ने ग्रेनाइट पत्थर पर अद्भुत प्रतिमाएँ बनवाकर नक्काशी का कार्य खूबसूरती से करवाया है.

तेरह मंज़िलों में निर्मित संभवत: यह विश्व का सर्वाधिक बड़ा मंदिर है. मंदिर के परिसर परिधि 450 मी (1480 फुट) तथा परिसर आयत के रूप में लंबाई 240 फुट (पूर्व से पश्चिम) एवं 125 फुट चौड़ाई (उत्तर से दक्षिण) से बनी है. मंदिर के निर्माण को पाँच भागों में विभाजित किया गया है जैसे विमान, नंदी मंडप, मुख मंडप, महा मंडप एवं अर्थ मंडप और इसमें पूर्व दिशा में गोपुरम के साथ अन्य तीन साधारण तोरण प्रवेश द्वार हैं. पहला प्रवेश द्वार केरलंटकन तिरूवासल के नाम से जाना जाता है. केरलंटकन राजा चोल के पूर्वज का नाम था. दूसरे प्रवेश द्वार को पहले द्वार से 330 फुट आगे दूसरे राजराजन तिरुवासल के नाम से जाना जाता है.

कहा जाता है कि बृहदेश्वर मंदिर की बुनियाद केवल एक दो फुट ही बनायी गयी है लेकिन बावजूद इसके इस मंदिर का निर्माण मजबूत साबित हुआ है जो कि उस समय के चोल वंशजों के निर्माण कौशल को दर्शाता है. अत्यंत भयंकर तूफान, त्सुनामी भी हजारों साल पहले निर्मित इस मंदिर की खूबसूरती को बिगाड़ नहीं सका.

इस मंदिर का विशेष आकर्षण है इसका कुंभ (कलश) है, जो दुर्ग के ऊपर स्थापित है. इस कलश को केवल एक ही काले पत्थर को तराश कर बनाया गया है तथा इसका घेरा 7.8 मी. और वजन 80 टन (80,000 किलो) है. खासकर उस जमाने में क्रेन जैसी मशीन के बारे में कोई जानता भी नहीं था, उस समय लगभग 200 फुट की ऊँचाई में इतने भारी वजनदार कलश को कैसे स्थापित किया गया, इस बात को आज तक कोई जान नहीं पाया.

मंदिर के गर्भगृह में बृहद् शिवलिंग दिखाई देता है जो एक ही पत्थर से बनाया हुआ है. इस लिंग की ऊँचाई लगभग 3.7 फुट है और गोलाई 5 फुट की है. पंडितों को शिवलिंग की अभिषेक/पूजा करने हेतु दूसरी मंजिल पर जाना पड़ता है.

मंदिर में प्रवेश करने पर गोपुरम् के भीतर एक चौकोनी मंडप है, वहाँ चबूतरे पर नंदी जी विराजमान हैं. नंदी की यह प्रतिमा 16 फुट (4.9मी.) लंबी एवं 13 फुट (4मी.) चौड़ी है. इस नंदी की प्रतिमा का वजन 20,000 किलोग्राम का है. भारत वर्ष में एक ही पत्थर से निर्मित विशालतम नंदियों में यह दूसरी प्रतिमा है. पहली प्रतिमा आंध्रप्रदेश के अनंतपुर जिले के लेपाक्षी मंदिर में स्थित है.

इस मंदिर के गोपुरम की छाया जमीन पर कहीं नहीं पड़ती. दोपहर की तेज धूप में भी इसके गुंबद की परछाई पृथ्वी पर नहीं पड़ती है. बृहदेश्वर मंदिर को तंजावुर शहर के किसी भी कोने से देखा जा सकता है. मंदिर की तेरह मंज़िलें सभी को अचंभित करती हैं क्योंकि हिन्दू अधिस्थापनाओं में मंजिलों की संख्या सम होती है लेकिन यहाँ ऐसा नहीं है.

दक्षिण भारत के मंदिरों का प्रवेश द्वार अगर देखा जाए तो बहुत ऊँचा रहता है जिन्हें गोपुरम् कहते हैं और मंदिर के गर्भ गृह का शिरोभाग अपेक्षाकृत छोटा होता है. परंतु तंजावूर का बृहदेश्वर मंदिर इसके विपरीत है. गर्भगृह का शिरोभाग जिसे विमान कहते हैं वह गगनचुंबी है और प्रवेश द्वार मंडप के सामने छोटा दिखता है. मंदिर की 216 मी. ऊँचाई की अपेक्षाकृत प्रवेश द्वार के गोपुरम की ऊँचाई सिर्फ 30 मी. ही है.

इस मंदिर की एक और विशेषता यह है कि इस मंदिर के विशाल गर्भगृह में बातचीत करने पर वो बातें प्रतिध्वनित नहीं होती. माना जाता है कि इस मंदिर के अंदर 100 रहस्यमयी सुरंगे हैं जो राजा के लिए किले एवं अन्य मंदिर जाने के लिए बनायी गयी हैं.

यह मंदिर चोल शासनकाल की गरिमा का श्रेष्ठ उदाहरण है. राजा चोल ने अपनी धार्मिक सहिष्णुता के अनुरूप मंदिर पर अनेक बौद्ध प्रतिमाओं का भी निर्माण किया था. द्रविड़ी वास्तुकला के आधार पर मंदिर के गर्भगृह में चारों ओर भित्ति चित्र बने हुए हैं जिनमें भगवान शिव की विभिन्न मुद्राओं को दर्शाया गया है. गर्भ गृह मार्ग के अंदर मार्ग पर दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, भगवान विष्णु, अर्धनारीश्वर, वीरभद्र जैसे आकार का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया है. मंदिर के दीवारों पर चारों तरफ शिलालेख हैं, जिनमें तत्कालीन समाज, साहित्य, कला, संस्कृति आदि पर विस्तार से जानकारी दी गयी है. ऊपरी मंजिल की बाहरी दीवार पर भरत नाट्यम् की 81 नृत्य भंगिमाएं चित्रित हैं.

इस मंदिर का निर्माण हुए हजारों साल बीत गए और इस मंदिर की मरम्मत के साथ इसमें कई और मंदिर अनेक राजाओं द्वारा जोड़े गये थे. इसमें माँ बृहन्नायगी की मूर्ति पाण्ड्यन राजा, सुब्रमण्य मंदिर को विजयनगर शासक, गणेश मंदिर को राजा सरफोजी - II (मराठा शासक) ने बनवाए थे. गणेश मंदिर में गणेश की 7 भंगिमाएं देखी जा सकती हैं. सैंट करुवार जिन्होंने राजा चोल की शिवलिंग की स्थापना में सहायता की थी, उनके सम्मान में नटराज मंदिर भी बनवाया गया था.

मंदिर के शिलालेख से यह पता चलता है कि इस मंदिर के शिल्पकार एवं इंजीनियर का नाम कुंजरा मल्लन राजा राजा-राम पेरुंतचन था.

दूसरी विशेष बात यह है कि इस मंदिर के प्रवेश द्वार पर जो खंभे हैं, उनमें से एक खंभे से संगीत सुनाई देता है तो दूसरे पर शब्द सुनाई देगा. यही नहीं, विभिन्न खंभों से तरह-तरह की आवाजें सुनाई देती हैं. मंदिर के दीवारों पर शिलालेख तमिल एवं संस्कृत भाषा में हैं. इस मंदिर को यूनेस्को ने विश्व धरोहर घोषित किया है.

वर्ष 2010 में बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण होकर एक हजार साल पूरे होने के उपलक्ष्य में एक हजार रूपये का स्मारक सिक्का भारत सरकार ने जारी किया. 35 ग्राम वजन का यह सिक्का 80 प्रतिशत चाँदी और 20 प्रतिशत तांबे से बना है. इसके पहले 01.04.1954 को रिजर्व बैंक ने एक हजार रूपये का नोट जारी किया जिस पर बृहदेश्वर मंदिर की भव्य तस्वीर थी.

यहाँ महाशिवरात्री पर्व अत्यंत धूमधाम से मनाया जाता है. इसी समय वार्षिक नृत्य त्योहार का आयोजन भी किया जाता है तथा देश के प्रतिभावान नृत्यकार यहाँ के दस दिन के बृहद नृत्यांजली में भाग लेते हैं.

इस मंदिर को देखने के लिए आज भी लोग दूर-दूर से आते हैं. विदेशों से भी लोग इस मंदिर की विशेषताओं को देखने आते हैं.

एन वी एन आर अन्नपूर्णा

क्षे का, विशाखापट्टनम

भिंडी-सेहत का भंडार

स्वस्थ रहने के लिए डॉक्टर हमें ज्यादा से ज्यादा हरी सब्जियां खाने की सलाह देते हैं. हरी सब्जियों में भिंडी का महत्वपूर्ण स्थान है. भिंडी उन गिनी-चुनी सब्जियों में से एक है जो संसार के तकरीबन सभी देशों में पाई जाती है. यह स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद है. भिंडी में प्रोटीन, वसा, रेशा, कार्बोहाइट्रेड, कैल्शियम, फॉस्फोरस, लौह, मैग्नीशियम, पौटेशियम, सोडियम और तांबा पाया जाता है. आइए, जानते हैं भिंडी की खास बातें!

❖ भिंडी में मौजूद 'यूगेनॉल' मधुमेह से बचाने में मदद करता है. यह फाइबर रक्त में शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने का काम करता है. यह अंडकोशों में शर्करा के अवशोषण की प्रक्रिया को धीमा कर डायबिटीज को दूर रखने अथवा नियंत्रित करने का काम करता है. इसके लिए आप दो भिंडी लीजिए और उसे आगे और पीछे दोनों ओर से काट लें. इसमें से एक चिपचिपा सफेद तरल बाहर आना शुरू हो जाएगा, जिसे आपको धोना नहीं है. जब आप सोने जाएं तब इन कटी हुई भिंडी को पानी के गिलास में डाल दीजिए और गिलास को ढक दीजिये. सुबह होते ही पानी में से कटी हुई भिंडी के टुकड़े को निकालिए और पानी को पी लीजिए. अगर आपको ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल करना है, तो इस विधि को लगातार कुछ महीनों के लिए करें.

❖ भिंडी हमारी आंतों के लिए फिल्टर का काम करती है. यह पेट के पित्त, अम्ल और कोलेस्ट्रॉल को बांध देती है और आंतों में मौजूद विषैले तत्वों को दूर करने का काम करती है. फलस्वरूप आंतों की काम करने की क्षमता बढ़ जाती है और कोलन कैंसर का खतरा कम हो जाता है.

❖ भिंडी डायटरी फाइबर का सबसे अच्छा स्रोत है. यह घुलनशील फाइबर शरीर में मौजूद पानी में घुल जाते हैं, जिससे पाचन क्रिया दुरुस्त हो कर 'कब्ज' की समस्या दूर हो जाती है . भिंडी आंतों की खराश को दूर करती है, अत: यह 'पेचिश' या 'गैस' की समस्या में काम आती है. 'हैजा' होने पर इसके फलों को कुचलकर रस निकालकर मिश्री के साथ मिलाकर हैजे के रोगी को पिलाइए, इससे तुरंत फायदा होगा.

❖ भिंडी पेशाब की जलन को दूर करती है. इसे खाने से पेशाब खुलकर और साफ आती है. इसलिए पेशाब की जलन होने पर भिंडी का सेवन करना चाहिए.

❖ भिंडी में मौजूद घुलनशील फाइबर रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करने में मदद करता है, जिससे 'हार्ट अटैक' का खतरा काफी कम हो जाता है. भिंडी उच्च कोलेस्ट्रॉल को काबू करने का कारगर उपाय है. इसमें मौजूद पैक्टिन उच्च कोलेस्ट्रोल को काबू करने में मदद करता है.

❖ भिंडी में मौजूद आयरन तत्व रक्त में हीमोग्लोबिन का निर्माण करते हैं, जिससे आप 'अनीमिया' से बचे रहते हैं. इसके साथ ही भिंडी में मौजूद विटामिन-के रक्तस्राव को रोकने में मदद करता है,

❖ भिंडी में विटामिन-सी काफी अधिक मात्रा में होता है. इसके अलावा इसमें कई महत्वपूर्ण तत्व जैसे मैग्नीशियम, मैगनीज, कैल्शियम और आयरन भी होते हैं जिससे यह हानिकारक फ्री रेडिकल्स से लड़ती है. हमारे शरीर में पाए जाने वाले अच्छे बैक्टीरिया को यह मजबूत करने के साथ-साथ शरीर में प्रोबायोटिक्स के विकास में भी मदद करती है, जिससे हमारा इम्यून सिस्टम मजबूत होता है और पाचन तंत्र बेहतर होता है. यह विटामिन-सी अस्थमा के लक्षण को पनपने से रोकता है और फेफड़ों में सूजन और गले में खराश को ठीक करता है.

❖ भिंडी में विटामिन-ए और बीटा कैरोटीन पर्याप्त मात्रा में होते हैं, जो हमारी नजर के लिए काफी फायदेमंद साबित होने के साथ ही आंखों के बड़े विकार जैसे मोतियाबिंद से भी बचाये रखने में सहायक होते हैं.

❖ अगर आप बालों को लंबे समय तक काला और घना बनाये रखना चाहते हैं तथा बेजान और रूखे बालों में बाउंस लाने के लिए भिंडी आपकी मदद कर सकती है. साथ ही यह बालों की रूसी को भी दूर रखती है. भिंडी के छोटे-छोटे टुकड़े काटें और उसमें आधा नींबू निचोड़ लें. इसे सिर धोने में इस्तेमाल करें. इससे आपके बालों को काफी फायदा होगा. भिंडी से सिर धोने पर जुएं भी नहीं होतीं

❖ भिंडी में कैल्शियम की अच्छी मात्रा पाई जाती है. भिंडी में पाया जाने वाला लसलसा पदार्थ हमारी हड्डियों के लिए उपयोगी होता है. यह जोड़ों को लचीला बनाता है.

भिंडी के गुणों को देखते हुए इसके नियमित सेवन का निश्चय करें. भिंडी खरीदते समय यह अवश्य ध्यान दें कि वह सड़ी-गली, कीड़ों वाली अथवा कड़ी न हो. मुलायम, ताजी व पतली भिंडी, जिसमें कीड़े न लगे हों, आपको वांछित लाभ पहुंचाएगी.

सुप्रिया नाडकर्णी
यूनियन धारा, कें.का.

आपकी नज़र में...

'यूनियन सृजन' का 'बोली एवं भाषा विशेषांक' प्राप्त हुआ. पत्रिका ज्ञानवर्धक एवं रोचक है. हिन्दी एवं विभिन्न भाषाओं की सार्थक एवं प्रासंगिक जानकारी ने इस अंक को संग्रहणीय बनाया है. साधुवाद. संपादक एवं टीम को बधाई.

• मृत्युंजय मिश्र
सहायक महाप्रबंधक (राभा)
सिंडिकेट बैंक, प्रधान कार्यालय, मणिपाल

Dear Sir/Madam

I was very pleased to read your magazine Union Srijan. I was fortunate to read two magazines at the moment. I got your film edition and the languages edition. They were not only interesting,but also full of information. I learnt many things from those magazines.The article on Sanskrit films fascinated very much.The articles on Bengali films and south Indian films are very interesting. I wished there were many articles on ancient films. The language edition is very useful for those who are studying Hindi.The article on south Indian languages very interesting and I never thought that there are so many languages in eastern India. Please keep on publishing such interesting articles. When you mention my mother tongue Sinhala I felt proud. Since I am visual impaired the article on visually handicapped persons fascinated me very much. When I came for a training at A.I.C.B. we went to watch that film Sparsh. Recently I watched with my family members.

I am looking forward to read many more magazines like that. I highly appreciate those who had I am looking forward to see articles on literature, books, music, folklore and travel. Thanks for all of your colleagues who dedicate their time and money to produce Union Srijan.

Please see. I appologise you to say that I do not know Hindi typing.In the future I shall learn it.

• Mrs. Vasantha Padmini.
Suhada Mawatha,
Batapola,
Sri Lanka.

बैंक की तिमाही गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का 'फिल्मी दुनिया' विशेषांक प्राप्त हुआ. आपने गागर में सागर भर दिया. 'कोंकणी फिल्मों का सफर', 'सफरनामा पंजाबी फिल्मों का', 'सिने जगत के प्रसिद्ध स्टूडियो' लेखों का क्या कहना ? 'रामोजी फिल्म सिटी' ने तो गज़ब ही कर दिया. मेरा प्रत्येक पाठक से अनुरोध है कि वह हैदराबाद की इस फिल्म सिटी को अवश्य देख कर आए. संपादक जी आपको बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ.

• सुभाषचन्द्र सिंघल
सेवानिवृत्त अधिकारी
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
मेरठ, उत्तर प्रदेश

आपकी पत्रिका 'यूनियन सृजन' का नवीनतम अंक हमें प्राप्त हुआ, धन्यवाद. आपकी पत्रिका हमेशा ही आकर्षक एवं जानकारी से परिपूर्ण रहती है. नित नए प्रयोग एवं नवीन पहल अपनाने के लिए संपादक गण को बहुत-बहुत आभार. यह देखकर काफी खुशी हुई कि बैंकिंग पत्रिका भी 'फिल्मी दुनिया विशेषांक' के रूप में प्रकाशित की जा सकती है. विभिन्न विषयों पर विशेषांक निकालना बहुत सराहनीय प्रयास है. दादासाहब फाल्के पुरस्कार की पूरी सूची देने के लिए संध्या कोली जी को धन्यवाद देता हूँ. बॉलीवुड से टॉलीवुड तक सभी क्षेत्रीय फिल्मों की जानकारी एक पत्रिका में बिलकुल अद्भुत है. कुल मिलाकर आपकी पत्रिका विषय-वस्तु के साथ-साथ साज-सज्जा की दृष्टि से भी काफी उत्कृष्ट है, इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है. इसके लिए संपादक महोदया एवं पूरी टीम को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ.

• अमित शर्मा
मुख्य प्रबन्धक, प्रधान कार्यालय,
आंध्रा बैंक

स्थानः कच्छ का रण
छायाचित्रः धवल परमार, सुखपार शाखा, राजकोट

निःशुल्क वितरण हेतु
RNI No. MAH HIN/2016/68433